फ़रमाने रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

कुतबुल मदार

رضی اللہ عنہ

हज़रत बाबू शाह गुलाम शब्बीर
उर्फ अच्छे मियाँ
(खादिम)
चिल्ला
दरगाह शरीफ़ हज़रत मदार सा. रह., उज्जैन (म.प्र.)

This Pdf Download from Madaarimedia.com

دم مدار بیڑا پار

MADAARI MEDIA

The Silsila e Aaliya Madaariya Social Platform

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح

سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں

سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات

سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جایئے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

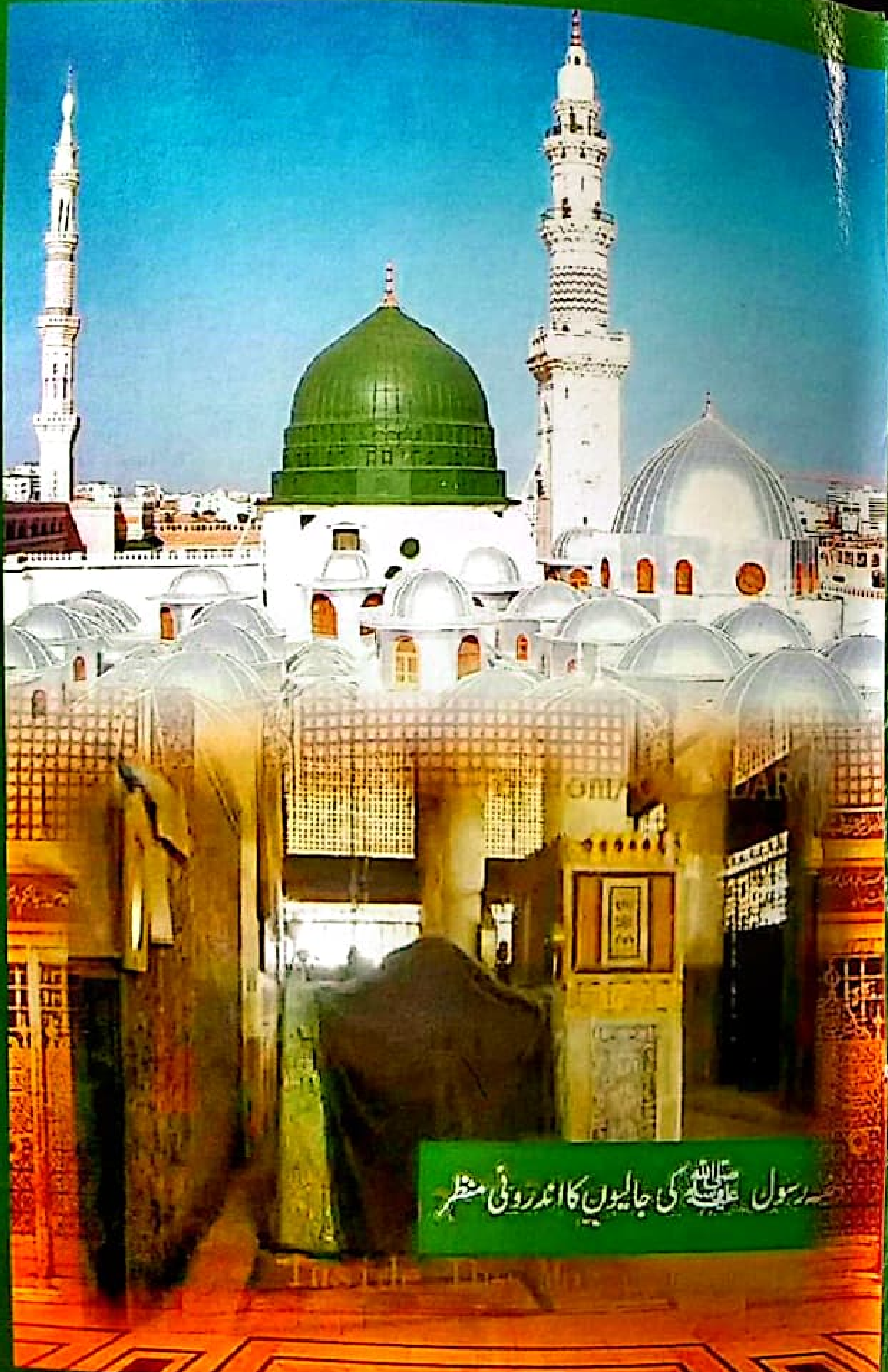

بسم الله الرحمن الرحيم

हज़रत सैयद बदीउद्दीन अहमद जिन्दा शाह

कुत्बुल मदार

हसनी हुसैनी हल्बी सुम्मा मकनपुरी

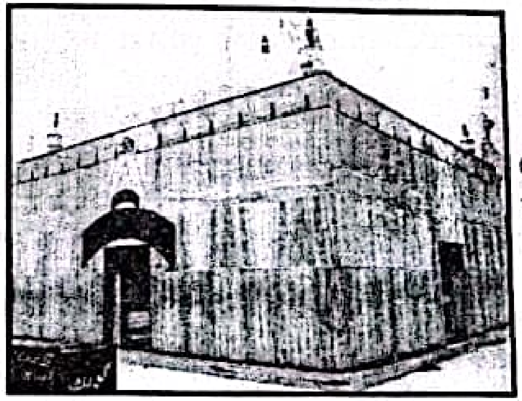

हज़रत बाबु शाह गुलाम शब्बीर उर्फ अच्छे मियाँ

सज्जादानशीन : दरगाह शरीफ चिल्ला शाह मदार (रज़ि)

मदार गेट, उज्जैन (म.प्र.)

-: मुद्रक :-

गोल्डन ग्राफिक्स

नारंग ऑटो के पीछे, गौशाला के सामने
नेहरु बस स्टेण्ड, मन्दसौर (म.प्र.)

Mob. 9425361378, 9993976631
e mail : goldenmdsr@gmail.com

आऊज़ू बिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम 0 बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह 0

- बफ़ैज़े रूहानी -

ईमामुल औलिया मौला अली शेरे ख़ुदा कर्रमल्लाहो वज्हुल करीम

- बज़िल्ले करम -

ईमामुल आरेफ़ीन हुज़ूर सैयद बदीउद्दीन अहमद ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु

दम मदार — बेड़ा पार

सतरे कुरनिस्त अबरूए अली (रज़ियल्लाहु अन्हु)
मुस्हफ़े बाशद मोरा रूए अली (रज़ियल्लाहु अन्हु)
ग़र बजन्नते बगुज़रम राज़ी नीम,
जन्नत बाशद मोरा कुए अली (रज़ियल्लाहु अन्हु)

रूबाई - हज़रत बदीउद्दीन शाह मदार ब शाने मौला अली

- सदर आला -

सदरूल मशाईख़ हज़रत अल्हाज सैयद मुहम्मद मुजीबुल बाक़ी जाफ़री अलमदारी

सज्जादानशीन : आस्ताना आलिया मदारिया, मकनपुर शरीफ़ (यू.पी.)

- बहुक़्मो इज़ाज़त -

हज़रत सैयद महज़र अली जाफ़री वक़ारी अलमदारी दामत बरकातहू आलिया

अईम्मा-ए-मशाईख, आस्ताना आलिया मदारिया, मकनपुर शरीफ़ (यू.पी.)

हज़रत मुफ़्ती अबुल हम्माद मुहम्मद ईस्राफ़ील हैदरी अलमदारी

प्रिंसिपल, शैख़ुलहदीस जामिया हाज़ा

जामिया अरबिया मदारूल उलूम मदीनतुल औलिया, मकनपुर शरीफ़ (यू.पी.)

- ज़ेरे सरपरस्ती -

हज़रत बाबू गुलाम शब्बीर उर्फ़ अच्छे मियाँ

सज्जादानशीन ख़ादिम : चिल्ला मदार साहब, उज्जैन (म.प्र.)

137, हाट रोड़, रतलाम (म.प्र.) मो. 9893005089, 8602196081

नाम किताब	-	फ़रमाने रसूल : कुत्बुल मदार		
तादाद	-	1000	साल -	फ़रवरी 2014
मुद्रक	-	गोल्डन ग्राफ़िक्स, मन्दसौर (म.प्र.)		

आऊज़ू बिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह 0

तर्जुमा : नहीं है कोई इबादत के लायक सिवाय अल्लाह के, मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल ऑलमीन 0 (पा.1, सूरह फातेहा, आ.1)

तर्जुमा : सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए है, जो तमाम जहानों का रब है।

वमा अरसल ना का इल्ला रहमतल्लिल ऑलमीन 0

(पा.17, सूरह अम्बिया, आ.107)

तर्जुमा : और (ऐ रसूल मोहतशिम) हमने आपको नहीं भेजा, मगर तमाम जहानों के लिए रहमत बनाकर।

इन मज़कूरा बाला आयातें करीमा से वाज़ेअ् हुआ कि : *''अल्लाह तआला तमाम जहानों की हर शैय का रब है, और रसूले कुद्सी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तमाम जहानों की हर शैय के लिए रहमत हैं।''*

इसी निस्बत से कुरआन शरीफ़ की सूरह अनफ़ाल की आयन नं. 20, पुख़्ता दलील पेश करती है :

या अय्योहल लज़ीना आमनू अतिउल्लाह वर्रसूलहू वला तवल्लौ अन्हू व अन्तुम तरमऊन 0

तर्जुमा : ऐ ईमान वालों ! तुम अल्लाह की और उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की इताअत करो और उस से रूगरदानी मत करो, हालांकि तुम सुन रहे हो।''

इस आयते करीमा में, ईमान वालों को मुखातिब किया गया है, और अल्लाह और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की इताअत का हुक्म दिया गया है। जिसमें ज़मीर वाहिद की है।

कुरआन शरीफ में एक और आयते तैयबा में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया :

"मय्युतिईररसूला फ़क़द अता अल्लाह 0" (पा.5, सूरह अन्निसा, आ.80)

तर्जुमा : जिसने रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का हुक्म माना बेशक उसने अल्लाह (ही) का हुक्म माना।

इस आयते करीमा से वाज़े हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की इताअत और हुक्म मानना अस्ल में अल्लाह का ही हुक्म मानना है।

"इन्नल लज़ीना युबायीऊनका इन्नमा युबायीऊनल्लाह ..."

(पा.26, सूरह फ़तह, आ.10)

तर्जुमा : (ऐ हबीब!) बेशक जो लोग आपसे बैअ्त करते हैं, वह अल्लाह ही से बैअ्त करते हैं, उनके हाथों पर (आपके हाथ की सूरत में) अल्लाह का हाथ है।

"इन्नल लज़ीना युअज़ुनल्लाहा व रसूलहू ..."

(पा.22, सूरह अहज़ाब, आ.57)

तर्जुमा : बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को अज़ीयत देते हैं, अल्लाह उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत भेजता है।

"या अय्यूहल लज़ीना आमनू ला तुक़द्देमु बैना ..." (पा.26, सूरह हुजरात, आ.1)

तर्जुमा : ऐ ईमानवालों! (किसी भी मामले में) अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से आगे न बढ़ा करो और अल्लाह से डरते रहो, (कि कहीं रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बेअदबी न हो जाए)

"या अय्यूहल लज़ीना आमनू ला तरफ़ऊ ..." (पा.26, सूरह हुज़रात, आ.2)

तर्जुमा : ऐ ईमानवालों! तुम अपनी आवाज़ों को नबी-ए-मुक़र्रम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की आवाज़ से बुलन्द मत किया करो और उनके साथ इस तरह बुलन्द आवाज़ से बात (भी) ना किया करो, जैसे तुम एक-दूसरे से बुलन्द आवाज़ के साथ करते हो (ऐसा न हो) कि तुम्हारे आमाल ही (ईमान समेत) ग़ारत हो जाएँ और तुम्हें (ईमान और आमाल के बर्बाद हो जाने का) शऊर तक भी न हो।

"या अय्यूहल लज़ीना आमनूस्तजी बुलिल्लाहे व लिर्रसूले ..."

(पा.9, सूरह अनफ़ाल, आ.24)

तर्जुमा : ऐ ईमानवालों! जब भी रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तुम्हें किसी काम के लिए बुलाएँ जो तुम्हें (जावेदानी) ज़िन्दगी अता करता है, तो अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की बारगाह में लब्बैक

कहते हुए (फ़ौरन) हाज़िर हो जाया करो।

"वमा नक़मू इल्ला अन अग़नाहुमुल्लाहो व रसूलुहू फ़ज़्लेही ..."

(पा.10, सूरह तौबा, आ.74)

तर्जुमा : और वोह, और किसी को नापसंद न कर सके सिवाए इसके कि उन्हें अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया था, सो (अब भी) तौबा कर लें तो उनके लिए बेहतर है ...।

कुरआन शरीफ़ में सैकड़ों आयते करीमा हैं जो तौहीद और रिसालत के इस ताल्लुक़ की रोशन और वाज़े दलील है कि अल्लाह रब्बुल ऑलमीन ने सिवाय सजदा-ए-माबूदियत और उलूहियत के हर शैय और हर अम्र में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपने साथ शामिल फ़रमाया।

"व ईज़ किला लहुम तआलू ईमा माअ् अनज़ल्लाहो ..."

(पा.5, सूरह निसा, आ.61)

तर्जुमा : और जब उन (मुनाफ़ेकिन) से कहा जाता है कि अल्लाह के नाज़िल कर्दा (कुर्आन) कि तरफ़ और रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की तरफ़ आ जाओ, तो आप मुनाफ़िकों को देखेंगे की वह आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) (की तरफ़ रूजु करने) से गुरेज़ा रहते हैं।

चंद कुरआनी आयतें :

अम्र	पारा नं.	सूरह	आयत नं.
अदब	1	बक़राह	104
अहद	10	तौबा	07
हद फ़रमाबरदारी	04	निसा	13
नाफ़रमानी	04	निसा	14
इताअत, फ़ैसला	05	निसा	59
रूजुअ्	05	निसा	61
माफ़ी-शफ़ाअत	05	निसा	64
हाकिम	05	निसा	65
इताअत	05/10	निसा, तौबा	69/71
हुक्म	5	निसा	80

अम्र	पारा नं.	सूरह	आयत नं.
हिज़रत	05	निसा	100
बेज़ारी	10	तौबा	01
ज़िम्मेदारी उठना	10	तौबा	03
जान से ज़्यादा क़रीब	21	अहज़ाब	6
वादा फ़रमाना	21	अहज़ाब	22
तलबगारी, हक़दार	21	अहज़ाब	29
मुहब्बत	10	तौबा	24
हराम शैय	10	तौबा	29
मुन्किर	10	तौबा	54
फ़ज़्ल अता	10	तौबा	59
रज़ा	10	तौबा	62
मुख़ालिफ़त	10	तौबा	63
फ़ज़्ल-ग़नी	10	तौबा	74
कुफ्र	10	तौबा	80/84
झूठ	10	तौबा	90
मुशाहिदा	11	तौबा	94
जंग	11/6	तौबा/मायदाह	107/33
बुलावा	9	अन्फ़ाल	24
मालिक	9	अन्फ़ाल	1
मुख़ालिफ़त	9	अन्फ़ाल	13
मारना/फेंकना	9	अन्फ़ाल	17
इताअत-हुक्म-रूगिरदानी	9	अन्फ़ाल	21
ख़यानत	9	अन्फ़ाल	27
इताअत	10	अन्फ़ाल	46

अम्र	पारा नं.	सूरह	आयत नं.
फ़ैसला	18	अन् नूर	47
हाज़िरी	18	अन् नूर	49
ज़ुल्म न करना	18	अन् नूर	50
ईमान/हाकिम	18	अन् नूर	62
मिस्ल/अदब	18	अन् नूर	63
आगे बढ़ना	26	हुज़रात	1
आवाज़ बुलंद न करना	26	हुज़रात	2
अदब-तक़वा	26	हुज़रात	3
इस्लाम	26	हुज़रात	14
इमान	26	हुज़रात	15
अज़ीयत तकलीफ़	22	अहज़ाब	57
फ़ैसला-हुक्म-नाफ़रमानी	22	अहज़ाब	36
इनाम	22	अहज़ाब	37
फ़रमाबरदारी	22	अहज़ाब	71
अता	28	अलहश्र	7
मदद	28	अलहश्र	8
गवाही-मुशाहिदा	26	अल फ़तह	8
इमान-ताज़ीम	26	अल फ़तह	9
बैअ़त	26	अल फ़तह	10
दोस्ती	6	मायदाह	55/56

कुरआन शरीफ़ (अलहम्द से वन्नास) अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का फ़रमान है, जो रुहुल अमीं जिब्रईल अलैहिस्सलाम के ज़रिए अल्लाह तआला ने अपने हबीब रसूले कुदसी हुज़ूर नबी-ए-अक्रम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ाते अक़दस पर नाज़िल फ़रमाया।

अल्लाह तआला के इस फ़रमान में एक फ़रमान ये भी है :

''व मायन्तिक़ू अनिल हवा 0 इन होवा इल्ला वहीयुईय्युहा 0

अल्लमहू शदीदुलक़ुवा'' (पा.27, सूरह नज्म, आ.3-4-5)

तर्जुमा : *और वोह (रसूले मुकर्रम) (अपनी) ख़्वाहिश से कलाम नहीं फ़रमाते 0 उनका इरशाद सरासर 'वही' होती है, जो उन्हें की जाती है 0 उनको बड़ी क़ुव्वतों वाले (रब) ने (बराहेरास्त) इल्मे (क़ामिल) से नवाज़ा 0*

इन मज़कूरा बाला क़ुरआनी आयतों से वाज़े हुआ कि आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी ख़्वाहिश या मर्ज़ी से कुछ नहीं फरमाते, बल्कि आपके तमाम कलामात, इरशादात और फ़रमान (हदीस शरीफ़) अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नाज़िल क़र्दा 'वही' होती है। जो आक़ा अलैहिस्सलातो व सल्लाम की ज़ाते मुक़द्दस पर बग़ैर किसी ज़रिया के नाज़िल होती है।

''इन्नल्लाह व मलाईक़तहू युसल्लुन अलन्नबिय्यि 0 या अय्युहल लज़ीना आमनु सल्लू अलैहि व सल्लेमु तस्लीमा''

(पा.22, सूरह अल अहज़ाब, आ.56)

तर्जुमा : *बेशक़ अल्लाह और उसके (सब) फ़रिश्ते नबी (ए मुक़र्रम, सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) पर दुरूद भेजते रहते हैं। ऐ ईमान वालों ! तुम (भी) उन पर दुरूद भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो।*

❊ दरुदे इब्राहिम ❊

''अल्लाहुम म सल्लि अला मुहम्मदिंव्-व अला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्-मजीद 0 अल्लाहुम म बारिक अला मुहम्मदिंव्-व अला आलि मुहम्मदिन् कमा बारक-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्-मजीद 0''

❊ दुरूदे मदारी ❊

''अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैयदना मुहम्मदिन नबीय्यिल उम्मी व आलेही मदारूल बदीयुल करीम इब्ने करीम व बारिक व सल्लिम व कमा लिल्लाहे कमा येलईता बे कमालेही 0''

❊ सलाम ❊

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,
या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

तबक़ से बसद अहतराम आता है, ख़ुदा के बाद मुहम्मद का नाम आता है,
क़दीम होंगे तुम्हें क़दीम से क्या निस्बत, तुम्हारे घर पे ख़ुदा का पयाम आता है।

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,
या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

अल्लाह की सर ता बा क़दम शान है ये, इन सा नहीं इंसान वो इंसान है ये,
क़ुरआन तो कहता है के ईमान है ये, ईमान ये कहता है मेरी जांन है ये।

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,
या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

बस इक़ मश्किज़ा इक चारपाई, ज़रा से जौं और इक चटाई,
बदन पे कपड़े भी वाजिबी से, न ख़ुश लिबासी न ख़ुश क़बाई।

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,
या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

इस्मनूर, जिस्मनूर, ज़िक्रनूर, फ़िक्रनूर, इरफ़ाननूर, ज़ुएनूर, ज़द्देनूर, इब्ननूर,
ऐननूर, शानेनूर, एहलेनूर, कुल्लेनूर, नूर उन नूर, नूर उन नूर, नूर उन नूर।

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,
या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

बिलाल तुझ पर निसार जाँ के नबी ने तुझे ख़ुद ख़रीदा,
नसीब हो तो नसीब ऐसा, ग़ुलाम हो तो ग़ुलाम ऐसा।
जब पढ़ाई नमाज़ अक़्सा में तो अम्बिया और रसूल यूँ बोले
नमाज़ हो तो नमाज़ ऐसी ईमाम हो तो ईमाम ऐसा।

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,

या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

ख़ुशा वो वक़्त के यसरब मक़ाम था तेरा, ख़ुशा वो दौर के दीदार आम था तेरा,

ख़ुशा सिद्दीक़ यारे ग़ारे सौर, ख़ुशा बिलाल के अदना ग़ुलाम था तेरा।

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,

या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

मैं ग़ुलाम इब्ने ग़ुलाम और वो मुमताज़ नबी, मैं कहाँ और कहाँ नाते रसूले अरबी,

मरहबा सैयदी मक्की मदनी युनअरबी, दिलों जाँ बाद फ़िदायतचे अजब ख़ुशलक़बी।

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,

या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

उनके कुंचे में गया और दी सदा, कासा-ए-दिल हाथ में लेता गया,

बचश्में गिरयां अर्ज़ यूँ मैंने किया, यक नज़र बरमन निगर या मुस्तफ़ा।

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,

या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

उनके दर पा जा पड़ूंगा, नज़र दुरूदो सलाम करूंगा,

जो ख़ुश होंगे मंगते पर तो कह दुंगा आक़ा, **बड़ा दर है दाता बड़ी भीख लुंगा**

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका,

या हबीब सलाम अलैका, सलावातुल्लाह अलैका।

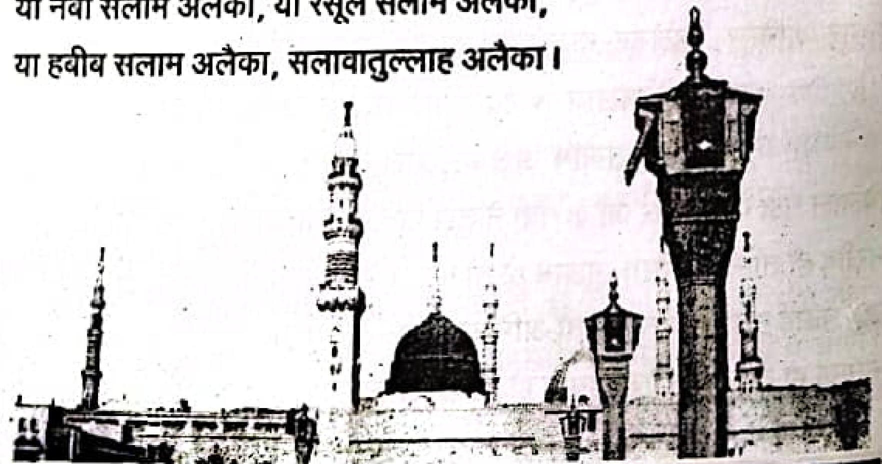

हदीस शरीफ़

ईमान, इस्लाम और एहसान

❋ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रजि. रिवायत करते हैं कि, ''एक रोज़ हम हुज़ूर नबी-ए-अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाजिर थे। अचानक एक शख़्स हमारी मेहफ़िल में आया। हम में से कोई उसे पहचानता भी नहीं था। उस शख़्स ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया :-

''ऐ मुहम्मद ! मुझे बताएँ इस्लाम क्या है ?'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''इस्लाम ये है कि तू इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस के रसूल हैं और तू नमाज़ क़ायम करे, ज़कात अदा करे, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे और इस्त्ताअत रखने पर बैतुल्लाह का हज करे।'' उसने अर्ज़ किया : ''आपने सच फ़रमाया।''

इसके बाद उसने अर्ज़ किया, ''मुझे ईमान के बारे में बताइए ?'' हुज़ूर नबी-ए-अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, '' ईमान यह है कि तू अल्लाह तआला पर, फ़रिश्तों पर, अल्लाह की किताबों पर, उस के रसूलों पर और क़यामत के दिन पर ईमान लाए और अच्छी-बुरी तक़्दीर पर ईमान रखे।'' उसने अर्ज़ किया, ''आप ने सच फ़रमाया।''

फ़िर उसने अर्ज़ किया, ''मुझे एहसान के बारे में बताइए ?'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''एहसान ये है कि तू अल्लाह अज़्वज़ल की इबादत इस तरह करे गोया तू उसे देख रहा है और अगर तू उसे न देख सके तो ये जान ले कि यक़ीनन वह तुम्हें देख रहा है।'' उसने अर्ज़ किया, ''अच्छा अब मुझे (वकुअे) क़यामत के (वक़्त के) बारे में बताइए ?'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''जिस से सवाल किया गया है वह इस मसअ्ला पर साईल से ज़्यादा इल्म नहीं रखता। (यानी जो कुछ मुझे मालूम है वह तुम्हें भी मालूम है और दुसरे हाज़रीन के लिए इसे ज़ाहिर करना मुफ़ीद नहीं है।'')

फिर वह शख़्स चला गया। हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''ऐ उमर ! जानते हो ये सवाल करने वाला कौन था ?'' मैंने अर्ज़ किया, ''अल्लाह और उसका रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बेहतर

जानते हैं।'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया, ये जिब्राईल थे, जो तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने आए थे।''

हवाला : (1) सहीह बुखारी शरीफ़, किताबुल ईमान, बाब-सुवाले जिब्राईलुननबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अनिल ईमान वल इस्लाम वल एहसान व इल्मिस्साअत्। जिल्द 1, सफ़हा-27, रक़्म 50 (2) किताबुत्तफ़सीर/ लुकमान, बाब-इन्नललाहा इन्दहु इल्मस्साअ़त जिल्द 4, 34 सफ़हा-1793, रक़्म 4499 (3) सहीह मुस्लिम शरीफ़, किताबुल ईमान, बाब-बयानुल ईमान वल इस्लाम वल एहसान, जिल्द 1, सफ़हा-36, रक़्म 98.

अज़मते रिसालत और शरफ़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

अम्बिया अलैहिस्सलाम का अपने मजारात में जिस्मों के साथ ज़िन्दा होने का बयान।

✲ हज़रत औस बिन औस रजि. से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया -

''बेशक, तुम्हारे दिनों में से जुमा का दिन सबसे बेहतर है, इस दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा हुए और इसी दिन उन्होंने वफ़ात पाई और इसी दिन सूर फूँका जाएगा और इसी दिन सख्त आवाज़ आएगी। पस उस दिन मुझ पर कसरत से दुरूद पढा करो क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझे पेश किया जाता है।'' सहाबा-ए-किराम ने अर्ज़ किया, ''या रसूलुल्लाह! (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हमारा दुरूद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विसाल के बाद आप को कैसे पेश किया जाएगा ? जबकि आप का जसद मुबारक ख़ाक में मिल चुका होगा।'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया, ''बेशक अल्लाह अज़्वज़ल ने अम्बिया-ए-किराम के जिस्मों को ज़मीन पर हराम कर दिया है।'' (ज़मीन अम्बिया-ए-किराम के जिस्मो को मिटा नहीं सकती है।)

हवाला : (1) सुनन अबु दाऊद शरीफ़, किताबुस्सलात, बाब-फ़ज़्ले यौमे'जुमआ व लैलतुल जुमआ, जिल्द-1, सफ़हा 275, रक़्म 1047 (2) इब्ने माजा शरीफ़, किताब इक़ामतिस्सलात, बाब-फीफ़ज़्लुल जुमा, जिल्द-1, सफ़ाह 345, रक़्म 1085

स्वदेशी ऑप्टीकल

नज़र व धूप के चश्में

प्रो.: अब्दुल करीम ख़ान
मो. 09462486786

51-राणा सांगा मार्केट, चित्तोड़गढ़ (राज.)

वाजिब दाम
अर्जेन्ट सुविधा

ज्योति आप्टीकल्स्

डॉक्टरी नम्बर एवं धूप के चश्मे ग्यारंटी के साथ बनाये जाते हैं।

कान्टेक्ट लेंस
प्रोग्रेसिव ग्लास
हाईइंडेक्स ग्लास

ोबाईल रिपेयरिंग, डाउनलोडिंग एवं रिचार्ज Ph. 503874 Mob. 9893226321

हाट रोड़, मदिना मस्जिद के सामने, रतलाम

इक़बाल अहमद पठान
(ठेकेदार म्युनिसिपेलिटी, चित्तौड़गढ़)
s/o मौलाना महबूब साहब

सलीमुलहक पठान (LIC Agent)

इरफ़ान पठान s/o सलीमुलहक पठान
(ठेकेदार)
Mob. : 9680987045

फर्म :- ज्योति स्टोर कुम्भा नगर, चित्तोड़गढ़ (राज.)

रोज़े क़यामत शफ़ाअत का बयान

❊ हज़रत आदम बिन अली रजि. से रिवायत है कि, ''मैंने इब्ने उमर रजि. को फ़रमाते हुए सुना, ''रोज़े क़यामत सब लोग गिरोह दर गिरोह हो जाएंगे। हर उम्मत अपने-अपने नबी के पीछे होगी और अर्ज़ करेगी, ऐ फलां ! शफ़ाअत फरमाइए, ऐ फलां ! शफ़ाअत किजिए, यहाँ तक कि बात हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर आकर ख़त्म होगी। पर उस रोज शफ़ाअत के लिए अल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मक़ामे महमूद पर फ़ाईज़ फरमाएगा।''

हवाला : (1) सहीह बुखारी शरीफ़, किताब तफसीरूल कुरान, बाब कौल असी अन यबाअ्सेका रब्बुका मकाम मुमहमूदा, जिल्द 4, सफ़ाह 1748, रक़म 4441

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत और सोहबते सॉलेहीन के अज्रो सवाब का बयान

❊ हज़रत अनस बिन मालिक रजि. रिवायत करते हैं कि, '' एक देहाती शख़्स ने हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा, ''क़यामत कब आएगी ?'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया, ''तू ने उस के लिए क्या तैयारी कर रखी है ?'' उस ने अर्ज़ किया, ''अल्लाह अज़्वजल और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत।'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, '' (क़यामत के रोज़) तू उसी के साथ होगा, जिस से तुझे मुहब्बत है।''

हवाला : (1) सहीह बुखारी शरीफ़, किताबुल अदब, बाब-अलामते अल हुब्ब फिल्लाह, जिल्द 3, सफ़हा 1349, रक़म 3480 (2) सहीह मुस्लिम शरीफ़, किताबुल वस्सलात वल आदाब, बाब-अल मुरम्माअ् मिन अहबबु, जिल्द 4, सफ़हा 2032, रक़म 2639

हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सॉलेहीन से तवस्सुल का बयान

❊ हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि, ''जब क़हत पड़ जाता तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रजि. बारिश की दुआ हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि. के वसीला से करते और कहते - ''ऐ अल्लाह ! हम तेरी बारगाह

में अपने नबी-ए-मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वसीला पकड़ा करते थे तो तू हम पर बारिश बरसा देता था और अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी के चचाजान को वसीला बनाते हैं कि हम पर बारिश बरसा।'' तो उन पर बारिश बरसा दी जाती।''

हवाला : (1) सहीह बुखारी शरीफ, किताबुल इस्तसका, बाब-मुवालिन्नासिल इमामुल इस्तसका इज़ा कहतु, जिल्द 1 सफ़हा 342, रक़म 964 (2) सहीह बुखारी शरीफ़, किताब फ़जाइलुस्सहाबा, बाब-ज़िक्र अल अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि., जिल्द 3, सफ़हा 1360, रक़म 3507

⁂ हज़रत अब्दुल्लाह बिन दीनार फ़रमाते हैं कि, ''मैं ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. को हज़रत अबू तालिब रजि. का ये शेअ्र पढ़ते हुए सुना -

''वह गोरे (मुखड़े वाले सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) जिनके चेहरे के वसीले और सदके बारिश माँगी जाती है, यतीमों के वाली, बेवाओं के सहारा है।''

हज़रत उमर बिन हमज़ा कहते हैं कि सालिम ने अपने वालिद माजिद से रिवायत की, कि ''कभी भी मैं हज़रत अबू तालिब की इस बात को याद करता और कभी हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा-ए-अक़दस को तकता कि इस (रूखे ज़ैबा) के ज़रिए बारिश माँगी जाती तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मिम्बर से उतरने भी ना पाते कि सारे परनाले बह निकलते।''

हवाला : (1) सहीह बुखारी शरीफ़, किताब इस्तसक़ा, बाब- सुवालिन्नायिल इमामुल इस्तसका इज़ा कहतु, जिल्द 1, सफ़हा 342, रक़म 963 (2) सुनन इब्ने माजा शरीफ़, किताब इकामतिस्सलात व सुन्नाह किहा, बाब- माजाआ फ़ी दुआ फ़ी लइस्तस्का, जिल्द 1, सफ़हा 405, रक़म 1272

आक़ा अलैहिस्सलातो व स्सलाम ने क़यामत तक के लिए उम्मत को दुआ-ए-वसीला अता फ़रमाई

⁂ हज़रत उस्मान बिन हुनैफ़ रजि. रिवायत करते हैं कि ''एक नाबीना शख़्स हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ''या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मेरे लिए ख़ैरो आफ़ियत की दुआ फ़रमाइए।'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- ''अगर तू चाहे तो तेरे लिए दुआ को मोअख़्ख़र कर दूँ, जो तेरे लिए बेहतर है और अगर तू चाहे तो तेरे लिए दुआ कर दूँ।'' उसने अर्ज़ किया, ''(आक़ा) दुआ फ़रमा दीजिए।'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे अच्छी तरह वज़ू करने और दो रक़ात नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया और फ़रमाया ये दुआ करना -

''अल्लाहुम्मा इन्नी असअ्लुका व अतवज्जहू इलैका बे मोहम्मदीन नबिय्यिर्रहमति,. या मोहम्मद इन्नी कद्तवज्जहतू बिका ईला रब्बी फ़ी हाजती हाज़ेही ले तुक़ज़्ज़ा, अल्लाहुम्मा फ़शफ्फीअ्हू फ़ीय्य 0''

तर्जुमा : ''ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ़ तवज्ज़ो करता हूँ नबी-ए-रहमत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के वसीले से, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मैं आप के वसीले से अपने रब की बारगाह में अपनी हाजत पेश करता हूँ कि पूरी हो। ऐ अल्लाह ! मेरे हक़ में सरकार की शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमा।''

''हज़रत उस्मान बिन हुनैफ़ रजि. अर्ज करते हैं कि वह गया और वज़ू करके नमाज़ पढ़ने के बाद ये दुआ पढ़ी। हम बैठे ही थे कि वो शख़्स बीना हो कर लौट आया।'' हवाला : सुनन तिर्मिजी शरीफ़, किताबुद्दावात अन रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब-फ़ी दुआअज़्ज़ाईफ़, जिल्द 5, सफ़हा 569, रक़म 3578/ नसाई फी सुनने क़ुबरा, जिल्द 2, सफ़हा 168, रक़म 10494, 10495

क़ायनात में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मिस्ल न होने का बयान

⁂ हज़रत अबू हुरैराह रजि. से रिवायत है कि ''हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने विसाल के रोजे रखने से मना फ़रमाया। तो सहाबा में से किसी शख़्स ने अर्ज किया, ''या रसूलुल्लाह ! आप तो विसाल के रोज़े रखते हैं।'' फ़रमाया, ''तुम में से कौन है, जो मेरी मिस्ल हो ? बेशक मैं रात (अपने रब के पास) इस हाल में गुजारता हूँ कि मेरा रब मुझे खिलाता भी है और पिलाता भी है।''

हवाला : सहीह बुखारी शरीफ़, किताबुस्सोम, बाब-तनकिल्लेमन अकसरूल विसाल, जिल्द 2, सफ़हा 694, रक़म 1864 / सहीह मुस्लिम शरीफ़, किताबुस्सोम, बाबुन्नहयन विसल फ़ी स्सोम, जिल्द 2, सफ़हा 774, रक़म 1103

सेवा बेट्री
प्रो. : गुलज़ार एहमद मंसूरी
मो. 9829113986
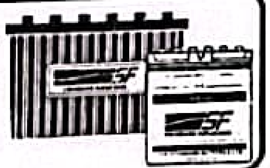
NH-8 राजनगर, जिला-राजसमंद (राज.)

नबुव्वते मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का शरफ़

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नसबे पाक का मुतह्हिर होना (हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से सैयदना अब्दुल्लाह और सैयदा आमना रजि.)

❊ हज़रत मुत्तलिब बिन अबी वदाआ़ रजि. रिवायत करते हैं कि, ''हज़रत अब्बास रजि. एक मर्तबा हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए। वह उस वक्त (काफ़िरों से कुछ नाशाइस्ता कलेमात) सुनकर (गुस्से की हालत में थे, पर वाक़ेआ पर मुत्तला होकर) हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और फ़रमाया, *''मैं कौन हूँ?''* सहाबा ने अर्ज़ किया, ''आप पर सलामती हो आप रसूले ख़ुदा हैं।'' फ़रमाया, ''मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब हूँ। ख़ुदा ने मख़्लुक को पैदा किया तो मुझे बेहतरीन ख़ल्क़ (यानी इंसानों) में पैदा किया, फ़िर मख़्लूक़ को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया (यानी अरबो अज़्म) तो मुझे बेहतरीन तबका में दाख़िल किया फ़िर उनके मुख़तलिफ़ क़बाईल बनाए, तो मुझे बेहतरीन क़बीला में दाख़िल फ़रमाया (यानी क़ुरैश), फ़िर उन के घराने बनाए तो मुझे बेहतरीन घराने में दाख़िल किया और बेहतरीन नसब वाला बनाया। (इसलिए मैं ज़ाती शरफ़ और हसब ओ नसब के लिहाज़ से तमाम मख़्लूक़ से अफ़ज़ल हूँ।)''

हवाला : सुनन तिर्मिज़ी शरीफ़, किताबुद्दावात अना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब-99, जिल्द 5, सफ़हा 543, रक़म 3532/ सुनन तिर्मिज़ी शरीफ़, किताब मनाकिब अना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब - फ़ी फ़ज़लन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 5, सफ़हा 584, रक़म 3207/3208 / मुसनद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 1, सफ़हा 210, रक़म 1788

क़मर ऑटो एण्ड इलेक्ट्रीकल्स

मो. सिद्दीक़ आटा मशीन

ढ़ोढ़र, जिला रतलाम

प्रो. : मो. आफ़ताब एहमद, मो. 07414274259

प्रो.: क़मर एहमद मो. 9755362805

नसब नामा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

आदम →	शीस →	अनोश →	क़िनान ↓	हज़रत मुहम्मद صلى الله عليه وسلم ↑
मतुसालिख़ ←	इदरीस ←	यारिद ←	मल्हाल	
लामिक →	नूह →	शाम →	अर्फ़ख़्शाद ↓	
सारूज् ←	राऊ ←	फ़ाहिज़ ←	आबिर	
नाहूर →	तारिख़ →	इब्राहिम →	इस्माईल ↓	
मअ्ज़्ज़ी ←	अवद् ←	ईराम ←	हैदार	अब्दुल्लाह ↑
सामी →	ज़ारिह →	नाहिस →	मुकासिर ↓	अब्दुल मुत्तलिब ↑
ज़ीईशान ←	ईसार ←	अफ़नद ←	ईहाम	हाशिम ↑
ईज़ी →	ईस्वाह →	यल्हान →	याहज़िन ↓	अब्दे मुनाफ़ ↑
अद्दाह ←	हमदान ←	सनबर ←	यसरिब	क़ुस्सई ↑
उबैद →	अबक़र →	आइफ़ →	माख़ी ↓	क़िलाब ↑
यद्लफ़ ←	ताबिख़ ←	ज़ाहिम ←	नाहिश	मुर्राह ↑
बलदस →	हिज़ा →	नासिद →	अव्वाम ↓	काअ्ब ↑
अवज़ ←	बुज़ ←	उम्वाह ←	ऊबाई	लवई ↑
सलमान →	हुमाईसिअ् →	अवद् →	अद्नान ↓	ग़ालिब ↑
इलियास ←	मुदार ←	निज़ार ←	मअ्द	फ़हश ↑
मुद्रिख़ा →	ख़ुजैमाह →	क़िनान्ह →	अल्नादर →	मालिक ↑

हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ताज़ीमं का बयान

❋ हज़रत अनस बिन मालिक अंसारी रजि. जो कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबी और ख़ादिमे ख़ास थे, फरमाते हैं कि, ''हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मर्ज़ुल मौत में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रजि. लोगों को नमाज़ पढ़ाते थे। चुनाँचे पीर के रोज़ लोग सफ़ें बनाए नमाज़ अदा कर रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुज़रा-ए-मुबारक का पर्दा उठाया और खड़े-खड़े हम को देखने लगे। उस वक्त हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का चेहरा-ए-अनवर कुरान के औराफ़ की तरह मालूम होता था, जमाअत को देखकर आप मुस्कुराए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीदारे पुर अनवार की ख़ुशी में क़रीब था कि हम नमाज़ तोड़ दें। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रजि. को ख़्याल हुआ कि शायद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ में तशरीफ़ ला रहे हैं। इसलिए उन्होंने ऐड़ियों के बल पीछे हट कर सफ़ में मिल जाना चाहा, लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें इशारे से फ़रमाया कि तुम लोग नमाज़ पूरी करो। फ़िर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पर्दा गिरा दिया और उसी रोज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का विसाल हो गया।''

हवाला : सहीह बुख़ारी शरीफ़, किताबुलअज़ान, बाब-अहलुल इल्म वल फज़्ले आहक़ु बिलइमामते, जिल्द 1, सफ़हा 240, रक़्म 648 / सहीह बुख़ारी शरीफ़, किताबुलअज़ान, बाब-हलयलतफ़ेतिल अम्रे युनज़्ज़लो बेही, जिल्द 1, सफ़हा 721 / फी किताबुत्तहज्जुद, बाब-मन रजाअ्ल क़हक़री फ़ी ख़लात, जिल्द 1, सफ़हा 403, रक़्म 1147 / सहीह मुस्लिम शरीफ़, किताबुस्सलात, बाब-अस्तख़लाफ़िल इमाम इज़ा अर्जालहू उज़्र मिन मर्ज़ ओ सफ़र ओ ग़ैर हुमा मिन युसल्ली बिन्नास, जिल्द 1, सफ़हा 316, रक़्म 419 / सहीह बुख़ारी शरीफ़, किताबुल मफ़ाज़ी, बाब-मर्ज़ुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम व वफ़ात, जिल्द 4, सफ़हा 1616, रक़्म 4183

फायदा : इबादते ईलाही में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बारगाह में मुतवज्ज़ह होनें से नमाज़ भी बातिल (टूटती) नहीं होती।

❋ हज़रत ज़राअ् रजि. जो कि वफ़द अब्द अलक़ैस में शामिल थे, बयान करते हैं, ''जब हम मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए तो तेज़ी से अपनी सवारियों से उतर कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दस्ते अक़दस और पाँव मुबारक को चुमने लगे।''

हवाला : सुनन अबू दाऊद शरीफ़, किताबुल अदब, बाब-क़िब्लतुज्जसद, जिल्द 4, सफ़हा 307, रक़्म 5225 / तिबरानी शरीफ़ फ़ी मोअ्जल कबीर, जिल्द 5, सफ़हा 275, रक़्म 5313 /तिबरानी शरीफ़ फ़ी शोअबुल ईमान, जिल्द 6, सफ़हा 141, रक़्म 7729

❋ हज़रत मुग़ीरा बिन अबी रज़िन रजि. रिवायत करते हैं कि, ''हज़रत अब्बास बिल अब्दुल मुत्तलिब रजि. से पुछा गया, ''कौन बड़ा है ? आप या हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम'' तो उन्होनें फ़रमाया, ''हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझ से बड़े हैं, मैं तो (सिर्फ़) पैदा उन से पहले हुआ हूँ।''

हवाला : मुसतदरक हाकिम, जिल्द 3, सफ़हा 362, रक़्म 5398/ मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, जिल्द 5, सफ़हा 296, रक़्म 26256 / मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, जिल्द 7, सफ़हा 48, रक़्म 33921

ख़्वारिज और गुस्ताख़ाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बयान

❋ हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रजि. से मरवी है कि, ''हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम माले ग़नीमत तक़सीम फ़रमा रहे थे कि अब्दुल्लाह बिन ज़िलख़वीसरा आया और कहने लगा, ''या रसूलुल्लाह ! इंसाफ़ से तक़सीम कीजिए।'' (उसके इस तान पर) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''कमबख़्त अगर मैं इंसाफ़ नहीं करता तो कौन करता है ?''

हज़रत उमर रजि. ने अर्ज़ किया, ''या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, इज़ाज़त अता फ़रमाएँ कि मैं इस (ख़बीस) की गर्दन उड़ा दूँ।'' फ़रमाया, ''रहने दो इसके कुछ साथी ऐसे हैं (या होंगे) कि उनकी नमाज़ों और उनके रोज़ों के मुक़ाबले में तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को हक़ीर जानोगे। लेकिन वह लोग दीन से इस तरह ख़ारिज होंगे जिस तरह तीर निशाने से पार निकल जाता है।'' (इन ख़बीसों की मिसाल ये है कि दीन के साथ उनका सिरे से कोई ताल्लुक़ नहीं होगा।)

हवाला : सहीह बुख़ारी शरीफ़, किताब इस्ताबतुल मुर्तदीद, बाब-मन तरका क़त्तालुल ख़वारिज लिलक़ालिफ़ व लैलं यनफ़िरन्नास अन्हु, जिल्द 6, सफ़हा 2540, रक़्म 6532, 6534 / किताब अलमनाक़िब, बाब-अलामाते नबुव्वा फ़ी इस्लाम, जिल्द 3, सफ़हा 1321, रक़्म 3414

❋ ज़ैद बिन वहब जहनी बयान करते हैं कि, वह उस लश्कर में थे जो हज़रत अली रजि. के साथ ख़वारिज से जंग के लिए गया था। हज़रत अली रजि. ने

फ़रमाया, ''ऐ लोगों ! मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुना कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''मेरी उम्मत में से एक क़ौम ज़ाहिर होगी। वह ऐसा कुरान पढ़ेंगे कि उन के पढ़ने के सामने तुम्हारे कुरान पढ़ने की कोई हैसियत न होगी। न उन की नमाज़ों के सामने तुम्हारी नमाज़ों की कुछ हैसियत होगी और न ही उन के रोज़ों के सामने तुम्हारे रोज़ों की कोई हैसियत होगी। वोह ये समझ कर कुरा न पढ़ेंगे कि वोह उन के लिए मुफ़ीद है, लेकिन दर हक़ीक़त वह उन के लिए मिज़्र होगा, नमाज़ उन के गले के नीचे से नहीं उतर सकेगी और वोह इस्लाम से ऐसे निकल जाएँगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है।''

हवाला : सहीह मुस्लिम शरीफ़, किताबुज़्ज़कात, बाब-तहरीज़े अली क़त्तुल ख़वारिज, जिल्द 2, सफ़हा 748, रक़म 1066 / सुनन अबू दाऊद शरीफ़, किताबुस्सुन्नाह, बाब-फ़ी कत्तालुल ख़वारिज, जिल्द 4, सफ़हा 244, रक़म 4768

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मनाक़िब का बयान

✲ हज़रत अबू मुसा अशअरी रज़ि. से मरवी है कि, ''अबू तालिब रज़ि. रुस्वा-ए-कुरैश के हमराह शाम के सफ़र पर रवाना हुए तो हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी आपके हमराह थे। जब राहिब के पास पहुँचे तो हज़रत अबू तालिब रज़ि. उतरे, लोगों ने भी अपने कजावे खोल दिए। राहिब उन की तरफ़ आ निकला, हालांकि (रुसवा-ए-कुरैश) इस से क़ब्ल भी उसके पास से गुज़र थे लेकिन वह उन के पास नहीं आता था और न ही उनकी तरफ़ तवज्जो करता था।''

हज़रत अबू मुसा फ़रमाते हैं कि, ''लोग अभी कजावे खोल ही रहे थे कि वह राहिब उनके दरमियान चलने लगा यहाँ तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के करीब पहूँचा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दस्ते अकदस पकड़ कर कहा, ''ये तमाम जहानों के सरदार और रब्बुल ऑलमीन के रसूल हैं। अल्लाह तआला इन्हें तमाम जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजेगा (ज़ाहिर फ़रमाएगा)।'' रुस्वा-ए-कुरैश ने पूछा, ''आप कैसे जानते हैं ?'' उसने कहा, ''जब तुम लोग घाटी से नमूदार हुए तो कोई पत्थर और दरख़्त सज्दा किए बग़ैर नहीं रहा और वह सिर्फ़ नबी को सज्दा करते हैं। नीज़ मैं उन्हें मोहरे नबुव्वत से भी पहचानता हूँ, जो उनके कांधे की हड्डी के नीचे सेब की मिस्ल है।'' फ़िर वह वापिस चला गया और उसने उन लोगों के लिए खाना तैयार किया। जब वह खाना लेकर

आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऊँटों की चारागाह में थे। राहिब ने कहा, ''उन्हें बुला लो।'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो सरे अनवर पर बादल साया फ़िगन था। क़ौम के करीब पहुँचे तो देखा कि तमाम लोग दरख़्त के साया में पहुँच चुके हैं, लेकिन जब आप तशरीफ़ फ़रमा हुए तो साया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ झुक गया। राहिब ने कहा, ''दरख़्त के साए को देखो वह आप पर झुक गया है।' फ़िर राहिब ने कहा, ''मैं तुम्हें ख़ुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि, इनका सरपरस्त कौन है ?'' उन्होंने कहा, ''अबू तालिब'' चुनाँचे वोह अबू तालिब रज़ि. को मुसलसल वास्ता देता रहा यहाँ तक कि हज़रत अबू तालिब रज़ि. ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वापस कर दिया। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने आप के हमराह हज़रत बिलाल रज़ि. को भेजा और राहिब ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ज़ादे राह के तौर पर ज़ैतून और कैक दिया।

हवाला : सुनन तिर्मिजी शरीफ़, किताब मनाकिब अना रसूलुल्लाह बाब- माजा फ़ी नबुव्वतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 5, सफ़हा 590, रक़म 362

✲ हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रज़ि. से मरवी है कि ''मैं मक्का मुकर्रमा में हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हमराह था। हम मक्का मुकर्रमा की यक तरफ़ चले तो जो पहाड़ और दरख़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने आता, ''अस्सलामो अलैका या रसूलुल्लाह'' कहता।''

हवाला : सुनन तिर्मिजी शरीफ़, किताब मनाकिब अना रसूलुल्लाह, बाब-6, जिल्द 5, सफ़हा 593, रक़म 3626

हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहले बैत और कराबतदारों के मनाक़िब का बयान

✲ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि. से मरवी है कि,''हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''मैं तुम में ऐसी दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ कि अगर तुम ने इन्हें मज़बूती से थामे रखा तो मेरे बाद हरगिज़ गुमराह ना होगें। उन में से एक, दूसरे से बड़ी है। अल्लाह तआला की किताब आसमान से ज़मीन तक लटकी हुई रस्सी है और जो मेरी इतरत यानी अहले बैत और ये दोनों हरगिज़ जुदा ना होंगी, यहाँ तक कि दोनों मेरे पास हौज़े कौसर पर आएँगी। पस देखो कि तुम मेरे बाद इन से क्या सुलूक करते हो ?'' हवाला : सुनन तिर्मिजी, किताबुल मनाक़िब अना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब- फ़ी मनाक़िब अहले बैअतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 5,

सफ़हा 663, रक़म 3788, 3786 / सुनने क़ुबरा नसाई, जिल्द 5, सफ़हा 45, रक़म 8148, 8464

❋ हज़रत इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''मेरे अहले बैत की मिसाल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती की तरह है जो इसमें सवार हो गया वह निजात पा गया और जो पीछे रह गया वह ग़र्क़ हो गया।''

हवाला : तिबरानी शरीफ़ फ़ी मोअजमल कबीर, जिल्द 12, सफ़हा 34, रक़म 2388, 2688, 2636

❋ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रजि. फ़रमाते हैं कि, ''मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुना, ''क़यामत के दिन मेरे हसबो नसब के सिवा हर सिलसिला-ए-नसब मुनक़ता हो जाएगा। (काट दिया जाएगा)''

हवाला : अलमुसतदरक हाकिम, जिल्द 3, सफ़हा 153, रक़म 4684 / तिबरानी शरीफ़ फ़ी मोअजमल कबीर, जिल्द 3, सफ़हा 44, रक़म 2633, 2634, 2635

❋ हज़रत जाबिर रजि. से मरवी है कि, हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''यक़ीनन अल्लाह तआला ने हर नबी की औलाद उसकी सुल्ब में रखी और बेशक अल्लाह तआला ने मेरी औलाद अली इब्ने अबी तालिब रजि. की सुल्ब में रखी।''

हवाला : तिबरानी शरीफ़ फ़ी मोअजमल कबीर, जिल्द.3, सफ़हा 43, रक़म 263

❋ हज़रत अबू मसऊद अन्सारी रजि. से रिवायत है कि हुज़ूर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''जिस ने नमाज़ पढी और मुझ पर और मेरे अहले बैत पर दुरूद न पढ़ा उसकी नमाज़ क़ुबूल न होगी।'' हज़रत अबू मसऊद फ़रमाते हैं, ''अगर मैं नमाज़ पढूं और उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूदे पाक न पढूं तो मैं नहीं समझता कि मेरी नमाज़ कामिल होगी।''

हवाला : सुनन दारकुतनी, जिल्द 1, सफ़हा 355 / बेहक़ी फ़ी सुनने क़ुबरा, जिल्द 2/530

❋ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रजि. बयान करते हैं कि, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी सैयदाह फ़ातेमा रजि. के यहाँ गए और कहा, ''ऐ फ़ातेमा ! ख़ुदा की क़सम ! मैंने आप के सिवा किसी शख़्स को हुज़ूर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नज़दीक महबूब तर नहीं देखा और ख़ुदा की क़सम ! लोगों में से मुझे भी आप के वालिद मोहतरम के बाद कोई आप से ज़्यादा महबूब नहीं।'' **हवाला :** मुस्तदरक हाकिम, जिल्द 3, सफ़हा 168, रक़म 4736 / अहमद बिन हम्बल फ़ी फ़ज़ाईले सहाबा, जिल्द 1 सफ़हा 364

❋ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रजि. अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''कोई बंदा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़दीक उसकी जान से भी महबूब तर न हो जाऊँ और मेरे अहले बैत उसे उसके अहले ख़ाना से महबूब तर न हो जाएँ और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से बढ़कर महबूब न हो जाए और मेरी ज़ात उसे अपनी ज़ात से महबूब तर न हो जाए।

हवाला : तिबरानी शरीफ़ फ़ी मोअजमल कबीर, जिल्द 7, सफ़हा 70, रक़म 6416/ बेहक़ी फ़ी शोअबुल ईमान, जिल्द 2, सफ़हा 189, रक़म 1505

ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन और सहाबा-ए-किराम रजियल्लाहु अन्हुम अज़मईन के मनाक़िब का बयान

❋ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ्फल रजि. से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''मेरे सहाबा रजि. के बारे में अल्लाह से डरो। अल्लाह से डरो। और मेरे बाद इन्हें तन्क़ीद का निशाना मत बनाना क्योंकि जिसने इन से मुहब्बत की उसने मेरी वजह से इनसे मुहब्बत की और जिसने इन से बुग़्ज़ रखा, उसने मेरे बुग़्ज़ की वजह से इनसे बुग़्ज़ रखा और जिसने इन्हें तक़लीफ़ पहुँचाई उसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाई और जिसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाई, उसने अल्लाह को तक़लीफ़ पहुँचाई और जिसने अल्लाह तआला को तकलीफ़ पहुँचाई अनक़रीब अल्लाह तआला उसे पकडेगा।''

हवाला : सुनन तिर्मिजी, किताबुल मनाक़िब अना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब-फ़ियमन सुब्बअसहाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 5, सफ़हा 696, रक़म 3862/ मुसनद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 5, सफ़हा 54-58, रक़म 20549, 20578

❋ हज़रत आईशा रजि. से रिवायत हे कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि, ''कौन से लोग बेहतर हैं ?'' हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''सब से बेहतर लोग इस ज़माने के हैं, जिसमें मैं मौजूद हूँ। इसके बाद दुसरे ज़माने के लोग और उसके बाद तीसरे ज़माने के लोग।''

हवाला : सहीह मुस्लिम शरीफ़, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब- फ़ज़्लुलसहाबाह सुम्मललज़ीना यलौनहुम, जिल्द 4, सफ़हा 1960, रक़म 2036/ मुसनद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 6, सफ़हा 106, रक़म 25272

❊ हज़रत अबू हुरैराह रजि. से रिवायत है कि ''हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हिरा पहाड़ पर तशरीफ़ फ़रमा थे, और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रजि. थे। इतने में पहाड़ ने हरक़त की (जोशे मसर्रत में) तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - ठहर जा, क्योंकि तेरे ऊपर नबी, सिद्दीक़ और शहीद के सिवा कोई नहीं।''

हवाला : सहीह मुस्लिम शरीफ़, किताब फ़ज़ाइलुल सहाबा, जिल्द 4, सफ़हा 1880, रक़म 2417/ सुनन तिर्मिज़ी शरीफ़, किताबुलमनाक़िब अना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब- फ़ी मनाक़िब उस्मान बिन अफ़्फ़ान रजि., जिल्द 5, सफ़हा 624, रक़म 3696

ज़ियारते कुबूर की फ़ज़ीलत का बयान

❊ हज़रत बरीदाह रजि. से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''मैं तुम्हे ज़ियारते कुबूर से मना किया करता था, पस अब ज़ियारत किया करो।''

हवाला : सहीह मुस्लिम शरीफ़, किताबुल जनाईज़, बाब-इस्तअ्ज़ानुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रब्बोहू अज़्वजल फ़ी ज़ियारते क़ब्रे उम्मेही, जिल्द 2, सफ़हा 672, रक़म 977/ सुननतिर्मिज़ी, किताबुल जनाईज़ अर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब-माजा फ़ी रुखसता फ़ी ज़ियारते कुबूर, जिल्द 4, सफ़हा 37, रक़म 54

❊ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से मरवी है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया-''मैं तुम्हें ज़ियारते कुबूर से मना किया करता था। अब ज़ियारत किया करो, क्योंकि ये दुनिया में ज़ाहिद बनाती है (दुनिया की दौलत से बेरग़बती पैदा करती है) और आख़िरत की याद दिलाती है।''

हवाला : सुनन इब्ने माजा शरीफ़, किताबुल जनाईज़, बाब-माजा फ़ी ज़ियारते कुबूर, जिल्द 1, सफ़हा 501, रक़म 1571

ज्योति किराना एण्ड जनरल स्टोर
सुभाष नगर, रेल्वे क्रॉसिंग, रतलाम
प्रो.: करीम मंसूरी, मो. 9981703029

क़ब्रिस्तान में दाख़िल होने की दुआ

❊ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रजि. एक तवील रिवायत मे बयान करती है कि मैं ने हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, ''या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ! मैं ज़ियारते कुबूर के वक्त अहले कुबूर से किस तरह मुख़ातिब हुआ करूँ ?''

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यूँ कहा करो -

''अस्सलामो अला अहलिद्दियारे मिनल मोअ्मेनीन वल मुस्लेमीन,
व यरहमुल्लाहुल मुस्तक़देमीन मिन्ना वल मुस्ताख़ैरीन,
व इन्ना इंशाअल्लाहो वे कुम ल लाहेक़ून 0''

तर्जुमा : ऐ मोमीनों और मुसलमानों के घर वालों ! तुम पर सलामती हो, अल्लाह तआला हमारे अगले और पिछले लोगों पर रहम फ़रमाऐं और अगर अल्लाह ने चाहा तो, हम भी तुम्हें मिलने वाले हैं।

हवाला : सहीह मुस्लिम शरीफ़, किताबुल जनाईज़, बाब-मा यक़ालु इन्दा दुख़ुलल क़ब्र वदुआ अल अहलहा, जिल्द 2, सफ़हा 669, रक़म 974/ सुनन निसाई शरीफ़, किताबुल जनाईज़, बाबुल अम्र बिलइस्तग़फ़ारिल मोमेनीन, जिल्द 6, सफ़हा 9, रक़म 2037/ मुसनद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 6, सफ़हा 221, रक़म 25897

औलिया और सॉलेहीन रजि. के मनाक़िब का बयान

''अला इन्ना औलिया अल्लाहे ला ख़ौफ़ून अलयहीम वला हुम यहज़नून''

(पारा 11, सूरह युनूस, आयत 62)

तर्जुमा : ख़बरदार ! बेशक औलिया अल्लाह पर न कोई ख़ौफ़ है और न वोह रंजीदा व ग़मगीन होंगे।

❊ हज़रत अबू हुरैरा रजि. रिवायत करते हैं कि, हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो हज़रत ज़िब्राईल (अलैहिस्सलाम) को आवाज देता है कि, अल्लाह तआला फलां बन्दे से मुहब्बत रखता है लिहाज़ा तुम भी उस से मुहब्बत करो। पर हज़रत ज़िब्राईल (अलैहिस्सलाम) उसे से मुहब्बत करते हैं। फ़िर हज़रत ज़िब्राईल (अलैहिस्सलाम) आसमानी मख़्लुक़ में निदा देते हैं कि अल्लाह तआला फलां बन्दे से मुहब्बत करता है लिहाज़ा तुम भी उस से मुहब्बत करो। पस आसमान

वाले भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं। फ़िर ज़मीन वालों (के दिलों) में उसकी मक़बूलियत (मुहब्बत) रख दी जाती है।''

हवाला : सहीह बुखारी शरीफ़, किताब बिदाउलखल्क, बाब-जिक्रुल मलाइका, जिल्द 3, सफ़हा 1175, रक़म 3038/ किताबुल अदब, बाबुलमिक़्ते मिनल्लाहे तआला, जिल्द 5, सफ़हा 2246, रक़म 5693 / किताबुत्तौहिद, बाब-क्लामुर्रब मय जिब्राईल व निदाल्लाहुल मलाइक्तहू, जिल्द 2 सफ़हा 2721, रक़म 7047

✲ हज़रत अबू हुरैरा रजि. रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''अल्लाह तआला फ़रमाता है, जब मैं किसी बन्दे से मुहब्बत करता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिस से वह सुनता है, और उसकी आँख बन जाता हूँ जिस से वह देखता है, और उसका हाथ बन जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है और उसका पाँव बन जाता हूँ जिससे वह चलता है। अगर वो मुझ से सवाल करता है तो मैं उसे ज़रूर अता करता हूँ और अगर वह मेरी पनाह माँगता है तो मैं ज़रूर उसे पनाह देता हूँ। मैंने जो काम करना होता है उस मे कभी इस तरह मुतरद्द नहीं होता जैसे बन्दा-ए-मोमिन की रूह क़ब्ज़ करने मे होता हूँ। उसे मौत पसंद नहीं और मुझे उसकी तक़लीफ़ पसंद नहीं। और जो मेरे किसी वली (दोस्त) से दुश्मनी रखे मैं उससे ऐलाने जंग करता हूँ।''

हवाला : सहीह बुखारी शरीफ़, किताबुर्रिक़ाक़, बाबुत्तवाज़ो, जिल्द 5, सफ़ाह 2387, रक़म 6137/ सहीह इब्ने हिब्बान, जिल्द 2, सफ़हा 58, रक़म 347

✲ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रजि. से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''बेशक अल्लाह तआला के कुछ ऐसे बरगुज़ीदा बन्दे हैं, जो न अम्बिया-ए-किराम है न शोहदा हैं, क़यामत के दिन अम्बिया-ए-किराम अलैहिस्सलाम और शोहदा उन को अल्लाह तआला की तरफ़ से अता क़र्दा मुक़ाम देख कर उन पर रश्क करेंगे। सहाबा-ए-किराम ने अर्ज़ किया, 'या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप हमें उन के बारे में बताइए कि वह कौन हैं?' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'वह ऐसे लोग हैं, जिन की बाहमी मुहब्बत सिर्फ़ अल्लाह तआला की ख़ातिर होती है, न कि रिश्तेदारी और माली लेनदेन की वजह से। अल्लाह तआला की क़सम! उनके चेहरे नूर होंगे और वह नूर पर होंगे। उन्हें कोई ख़ौफ़ नहीं होगा, जब लोग ख़ौफ़ज़दा होंगे, उन्हें कोई ग़म नहीं होगा, जब लोग ग़मज़दा होंगे।' फ़िर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने से आयत तिलावत फ़रमाई, '**अला इन्ना औलिया अल्लाहे ला ख़ौफून अलयहीम वला हुम यहज़नून 0**'

हवाला : सुनन अबू दाऊद, किताबुल बयुअ, बाब-फ़ीर्रहन जिल्द 3, सफ़हा 288, रक़म 3527/ नसाई फ़ी सुनने कुब्रा, सूरह युनूस, जिल्द 6, सफ़हा 362, रक़म 11236

✲ हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रजि. रिवायत करते हैं कि, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''तुम्हारे किसी एक शख़्स का भी दुनिया में किसी हक़ बात के लिए झगड़ना इस क़दर नहीं होगा, जो मोमेनीन और कामेलीन अपने परवर दिगार से अपने उन भाइयों के लिए झगड़ेंगे जो जहन्नुम में दाखिल किये जा चुके होंगे। वह अर्ज़ करेंगे, ऐ हमारे परवर दिगार! तुने हमारे उन भाइयों को दोज़ख में डाल दिया जो हमारी माईयत और संगत में नमाज़ पढ़ते थे। और हमारे साथ रोज़े रखते थे और हमारे ही साथ हज करते थे। अल्लाह तआला फरमाएगा, अच्छा तुम जिन्हें पहचानते हो उन्हें जाकर ख़ुद ही दौज़ख से निकाल लो, वह उनके पास जाएँगे और उनकी शक्लें देखकर उन्हें पहचान लेंगे। उनमें से कुछ को तो आग ने आधी पिंडलियों तक और बाज को टखनों तक पकड़ा होगा। वह उन्हें निकालेंगे और अर्ज़ करेंगे, ऐ हमारे परवर दिगार तुने हमें जिनके निकालने का हुक्म फ़रमाया था उन्हें हमने निकाल लिया है। फ़िर अल्लाह तआला फ़रमाएगा, उसे भी निकाल लाओ जिनके दिल में एक दिनार के बराबर ईमान है, यहाँ तक फ़रमाएगा, उसे भी निकाल लाओ जिसके दिल मे आधार दिनार के बराबर ईमान है। (फ़िर) यहाँ तक फ़रमाएगा उसे भी जिसके दिल में ज़र्रा बराबर ईमान है निकाल लाओ।''

हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रजि. ने फ़रमाया, ''अब जिस शख़्स को यक़ीन न आए तो वह यह आयते करीमा पढ़ लें।''

''इन्नल लाहा ला यग़्फ़िरु अईंयुशरक बेही व यग़फ़ेरु
मा दूना ज़ालेका ले मैंय्युशा ओ 0''

तर्जुमा : अल्लाह तआला शिर्क माफ़ नहीं फ़रमाएगा और उसके अलावा जो चाहेगा, जिसके लिए चाहेगा बख़्श देगा।

हवाला : सहीह बुखारी शरीफ़, किताबुत्तोहीद, बाब-कौलुल्लाहो तआला, वजहू यूमईज्र नासिराह इला रब्बुहा नाज़िराह, जिल्द 6, सफ़हा 2707, रक़म 7001 / सुनन नसाई, किताबुल ईमान व शराईयाह, बाब-ज़ियारतुलईमान, जिल्द 8, सफ़हा 112, रक़म 50 / सुनन इब्ने माज़ा शरीफ़, अलमुक़दमा, बाब-फ़ील ईमान, जिल्द 1, सफ़हा 23, रक़म 60

✲ हज़रत अस्मा बिन यज़ीद रजि. से रिवायत है कि, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि को फ़रमाते हुए सुना, 'क्या मैं तुम्हें तुममें से सबसे बेहतर लोगों के बारे में ख़बर न दूँ?' सहाबा-ए-किराम रजि. ने अर्ज़ किया, 'या रसूलुल्लाह!

(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) क्यों नहीं !' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'तुम में से बेहतर लोग वह है कि जब उन्हें देखा जाए तो अल्लाह तआला याद आ जाता है।'

हवाला : सुनन इब्ने माजा शरीफ़, किताबुज़्ज़ुहद, बाब-मल्लायुअ्बेही लहू, जिल्द 2, सफ़हा 1379, रक़म 4119/ मुसनद इमाम अहमद बिन हम्बल, जिल्द 6, सफ़हा 409

हदीस शरीफ़ की रोशनी में ...

साहिबे मक़ामे समदीयत, वासिले मक़ामे महबूबियत तबे ताबई उल अस्र हज़रत सैयद बदीउद्दीन एहमद ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार हसनी हुसैनी हल्बी सुम्मा मकनपुरी रजियल्लाहु अन्हू

✲ हज़रत अबु उमामा रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''बेशक मेरे नज़दीक लोगों में सबसे ज़्यादा क़ाबिले रश्क़ मोमिन ''ख़फ़िज़ुल हाज़'' है। नमाज़ में उसके लिए हिस्सा है। लोगों में पोशीदा है। उस का रिज़्क़ बक़दरे ज़िंदगी है और वह उस पर साबिर है। उसकी ख्वाहिश जल्द फ़ना हो जाएगी और उसकी मिरास कम है और उस के रोने वाले (बीवी-बच्चे) नहीं है।''

✲ हज़रत अबु उमामा रजि. से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''मेरे नज़दीक मेरे वलियों में सबसे ज़्यादा काबिले रश्क ज़रूर एक मोमिन ''ख़फ़िज़ुलहाज़'' है। नमाज़ का एक बड़ा हिस्सेदार है। अपने रब की इबादत और इताअत बेहतरीन तरीके से तन्हाई, गोशानशीनी में करने वाला है। लोगों में वह ऐसा मस्तूर और पोशीदा रहेगा कि ऊँगलियों से उसकी तरफ़ ईशारा नहीं किया जा सकता। दुनिया से उसका रिज़्क़ कुव्वतों लायमूत यानी बहुत कम होगा और वह अपने नफ़्स को उसी पर रोक कर सब्र करेगा।'' फ़िर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी ऊँगली मुबारक दुसरी ऊँगली मुबारक से मिलाकर इरशाद फ़रमाया, ''उस की ख्वाहिशाते नफ़्सानियाँ मर जाएगी। उस पर कोई रोने वाला (यानी उसकी बीवी और बच्चे नहीं होंगे) और उस का कुछ मिरास नहीं होगा।''

हवाला : मुसनद इमाम अहमद बिन हम्बल, जिल्द 5, सफ़हा 252/ सुनन तिर्मिज़ी शरीफ़ सफ़हा 205/ सुनन इब्ने माजा शरीफ़, बाबुज़्ज़ुहद

इसी हदीस शरीफ़ को सैयदना दाता गंज बख्श अली हुजवेरी रजि. ने अपनी तस्नीफ़ ''कुश्फ़ूल महजूब'' में रक़म फ़रमाया है।

''ख़ैरून्नास फ़ी आख़िरूज़्ज़मान ख़फ़िज़ुलहाज़''

तर्जुमा : आख़िर ज़माने में लोगों में सबसे बेहतर ख़फ़ीज़ुल हाज़ है।

मज़ीद फ़रमाते हैं ''जिसकी न बीवी हो न बच्चे हो और देखो मुजर्रद लोग तुम पर सबक़त ले गए।''

हवाला : कश्फ़ूल महजूब, सफ़हा 525/ दाता गंज बख्श हुजवेरी

आख़िर ज़माने से मुराद ख़ैर के उन तीन ज़मानों से है जिनका आका सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया था।

इसी मज़मून को इमामे सोहरवर्द सैयदना शेख मोहम्मद उमर शहाबुद्दीन सोहरवर्दी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी तस्नीफ़ ''अवारिफ़ूल मुआरिफ़'' में भी नक़्ल फ़रमाया है।

आप इरशाद फ़रमाते हैं, ''हज़रत नबी-ए-अकरम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि 200 बरस बाद (यानी उन तीन ज़मानों में से आखिरी ज़माना) तुम्हारे दरमियान सबसे बेहतर ''ख़फ़िज़ुल हाज़'' है।''

हवाला : अवारिफ़ूल मुआरिफ़, सफ़हा 310, हज़रत शहाबुद्दीन उमर सोहरवर्दी

ये तमाम खुबियाँ जो आका अलैहिस्सलातो व स्सलाम ने बयान फ़रमाई, हज़रत कुत्बुल मदार रजियल्लाहो अन्हु उसके हामिल थे, उनके हमअसर कोई भी इन खुबियों का हामिल नहीं हुआ था और न आज तक हुआ है।

शाह मदार सोसायटी एण्ड मदारे आज़म वेलफ़ेयर सोसायटी उदयपुर

की जानिब से मुबारक़बाद ...

लियाक़त हुसैन (सदर) — मोहम्मद याह्या (सेकेट्री) — अब्दुल करीम दीवान (जनरल सेकेट्री)

कुत्बुल मदार, शम्सुल अफ़लाक़, कुत्बुल इरशाद, ज़िन्दानेसूफ़ हज़रत सैयद बदीउद्दीन अहमद ज़िंदा शाह मदार

विलादत : 1 शव्वालुल मुकर्रम 242 हि., ईदुलफ़ितर बरोज़ पीर हलब (अलिप्पो) शाम (सीरिया)

विसाल : 17 जमादिल अव्वल 838 हि., बरोज़ जुमेरात मकनपुर शरीफ़ (कानपुर)

आपके मुताल्लिक आक़ा-ए-नामदार, रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की मजालिस में फ़रमाया, ''आख़िरी ज़माने में (200 बरस बाद) लोगों में सबसे बेहतर ''ख़फ़िज़ुल हाज़'' है।''

- जिन के ताअल्लुक़ से हज़रत मख्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह ने ''मर्तबा उवैसियत'' और शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने ''मक़ामे समदियत'' का पता दिया।
- जिनके फ़ैज़ान और उस की ज़ियाबार किरनों से तसव्वुफ़ों तरीक़त के तमाम सलासिल और ख़ानकाहें मुनव्वरो ताबां है।
- जिन्होनें बेशुमार मशाईख़ की तालीमो तर्बियत करके मज़हब ओ मिल्लत के लिए यादगार तोहफ़ा और कीमती सरमाया पेश किया।
- जिनके दामने रुश्दो हिदायत से जलीलुल क़द्र उलमा, सूफ़िया और मशाईख़ मुनसलिक हुए और बुलन्द मरतबे पर फ़ाईज़ हुए।
- जिन को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने फ़ज़्ल से ख़ैर वाले ज़माने में पैदा फ़रमाकर तबे ताबई होने का शरफ़ अता फ़रमाया।

- जिनको अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तवील उम्र (596 साल) अता फ़रमाकर दीने मुहम्मदी की तब्लीग़ फ़रमाने के लिए मक़ामे ''कुत्बुल मदारियत'' पर फ़ाईज़ फ़रमाया।
- जिनकी ईरान, बांग्लादेश, इराक़, अफ़ग़ानिस्तान, तुर्की, नेपाल, श्रीलंका, चीन, हिन्दुस्तान, मिस्त्र, यमन, लिबीया, स्पेन समेत ऐशिया, अफ़्रीका और यूरोप के तक़रीबन 52 मुल्क़ों में सवा लाख से ज़ायद चिल्लागाहें और इबादतगाहें आपकी तब्लीग़ो इशाअते इस्लाम की शवाहिद बयान करती है।

प्रो.: नईम बी
मो. 9926919998
लासानी किराना स्टोर
6, ग्वालटोली, बांदा कम्पाउण्ड, इन्दौर

ज्योति ट्रेडर्स
✲ खल, कपास्या के थोक विक्रेता ✲
बाहर का शहर, कानोड़,
जिला-उदयपुर (राज.)
प्रो. : मोहम्मद अनीस

गुलाम साबिर रशीदी
(प्रॉपर्टी कंसलटेंट)
शाहपुरा, भीलवाड़ा (राज.)
मो. 9414617868

नन्हे खाँ एण्ड संस (ठेकेदार)
प्रो.: मोहम्मद रफ़ीक़ ख़ान
कुम्भा नगर, चित्तोड़गढ़ (राज.)

ज्योति एसोसिएट्स
(इनकम टेक्स एण्ड फायनेंसिंग)
बाहर का शहर, कानोड़, 4, गणपति प्लाज़ा, किला रोड़,
चित्तोड़गढ़ (राज.) मो. 9982340893

अल्लाहनूर मेडिकल हॉल
स्टेशन रोड़, चौमहला, जि. झालावाड़ (राज.) 9314056289

कुत्बुल मदार एक नज़र में.....

नाम : सैयद बदीउद्दीन अहमद मदार

लक़ब : कुत्बुल मदार, ज़िंदा शाह मदार, कुत्बुल इर्शाद, मदारे आलम, शम्सुल अफ़लाक़, मदारूल ऑलमीन, ज़िन्दाने सूफ़, ज़ुब्दतुल ऑरिफ़ीन, सुल्तानुल फुक़रा

कुन्नियत : अबू तुराब

वालिदे गिरामी : सैयद क़ाज़ी क़िदवतुद्दीन अली हलबी रज़ियल्लाहु अन्हु

वालदाह माजेदा : सैयदा फ़ातेमा सानिया उर्फ़ फ़ातेमा तबरेज़ी रज़ियल्लाहु अन्हा

हसब ओ नसब : आप नजीबुत्तरफ़ैन हसनी हुसैनी सैयद है। वालिद-ए-गिरामी की तरफ़ से शजरा-ए-नसब सिर्फ़ 10 वास्तों से सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से, जबकि वालेदा माजेदाह की तरफ़ से सिर्फ़ 9 वास्तों से हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मिलता है।

विलादत : 1 शव्वाल 242 हिजरी, बरोज़ पीर (ईदुलफ़ित्र), शहर हलब के मुहल्ला चुनार मे हुई।

तालीमो तर्बियत : शैख़ कबीर हज़रत शैख़ हुज़ैफ़ा मरअशी शामी (मतुफ़ी 272 हि.) (मुरीदो ख़लीफ़ा हज़रत सैयदना इब्राहिम बिन अदहम बल्ख़ी रज़ियल्लाहु अन्हु) की ख़िदमत में सिर्फ़ चौदह (14) साल की उम्र गुजार कर जुमला उलूमो फ़नून की तहसील फ़रमाई, नीज़ क़ुरान मुक़द्दस के साथ-साथ कुतुब समाविया ख़ुसूसन तौरात, इंजिल, ज़बूर के आलिम व हाफ़िज़ हुए।

उस्ताज़ : शैख़ कबीर हज़रत सैयदना हुज़ैफ़ा मरअशी शामी क़ुद्दूससिर्रह

बैअ़त ओ इरादत : सेहने बैतुल मुक़द्दस में सुल्तानुल औलिया हज़रत बायज़ीद बुस्तामी से बैअ़त ओ इरादत से मुशर्रफ़ हुए।

कन्नोज

उज्जैन

कराची

चम्बा

जबलपुर

नागपुर

जबलपुर

मन्दसौर

दमोह

बठिण्डा

अजमेर

अहमदाबाद

प्रतापगढ़

खम्बात

ख़िलाफ़तो इज़ाज़त : हज़रत सुल्तानुल ऑरिफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी ने आपको ख़िर्का-ए-ख़िलाफ़तो इज़ाज़त अता फ़रमाया। (जाफ़रिया तैफूरीया, बसरीया तैफूरीया, सिद्दीक़ीया तैफ़ूरीया)

मुरीदीन : आप ने तक़रीबन 600 साल का तवील अर्सा पाया, जिस में ला तादात मुरीदीन व मुतवस्सलिन हुए। जिन में - बादशाह इब्राहिम शर्क़ी, मीर सदर जहाँ, अब्दुल क़ादीर अल मारूफ, शेख़ ज़मीरी बग़दादी, बू अली रोदबारी, सैयद जानेमन जन्नती, सैयद सालार साहू ग़ाज़ी, सैयद सालार मसूद ग़ाज़ी, शेख अहमद बिन मसरूक़ वग़ैरह शामिल है।

ख़ुल्फ़ा-ए-क़िराम : सैयद अबु मोहम्मद अरग़ून, सैयद अबू तूराब फ़न्सूर, सैयद अबुल हसन तैफ़ूर, **सैयद जानेमन जन्नती, सैयद अहमद बादपा** (भाँजा-ए-मोहतरम ग़ौसुल आज़म दस्तगीर), सैयद अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी, काजी शहाबुद्दीन दौलताबादी, बादशाह इब्राहिम शर्क़ी, अब्दुल कादीर अल मारूफ़ शेख़ ज़मीरी बग़दादी, बू अली रोदबारी, क़ाज़ी मुतह्हिर, क़ाज़ी महमूदुद्दीन कन्तूरी, शाह अजमल बहराईची, हिस्सामुद्दीन सलामती जौनपुरी, **मीर शम्सुद्दीन हसन अरब, मीर रूक्नुद्दीन हसन अरब** (भतिजे मोहतरम ग़ौसुल आज़म दस्तगीर) सैयदना सिक़न्दर दिवाना रिज़वानुल्लाहे तआला अज़मईन वग़ैरह शामिल है।

चंद मुआस्सरीन : सहाबी-ए-रसूल हज़रत बाबा रतन हिन्दी रज़ियल्लाहु अन्हु (बठिण्डा), हज़रत ज़ुनैद बग़दादी, शेख़ अहमद बिन मसरूक ख़ुरासानी, हक़ीम तिर्मिजी, अबू बक्र वर्राक, हज़रत शेख़ ग़ौसुल आजम अब्दुल क़ादीर ज़िलानी, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती ग़रीब नवाज़, सैयद सालार साहू ग़ाज़ी, सालार मसूद ग़ाज़ी, अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी, क़ुतुब शाह मीना लखनवी, शेख़ अबू नस्र अब्दुल वहाब, शेख़ ग़ीलान वास्ती रिज़वानुल्लाहे तआला अज़मईन।

दाअ्वतो तब्लीग़ : आपकी ख़िदमत बे शुमार है, ईस्लाम की दावतो तब्लीग़ की ख़ातिर आपने समरक़न्द, बुखारा, तूस, ख़ुरासान, बदख़्शां, बग़दाद, काबुल समेत कई मुमालिक होते हुए हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए। सात मर्तबा मक्का मोअज़्ज़मा में फरीज़ाए हज अदा फ़रमाकर, बारगाहे हबीबे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हाजिर होकर अश्कों के मोती पेश कर अलग-अलग रास्तों से हिन्दुस्तान

तशरीफ़ लाए और तर्बियतो तज़किया के लिए फ़रमाने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुताबिक दारून्नुर मकनपुर (कानपुर) को अपना मर्कज़ बनाया और एक आलम को फ़ैज़याब किया।

कमालात : आप मक़ामे मदारियत और समदियत पर फ़ाईज़ थे। कुतुबे अरबिया, समाविया के आलिम और हाफ़िज़ थे। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से शरफ़े उवैसियत हासिल था। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दस्ते अक़दस की बरकत से आपका रूखे अनवर ताबिन्दा हो गया था और सात नक़ाब रूखे अनवर पर पड़े रहते थे। आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इनायतों क़रम से 556 बरस तक रोज़ा रखा और ताउम्र जन्नती पेराहन ज़ेबेतन फ़रमाया। हज़रत मौलाए क़ायनात अली युल मुर्तज़ा करमल्लाहु वज्हुल करीम से उलूमे बातिनी की तहसील फ़रमाई।

नामवर अक़्ताबो औलिया फ़ैज़ाने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ईस्लाम को अता फ़रमाए, मुल्क की अकसर ख़ानकाहों को सिलसिला-ए-मदारिया से नवाज़ा, माअ्रूफ़ उलमाओ सूफ़िया ने आपके फ़ज़ाइलो मनाक़िब बयान किए हैं।

विसाल : 17 जमादिल अव्वल 838 हिजरी, बरोज़ जुमा

नमाज़े जनाज़ा : हज़रत हिसामुद्दीन सलामती जौनपुरी ने पढ़ाई।

मज़ार मुबारक : मकनपुर शरीफ़, तहसील बिल्हौर, जिला कानपुर (यु.पी.) हिन्दुस्तान में वाक़ेअ् है।

ज्योति क्लिनिक
पुलिस चौकी के पास
136, हाट रोड़, रतलाम (म.प्र.)
डॉ.इंतेखाब मुस्तफ़ा मंसूरी
(B.A.M.S. General Physician)
मो. 9827336378

जनता रूई सेन्टर
रूई, रजाई, गादी, तकिया
आदि के विक्रेता
तकिया मस्जिद के पास,
जहाज़पुर (राज.)
प्रो. अहसान मंसूरी
मो.9414687679

अमीरे किश्वरे विलायत कुत्बुल इरशाद कुत्बुल मदार हज़रत

सैयद बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह कुत्बुल मदार

हसनी हुसैनी हलबी सुम्मा मकनपुरी रज़ियल्लाहु अन्हु की हयात ओ शख़्सियत का अजमाली ज़ायज़ा

अमीरे किश्वरे विलायत, कुत्बुल मदार हज़रत सैयद बदीउद्दीन अहमद मदार रज़ियल्लाहु अन्हु तीसरी सदी हिजरी की अज़ीम दीनी, मज़हबी और रूहानी शख़्सियत का नाम है। जिनके फ़ूयुज़ो बरकात से एक जहाँ ने रोशनी पाई है।

मुजद्दिद अल्फ़े सरनी इमाम रब्बानी हज़रत शेख सरहिन्दी इरशाद फ़रमाते हैं, ''कुत्बुल इरशाद जो कमालाते फ़र्दीया का भी जामेअ् होता है। इन्तिहाई अज़ीज़ुल वजूद और नायाब होता है। क़ायनात की ज़ुल्मते उस के नूर के ज़हूर से काफ़ूर होती है। उसकी हिदायत का नूर अर्श से लेकर मकर्ज़े फ़र्श तक आलम को घेरे होता है। जिस किसी को रूश्दो हिदायत और ईमान और माअ्रेफ़त हासिल होता है, उसी के तोस्त और वसीले से हासिल होता है उस के वसीले के बग़ैर कोई शख़्स इस दौलत को नहीं पा सकता।'' (मक्तूबात इमामे रब्बानी, जिल्द-2, दफ़्तर 1, हिस्सा 4)

विलादत बा सआदत : आप की विलादत बा सआदत यकुम शव्वालुल मुकर्रम 242 हिजरी (ईदुल फित्र) बरोज़ पीर बवक्त सुबह सादिक़ सीरिया के हलब (अलिप्पो) में मुहल्ला जुनार में हुई। वालिदे मोहतरम क़ाज़ी क़िदवतुद्दीन अली हलबी ने आपका नाम बदीउद्दीन अहमद रखा। आपकी कुन्नियत अबू तूराब है।

अलक़ाब : आपको कुत्बुल इरशाद, कुत्बुल मदार, फ़रदुल अफ़राद, मदारे आलम, जुब्दतुल आरेफ़ीन, शम्सुल आफ़्लाक़ और मदारूल आलमीन के मुक़द्दस अलक़ाब से याद किया जाता है। बर्रे सग़ीर हिन्दो पाक में ज़िन्दा शाह मदार, दादा मदार और मदार पाक के नाम से ज़्यादा मशहूर हैं।

जिस वक्त आप रेहमे मादर से इस आलमे गेती में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो अनवारी तजल्लियात से घर का ग़ोशा-ग़ोशा माअ्मुर हो गया। नूर की एक ऐसी किरन फूटी जिस से सारी फ़िज़ा रोशन हो गई। ऐसा लग रहा था कि गुम्बदे खिज़रा से शहर हलब तक सारे हिजाबात उठ गए हों। अचानक दरो दीवार से ''अस्सलातो

वस्सलाम अलैका या रसूलुल्लाह'' की सदाऐं आने लगी। हज़रत ईदरीस हल्बी जो जामेअ् कश्फ़ो करामात बुज़ुर्ग हैं फ़रमाते हैं कि -

''हज़रत सैयद बदीउद्दीन जब इस आलमे गेती में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो कौनेन के फ़रमा रवा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रूह पर फूतूह मय जुमला असहाबे किबार ओर अईम्मा-ए-अतहार हज़रत अली हलबी के घर जल्वागर हुई और उन्हें फ़रज़न्दे सईद की विलादत पर मुबारक बाद दी। ग़ैब से हातिफ़ ने ''हाज़ा वलीउल्लाह, हाज़ा वलीउल्लाह'' का मिस्रदाह सुनाया। शाहिदाने बारगाहे लायज़ाल ने अपने लोह दिल पर इन मुबश्शरात को नक़्श कर लिया और आप सईद अज़ली क़रार दिए गए।''

हसब और नसब : आप नज़ीबुत्तरफ़ैन हसनी-हुसैनी सैयद है। वालिदे गिरामी हज़रत किदवतुद्दीन अली हलबी की जानिब से आप का शजरा-ए-नसब सैयुदुश्शोहदा ईमामे आली मुकाम सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मिलता है और वालिदा माजेदाह सैयदा फ़ातेमा सानिया उर्फ़ बीबी हाजरा के जानिब से आप का शजरा-ए-नसब इमामुल आलमीन हज़रत सैयदना इमाम हसन मुजतबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मिलता है।

आप अपना हसबो नसब खुद इस तरह बयान फ़रमाते हैं -

''मैं हलब कर रहने वाला हूँ। मेरा नाम बदीउद्दीन है। माँ की तरफ़ से हसनी और बाप की तरफ़ से हुसैनी हूँ। मेरे नाना मुस्तफ़ा जाने आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है, जिनकी तारीफ़ों सताईश दो जहान में की जाती है।''

(अलक्वाकेबुद्दरारियाह फ़ी मनाक़िबे मदारिया)

साहिबे मिर्रअतुल अंसाब मुहम्मद ज़ियाउद्दीन अहमद अमरोहवी, मिर्रअतुल अंसाब के सफ़हा 156 पर रक़म फ़रमाते हैं कि -''सैयद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार का सुल्बी सिलसिला औलादे इमाम ज़ाफ़र अस्सादिक रज़ियल्लाहु अन्हु से है।

शजरा-ए-नसब : क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी कुद्दससिर्रहू ने अपने मक्तूबात में आप का शजरा-ए-नसब इस तरह नक़्ल किया है -

''हज़रत कुत्बुल मदार, हज़रत अली इब्ने हज़रत अबी तालिब कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम की औलाद में हैं। आप के वालिद माजिद का इस्म गिरामी सैयद अली हलबी इब्न सैयद बहाउद्दीन इब्न सैयद ज़हीरुद्दीन सैयद अहमद इब्न सैयद मुहम्मद इब्न सैयद इस्माईल इब्न इमामुल अइम्मा सैयदना जाफ़र सादिक इब्न

इमामुल इस्लाम सैयद मुहम्मद बाकर इब्न इमामुद्दारेन ज़ैनुल आबेदीन इब्न इमामुश्शोहदा इमाम हुसैन इब्न इमामुल औलिया हज़रत अली है।''

नसब नामा मादरी : सैयदा फ़ातेमा सानिया उर्फ़ फ़ातेमा तबरेज़ी बिन्त सैयद अब्दुल्लाह इब्न सैयद ज़ाहिद इब्न सैयद अबू मुहम्मद इब्न सैयद अबू सॉलेह इब्न अबू युसूफ़ इब्न सैयद अब्दुल क़ासिम इब्न सैयद अब्दुल्लाह महज़ इब्न सैयद हसने मुसन्ना इब्न इमामुल आलमीन इमाम हसन इब्न अमीरूल मोमेनीन अली कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम। (तज़्किरतुल मुत्तक़ीन, हिस्सा 1, सफ़हा 117)

तालीमो तर्बियत : यह निज़ामे कुदरत है। अल्लाह तबारक व तआला जब किसी बन्दे को अपने ख़ास फ़ज़्लो करम, ज़ूदो अता, लुत्फ़ो इनायत से बेहरो बर करके उसको अक़वामे आलम के लिये रूह की पाक़िज़गी, क़ल्ब की तहारत और रश्दो हिदायत का ज़रिया बनाना चाहता है तो आबो गुल की इस दुनिया में इसको ऐसी बा वकार, बा अज़मत और साहिबे क़श्फ़ो करामात शख़्सियात के हवाले कर देता है जो इल्मो फ़ज़्ल, ज़ुहदो तक़वा, सिदको सफ़ा, शराफ़तो दयानत जैसी खुवियों की जामेअ् हों। चुनांचे आप की उमर शरीफ़ जब चार साल चाह महीने और चार दिनों की हुई तो सल्फ़ सालेहीन की सुन्नत के मुताबिक तालिमो तरबीयत के लिए कुत्बे रब्बानी शेख़ कबीर हज़रत हुज़ैफ़ा मरअशी शामी (मतोफ़ी 272 हि.) की ख़िदमत में पेश किया गया। उस्ताद गिरामी ने बच्चे को देखते ही फ़रासते बातनी से लोह ज़िबीं की इन नोश्तों को पढ लिया जो मुस्तक़बील में बन्दगाने ख़ुदा के लिये रश्दो हिदायत के रोशन बाब बनने वाले थे। पेशानी को बोसा दिया, ज़ुबाने मुबारक से हाज़ा वली अल्लाह की सदा निकली। उस्ताद मोहतरम ने इन्तिहाई दिलचस्पी के साथ हक़ उस्तादी अदा करते हुए मुख़्तसर सी मुद्दत में इब्तिदाई तालीम से लेकर शरीअत के जुमला उलूमरे फ़नून में यक्ता बेगाना बना दिया। चुनांचे सिर्फ़ चौदह साल की मुख़्तसर सी उम्र में आप को जुमला उलूम आक़ीला व नक़ीला पर कामिल दस्तरस हासिल हो चुका था। हाफ़िज़े कुरान के साथ आप जुमला आसमानी कुतुब खुसुसन तौरात व ज़बुरो इन्जिल के भी हाफ़िज़ व आलीम बन गए।

(तज़्किरतुल किराम, तारीख़ खुल्फ़ा व अरबो इस्लाम, सफ़हा 493)

सुल्तान तारेकीन हज़रत मख़दूम सैयद अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी कुदस फ़रमाते हैं, ''आप बाज उलूम नवादिर मसलन इल्म हिमीया, सिमीया, कीमीया, रिमीया से कामिल दस्तरस रखते थे। (लताइफ़े अशरफ़ी फ़ारसी, सफ़हा 354)(मिर्रतुल असरार-1007)

बेअतो खिलाफ़त : उलूमे ज़ाहिरी के बाद उन उलूम के हुसूल के लिये आप बेक़रार हो गये जो सिर्फ इफ़्करो नज़रयात को नहीं बल्कि क़ल्बो रूह को भी बालीदगी अता करे और हक़ीक़तों की कन्दीलें रोशन हो जायें। इन अबदी सआदतों के हुसूल के लिये ज़ियारत हरमैन शरीफ़ैन का क़स्द फ़रमाया। वाल्देन करीमेन से इजाज़त तलब की और जज़्बऐ शौक़ की रेहनुमाई में घर से रवाना हो गये।

क़दम बढ़ते रहे, दूरियाँ मिटती गई। जुनून इश्क़ कुशां-कुशां मंज़िल मक़सूद क़रीब करता गया। दौराने सफ़र एक मंज़िल पर आपने क़याम फ़रमाया और मसरूफ़े इबादत हो गये। मुनाज़ात नीम शबी से फ़ारिग़ हो कर आराम फ़रमा रहे थे ; अचानक परदा समाअत से आवाज़ टकराई, ''बदीउद्दीन, तेरी मुरादों के हुसूल का वक़्त क़रीब आ गया है। सहने बतुल मुक़द्दस में गिरोह औलिया के पेशवा ओर इमाम तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहे हैं । आँखे खुली, दिल की दुनिया बदल चुकी थी। आप बतुल मुक़द्दस के लिये रवाना हो गये। सन् 259 हि. में सुल्तानुल औलिया हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी कुद्स सिररह ने सहन बैतुल मुकद्दस में निस्बत सिद्दीक़ीया, तैफ़ूरया व निस्बत बसिरया तैफ़ूरया से सरफ़राज़ फ़रमाया और खिलाफ़तो इजाज़त का ज़र्रीन ताज अता फ़रमा कर हिला-ए-बातीन से आरास्ता फ़रमा दिया।

मुसन्निफ़े तज़किरतुल फ़ुकरा ओ इसरारूल वासेलीन ख़्वाजा-ए-ख़्वाजगान मुईनुद्दीन हसन चिश्ती ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़हा 776 पर तहरीर फ़रमाया है कि, ''ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलैह के खिर्क़ा ए ज़िन्दान सूफ़ हज़रत सैयदना बदीउद्दीन कुतुबुल मदार रहमतुल्लाह अलैह ख़लीफ़ा-ए-अव्वल हैं । 15 शव्वालुल मुकर्रम सन् 259 हि. को बाद नमाज मग़रीब ख़िर्क़ा-ए-खिलाफ़त अता फ़रमाया।'' (आईना-ए-नसब, सफ़हा 41)

एक अरसे तक मुर्शीद बर हक़ की ख़िदमत में रहकर इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात, ईरफ़ानो आगाही और रूहानियत से मुस्तफ़ीज़ होते रहे।

यकुम शव्वालुल मुकर्रम सन् 261 हि. में सुल्तानुल आरेफ़ीन हज़रत बायज़ीद बुस्तामी का विसाल पाक हुआ। हज़रत कुत्बुल मदार ने अपने मुर्शीद की तालीम के मुताबिक एक अरसे तक गोशानशीनी इख़्तियार फ़रमाकर मख़सूस औरादो वज़ाईफ़ और ज़िक्रो अज़कार में खुद को मशगूल रखा। ज़ियारते हरमैन शरीफ़ैन के मौसमे बहार ने जब दिलों की सरज़मीन पर दस्तक दी तो क़ायनात के गोशे गोशे से आज़मीने हज के काफ़ले दयारो नूर की तरफ़ रवां दवां थे। आप ने भी रख्त

सफ़र बांधा और फ़रीज़ाए हज के लिये रवाना हो गये। अरकाने हज से फ़ारीग़ होने के बाद, उस मुक़द्दस दयारो हरीमे कुद्दस की तरफ़ रवाना हो गये जहाँ सुबह-शाम कुदसीयों का मेला लगा रहता है। जहाँ हमा वक़्त अनवारो तजल्लीयात की मुसलाधार बारीश होती रहती है। जो हर मोमिन का शोबाए ईमान भी है। और किबला मकसूद और सरफ़राज़ी-ए-इश्क़ ने एक दीवाने को मेहबुब के क़दमों में डाल दिया। अबदी सआदतों का दरवाज़ा खुला, दरिया का बिछड़ा हुआ क़तरा दरिया से जा मिला। उठती हुई मोजों ने अपनी आगोश में दुनिया व कोनेन के फ़रमा रवां हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आलमे मिसाल में जलवा गर हुए। निगाहें नबूवत ने आप के सीना पाक को जलवाऐ हक का गहवारा बना दिया। इसी आलम में मौला-ए-क़ायनात हज़रत अली मुर्तजा रजियल्लाहु अन्हो तशरीफ़ फ़रमा हुए। हुक्मे रिसालत माब हुआ अली इस फ़रज़न्द सईद को उलूमो बातीन से मज़ीद सरफ़राज़ करो। ताजदारे विलायत नें आगोशे रहमत में लेकर आप के क़ल्ब को विलायत आज़मी का मोहतमील बना दिया और बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। हुज़ूर अलैहि सलातो वस्सलाम ने इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम फ़रमा कर शरफ़ो उवैसियत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और ओहदा-ए-मदारियत से सरफ़राज़ फ़रमाकर खलाईक़ में जब्रो कसर और अज़्लो नसब का मुख़्तार बना दिया।

''कुत्बुल मदार, मदीना मुनव्वरा में हाज़िर हुए तो बरूहानियत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने हुजरा-ए-ख़ास में आप पर बाकमाल मेंहीबानियाँ अता फ़रमाई और हक़ीक़ी इस्लामी तालीम के लिए हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम के सुपुर्द फ़रमाया।''

(कलीदे माओरेफ़त अलमारूफ बज़्मे वारसी, सफ़हा 117, गुलज़ारे वारिस)

सुल्तानुत्तारेकीन हज़रत मख्दूम सैयद अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी कुद्स सिरह इरशाद फ़रमाते हैं, - शेख फ़रीदुद्दीन अत्तार कुद्स बयान फ़रमाते हैं कि, ''अल्लाह अज़्वजल के वलियों में से कुछ हज़रात वह हैं जिन्हें बुज़ुर्गाने दीन ओ मशाईख़ तरीक़ते ''उवैसी'' कहते हैं। इन हज़रात को ज़ाहिर में किसी पीर की ज़रूरत नहीं होती, क्योंकि हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने हुजरा-ए-इनायत मे बज़ाते खुद उनकी तर्बियत और परवरिश फ़रमाते हैं। इस में किसी ग़ैर का वास्ता नहीं होता, जैसा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उवेस करनी रज़ियल्लाहु अन्हु को तर्बियत दी थी। ये मुकामे उवैसियत

निहायत ही ऊँचा, रोशन और अजीम मुकाम है। किसकी यहाँ तक रसाई होती है। ये दौलत किसे मयस्सर आती है, बमोज़बे आयते करीमा, **''ज़ालेका फ़ज़्लुल्लाह युतिह मय्यशाओ वल्लाहे फ़ज़्लुलफ़ज़्लुल अज़ीम 0''** *(ये अल्लाह का मख़्सुस फ़ज़्ल है, वह जिसे चाहता है अता फ़रमाता है और अल्लाह अज़ीम फ़ज़्ल वाला है।)*

(लताइफ़े अशरफ़ी)

हज़रत मख़्दूम मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं -

''हजरत शेख बदीउद्दीन मुलक़ब ब ज़िन्दा शाह मदार कुदस भी उवैसी हुए हैं। निहायत ही बुलन्द मर्तबा और शरफ़ वाले हैं। बाज़ नादिर उलूम जैसे-इल्म हीमिया, कीमिया, रीमिया, लीमीया उन से मुशाहिदे में आए हैं। जो इस गिरोहे औलिया में नादिर ही किसी को हासिल होते हैं।'' (लताइफ़े अशरफ़ी, फ़ारसी, सफ़हा 354)

मुक़ामे मदारियत

अभी-अभी आप पढ़ चुके हैं कि हज़रत बदीउद्दीन अहनद कुत्बुल मदार को मक़ामे मदारियत, ख़लाइक में अज़ल ओ नसब और ज़बरो कस्र का इख्तियार और शरफ़े निस्बते उवैसियत बारगाहे नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हासिल हुआ। अब बुज़ुर्गों के इरशादात की रोशनी में देखा जाए कि मकामे मदारियत क्या है ? ओर कुत्बुल मदार के तसर्रुफ़ात व इख्तियारात क्या होते हैं ? ताकि जमाअते औलिया-ए-किराम में हजरत कुत्बुल मदार की ज़ाते बाबरकत मुतय्यन कर सकें।

औलिया अल्लाह की मशहूर किस्में

❊ हजरत ग़ौस अली शाह कलंदर पानीपती रहमतुल्लाह अलैह ''तज़किरा-ए-ग़ौसिया'' में फ़रमाते हैं कि, ''औलिया अल्लाह की बहुत सी क़िस्में है। अगरचे ठीक-ठीक सिवाए ज़ाते पाक के कोई नहीं जानता, लेकिन मशहूर ये हैं - ''कुत्बुल मदार'', ''सूफ़ी उल वक़्त'', ''सूफ़ी इब्नुल वक़्त''।

(तज़किरा-ए-ग़ौसिया ज़मीमिया जदीदाह)

❊ मौलाना गुलाम अली नक्शबन्दी मुजद्दी इरशाद फ़रमाते हैं, ''हक़ तआला कारखाना-ए-हस्ती ओ तवाबअ् हस्ती के अजरा का काम कुत्बुल मदार के सुपुर्द फ़रमा देता है और गुमराहों की हिदायत व रहनुमाई कुत्बुल मदार सर अंजाम देता है।'' इस के बाद इरशाद फ़रमाते हैं कि, ''हज़रत बदीउद्दीन शेख मदार (कुदस) कुत्बुल मदार थे और अजीम शान वाले थे।'' (दुर्रूल मुआरिफ़, मताबेअ् इस्ताबुल तुर्की, सफ़हा 243)

कारोबारे आलम का दारोमदार कुत्बुल मदार पर है

❊ हज़रत मौलाना मुफ़्ती इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह के पीरो मुर्शीद सैयद शाह अबुल हसन अहमद नूरी मारेहरवी कुदस सिर्रहू अजीज़ फ़रमाते हैं कि -

''हर ज़माने में एक ग़ौस होता है कि उस ज़माने के तमाम औलिया-ए-किराम का सरदारो सरताज होता है ओर उसके ज़माने का कोई वली उस का मर्तबा नहीं पा सकता। उसको कुत्बुल मदार कहते हैं। इसलिए कि तमाम आलम के कारोबार का दारोमदार उसी पर होता है और तमाम नज़्मो नस्क़ उसी के हाथों नाफ़िज़ होता है और निफ़ाज़ पाता है।''

(सिराजुल अवारिफ़ मतर्जुम मौसुम ब शरीयतो तरीक़त सफ़हा 114-115)

आलम की बक़ा कुत्बुल मदार की बरकत से है

❊ हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़सानी इमामे रब्बानी शेख एहमद फ़ारूक़ सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि -

''अल्लाह तआला ने मुझे और इलियास अलैहिस्सलाम को कुत्बुल मदार का मुआविन बनाया है, जो अल्लाह तआला का ऐसा प्यारा वली है जिसको अल्लाह तआला ने आलम के लिए मदार बनाया है और आलम की बक़ा उसके वजूद की बरकत और उसके फ़ैज़ान के सबब है।''

(अल हदीक़तुन्नदीय्याह फ़ी शरहतरीक़तुन नक्शबंदिया/ मताबेअ् इख़्लास वक्फ़ी, इस्तांबुल तुर्की)

❊ सैयदना मीर जाफ़र मक्की रहमतुल्लाह अलैह जो सैयदना नसीरूदीन चिराग़ देहलवी चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदो ख़लीफ़ा हैं, फ़रमाते हैं -

''मौजूदाते अलवी व सिफ़ली का दारोमदार कुत्बुल मदार के वजूद की बरकत से है।'' (बहरूल मआनी/ सफ़हा 83/ मीर जाफ़र मक्की रहमतुल्लाह अलैह)

इख्तियारात ओ तसर्रुफ़ाते कुत्बुल मदार

❊ हजरत सैयदना मीर जाफ़र मक्की चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह मुरीदो ख़लीफ़ा शेख सैयद नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह अपनी किताब ''बहरूल मआनी'' में रक़म फ़रमाते हैं -

''ऐ महबुब ! ध्यान से सुन, कि अक्ताब और कुत्बुल मदार के मरातिब क्या

है। अक़ाब का मरतबा ये है कि लोग अगर चाहें तो वली को विलायत से माजुल कर दें (हटा दें) और उसकी जगह दुसरे को मुक़र्रर फ़रमा दें, और कुत्बुल मदार का मुकाम ये है कि अगर चाहे तो क़ुतुबो को मुक़ामे कुत्बियत से माज़ुल कर दें (हटा दें) और अगर अल्लाह तआला फ़रिश्तों को किसी काम का हुक्म फ़रमा चुका हो और कुत्बुल मदार की मर्ज़ी हो कि ये काम नहीं होना चाहिए, तो अल्लाह तआला अपने मेहबुब की रज़ा की ख़ातिर फ़रिश्तों को उस काम से रोक दें और कुत्बुल मदार के कहने पर अल्लाह तआला लोहे महफ़ूज़ के नविश्त को भी महव फ़रमा दे। मुर्दों को ज़िन्दा करना, अर्शो कुर्सी को मुन्तकिल कर देना, ये सब कुत्बुल मदार के खुसूसी तसर्रुफ़ात हैं।'' (बहरूलमआनी/सैयद मीर जाफ़र मक्की रहमतुल्लाह अलैह)

❊ शेखुश्शुयुख हज़रत शेख मुहियुद्दीन इब्ने अरबी इरशाद फ़रमाते हैं -

''जब अल्लाह तआला किसी बन्दे को मर्तबा-ए-कुतुबियत पर फ़ाईज फ़रमाता है तो आलमे मिसाल में उस के लिए एक तख़्त बिछा कर उस पर उस बन्दे को बैठाता है और उस मकान की सूरत बहैसियत उसके मक़ामो मर्तबा के बनाता है। हर चीज़ के साथ अहाता-ए-इल्मी के ज़रिए और अल्लाह से बढ़ कर कौन आला मिसल दे सकता है तो जब वह तख़्त बिछा दिया जाता है, जिस का तालिब तमाम आलम है और अस्मा उस आलम के तालिब होते हैं। फ़िर उससे हुल्ले ज़ाहिर होते हैं। वह सब उस कुतुब को पहना कर ताजे करामत देकर उसको उस तख़्त पर बैठाते हैं। उस वक़्त उसकी हालत ख़लीफ़ा की होती है। फ़िर अल्लाह जल्ल शान हू तमाम आलम को हुक्म देता है उस से बैअ्त करने का, इस शर्त पर की लोग उस की इताअत करें और सख़्ती व राहत हर हाल में करें। पस सारा आलम अदना ओ आला सब उसकी बैअ्त में दाखिल हो जाते हैं। (फ़तुहाते मक्कीया, सफ़्हा 336, बाब दुर्रुलमुनज़्ज़म)

❊ हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं - ''क़यामे आलम का इन्हसार कुत्बुल मदार के वजूद पर है।''

(तफ़सीरे अज़ीज़ी, जिल्द 2, सफ़्हा 141)

इन तमाम बुज़ुर्गो, मुजाद्दिद, इमाम और औलिया अल्लाह के बयान कर्दा अक़ीदों से यह बात वाज़ेअ् हो जाती है कि -

❊ *कुत्बुल मदार के ख़िलाफ़ कोई वली किसी तरह से असर अंदाज़ नहीं हो सकता है। न उसके तसर्रुफ़ात में से कमी कर सकता है, न उसके इख़्तियारात से कुछ सल्ब कर सकता है।*

❊ *न उसके मुरीदीन, अक़ीदतमंद और मुताअक़ेदीन को कोई गुमराह कर सकता है, क्योंकि कुत्बुल मदार ख़ुद हिदायत और रहनुमाई का चिराग़ है।*

❊ *न ही उसके सिलसिला-ए-बैअ्तो ख़िलाफ़त को कोई गुज़ंद पहुँचा सकता है, बल्कि जो वली कुत्बुल मदार से ज़र्रा भर सूए ज़न या अदावत रखेगा या किसी बिनाअ पर ख़ुद कुत्बुल मदार उस वली से आज़रदाह हो जाएँ तो वह वली रूश्दो हिदायत की हक़ीक़त से महरूम हो जाएगा या उसकी विलायत और कुत्बियत सल्ब हो जाएगी।*

❊ *कुत्बुल मदार के मुरीदों को गुमराह करने का इरादा करने वाला या तो ख़ुद गुमराह हो जाएगा या उसके फ़ैज़ से सिलसिले को मुनक़्ताअ् कर (काट) दिया जाएगा।*

चुनाँचे, हज़रत मुजद्दिद अल्फि सानी इमाम रब्बानी शेख अहमद अल फ़ारूक़ी सरहिन्दी नक्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह ''मक्तूबात इमाम रब्बानी'' में फ़रमाते हैं कि - '' जो शख़्स कुत्बुल मदार का मुन्किर है या वह बुज़ुर्ग (कुत्बुल मदार) ख़ुद उस शख़्स से आज़ुरदाह हैं तो भले ही वह शख़्स ज़िक्रे ईलाही में मशगुल है, लेकिन वह रूश्दो हिदायत की हक़ीक़त से महरूम है।''

(मक्तूबात इमाम रब्बानी, जिल्द 2, दफ़्तर 1, हिस्सा 4, मक्तूब 260)

❊ हज़रत गुलाम अली नक्शबंदी मुजद्दी इरशाद फ़रमाते हैं -

''हज़रत सैयद बदीउद्दीन अहमद शेख मदार रज़ियल्लाहु अन्हु कुत्बुल मदार थे और अज़ीम शान वाले थे।'' (दुर्रुलमुआरिफ़ मताबेअ् इस्ताबुल तुर्की, सफ़्हा 243)

तब्लीगो इशाअत : हज़रत कुत्बुल मदार को जो नेअ्मतें बारगाहें रिसालत से हासिल हुई, उन नेअ्मतें इलाहिया को आप ने सिर्फ़ अपनी ज़ात तक महदूद नहीं रखा, बल्कि इस्लाम की तज्वीज व इशाअत के दौरान ख़ल्के ख़ुदा को उन नेअ्मतों से खूब-खूब मुस्तफ़ीज व मुस्तफ़ीद फ़रमाया। तिश्नगाने माअरेफ़त आपकी खिदमत में आते रहे और तिश्ना रूहों को सैराब करते रहे।

चुनाँचे हुक्मे रिसालत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पाकर तब्लीग़े दीन के खातिर मदीनतुन्नबी अलैहि सलातो वस्सलाम से भीगी पलकों के साए में रवाना हुए। समरकंद, बुखारा, तूस, खुरासान, बदख़्शाँ, बग़दाद, क़ाबुल का दौरा फ़रमाया। हिन्दोस्तान की ये सरज़मीन जहाँ कभी सिर्फ़ और सिर्फ़ कुफ़्रो-शिर्क की फ़सलें

उगती थीं, जिसकी फ़ज़ाओं में नग़मा-ए-तौहिदो रिसालत की खुश्बू के बदले माअबुदाने बातिल के लिए ''जय'' के नारे ज़हर घोल रहे थे, उस हिन्दोस्तान की तीराहों तारिक्र में जिन मुबल्लिगीन ने इस्लाम की शमऐ रोशन की उनमें हज़रत कुत्बुल मदार का बहुत अहम हिस्सा है। आप सन् 280 हिजरी में हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए।

''हुज़ूर सैयदना बदीउद्दीन अहमद ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार कुद्स उस वक्त हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए जब यहाँ मुसलमानों का नामों निशान नहीं था। मुहम्मद बिन क़ासिम अलवी की कायम कर्दा हुकुमत ज़वाल पज़ीर हो चुकी थी।''

(किताब : तारिखे सलातीने शरक़ीया व सूफ़ीया-ए-जौनपुर)

हज़रत कुत्बुल मदार की रूहानी निस्बतें

आं हज़रत रिसालते माआब सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सलासिले ख़मसा की निस्बतों यानी जाफ़रीया, तैफूरीया, सिद्दीक़ीया, मेहदविया, उवैसिया से मुनसलिको मरबूत है।

आपकी निस्बते जाफ़रीया मअ् सुल्बी नसब के ये है -

हज़रत सैयद शाह बदीउद्दीन कुत्बुल मदार इब्न
हज़रत सैयद क़िदवतुद्दीन अली हल्बी बिन
हज़रत सैयद बहाद्दीन बिन
हज़रत सैयद ज़हीरूद्दीन बिन
हज़रत सैयद अहमद बिन
हज़रत सैयद मुहम्मद ईस्माइल बिन
हज़रत इमामुल मुत्तक़ीन जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बिन
हज़रत इमामुल मुत्तक़ीन मुहम्मद बाकर रज़ियल्लाहु अन्हु बिन
हज़रत इमामुल मुत्तक़ीन सैयद ज़ैनुल आबेदिन रज़ियल्लाहु अन्हु बिन
हज़रत सैयद इमामुल मुत्तक़ीन इमाम हुसैन शहीद दश्ते कर्बला रज़ियल्लाहु
अन्हुमा बिन ख़लिफ़तुल मुसलेमिन हज़रत सैयदना अली
इब्ने अबी तालिब कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम
हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा एहमदे मुजतबा
रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

(मदारे आलम, सफ़हा 54-56, तोहफ़तुल अबरार फ़ी मनाक़िबे कुत्बुल मदार) (गुलिस्ताने मदार, सफ़हा 200)

निस्बते तैफूरीया मदारिया

1. *हज़रत सुल्तानुल अम्बिया वल मुर्सलीन इमामुल अव्वलीन वल आख़िरीन शफ़ीयुल मुज़नबीन रहमतल्लित आलमीन अबुल क़ासिम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम*
2. *इमामुल मुत्तक़ीन खलीफ़तुल मुसलेमीन असदुल्लाहिल ग़ालिब अली इब्ने हज़रत अबी तालिब कर्रमल्लाहो वज्हुल करीम*
3. *इमामुल मुस्लेमीन मुरशीदुल आशेक़ीन ख़्वाजा-ए-ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु*
4. *ज़ुब्दतुल आशेक़ीन इमामुज़्ज़हिदीन हज़रत ख़्वाजा हबीब अज़मी रज़ियल्लाहु अन्हु*
5. *सुल्तानुल आरेफ़ीन कुत्बुल आशेक़ीन तैफूरूद्दीन शामी बायज़ीद पाक बुस्तामी रज़ियल्लाहु अन्हु*
6. *शम्सुल अफ़्लाक़ फ़र्दुल अफ़राद सरकारे सरकारां सैयद शाह बदीउद्दीन कुत्बुल मदार अल माअरूफ़ व शहंशाह हज़रत ज़िंदा शाह मदार रज़ियल्लाहु अन्ह*

सिलसिला-ए-सिद्दीक़ीया मदारिया

1. *शफ़ीउल मुज़्नेबीन, रहमतल्लिल आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम*
2. *हज़रत सैयदुस्सादेक़ीन, अमीरूलमोअमेनीन सिद्दीके अकबर सैयदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु*
3. *सैयदुलमुअमेनीन हज़रत सैयदना अब्दुल्लाह अलमबरदार रज़ियल्लाहु अन्हु*
4. *मिस्बाहुलमुन्तक़ीन सैयदना ख़्वाजा यमीनुद्दीन शामी रज़ियल्लाहु अन्हु*
5. *हज़रत इमामुल आरेफ़ीन सैयदना ख़्वाजा ऐनुद्दीन शामी रज़ियल्लाहु अन्हु*
6. *हज़रत सुल्तानुल आरेफ़ीन सैयदना ख़्वाजा बायज़ीद पाक बुस्तामी रज़ियल्लाहु अन्हु*
7. *क़िदवतुस्सालेक़ीन ज़ुब्दतुल आरेफ़ीन कुत्बुल इरशाद हज़रत पीरे रोशन ज़मीर सैयद शाह बदीउद्दीन कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु*

(सीरते मदार, सफ़हा 29/ गुलिस्ताने मदार, सफ़हा 201)

हज़रत कुत्बुल मदार की निस्बते मेहदविया

1. उज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा रसूले मोअ्ज़म हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
2. अमीरुल मोअमेनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहे वज्हुल करीम
3. रूहे पाक इमामे इंतज़ार हज़रत इमाम मेंहदी आख़िरूज़्ज़मा अलैहिस्सलाम
4. मुर्शीदे क़ामिल, हादी आगाहे दिल, माहिरे शरीअत ओ तरीकत, फ़ाज़िले सुब्हानी, आशिके रहमानी, ज़ाकिरे रूहानी हज़रत सैयद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु

(मिर्अते मदारी, क़लमी नुस्खा 1064 हिजरी/ कुतुब खाना सालारजंग/ हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह) (कलेमतुल हक़/सफ़हा 965/हिस्सा 2/मुसन्निफ़ हामिद बिन बशीर बी.ए., एल.एल.बी. साबिक़ चीफ़ जस्टिस सिटी कोर्ट, हैदराबाद) (गुलिस्ताने मदार सफ़हा 202) (फ़ूसूले मसूदीया) (आईना-ए-तसव्वुफ़)

निस्बते उवैसिया मदारिया

❊ हज़रत सैयद शाह बदीउद्दीन कुत्बुल मदार को रास्ते क़ल्ब हज़रत सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अजरा-ए-निस्बत फ़ैज़े उवैसिया मदारिया हासिल है।

- एक मर्तबा मुरीदों खलीफ़ा-ए-कुत्बुल मदार हज़रत महमूद कन्तूरी रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया कि, ''हुज़ूर ! अपना सिलसिला मुझे अता फ़रमाइये।''

कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ैज़ाने रहमतल्लिल आलमीन की नवाज़िशों का दरिया बहा दिया और इरशाद फ़रमाया -

''अपना नाम लिखो, फ़िर मेरा नाम रक़म करो और फ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मुबारक इस्मे गिरामी नक़्श कर लो और सिलसिलाए उवैसिया मदारिया से मुस्तफ़ीज़ हो जाओ।''

(फ़ूसूले मसऊदीया) (अलकवाकेबुद दरारिया, शेख अहमद बिन मुहम्मद क़ानी) (गुलिस्ताने मदार सफ़हा 202)

हज़रत कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के चार ख़ुल्फ़ा से मदारिया सिलसिले की चार शाखें वजूद में आई।

1. **सिलसिला ख़ादीमान मदारिया :** हज़रत सैयद अबू मुहम्मद अरग़ून रहमतुल्लाह अलैह। आपका मज़ार पुर अनवार मकनपुर शरीफ़ में वाकेअ् है।
2. **दीवानगान मदारिया :** इमामे मलंग, मलंगे आज़म सैयद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह। आपका मज़ार शरीफ़ हिल्सा शरीफ़, जत्तीनगर, ज़िला नालंदा, बिहार में है।
3. **आशिक़ान मदारिया :** हज़रत सैयद क़ाज़ी मुतह्हिर रहमतुल्लाह अलैह। आपका मज़ार मुक़द्दस मावर शरीफ़ ज़िला कानपुर में है।
4. **तालिबान मदारिया :** हज़रत क़ाज़ी महमुद्दुदीन कन्तूरी रहमतुल्लाह अलैह। आपका मज़ार मुक़द्दस कन्तूर शरीफ़, ज़िला बाराबंकी नवाए लखनऊ में मरजा-ए-खलाइक़ है।

मो. 9893760486

मंसूरी फ्लोअर मिल

गेहूँ, दाल, मिर्च, मेंहदी आदि पीसी जाती है।
सब्जी मण्डी पुलिस थाने के पास, शामगढ़, जिला मन्दसौर (म.प्र.)
प्रो. इमामबक्ष मंसरी उर्फ कल्लू भाई
(महामंत्री जिला कांग्रेस व संगठन मंत्री म.प्र. मंसूरी समाज)

आईबीएम क्लिनिक

सब्जी मण्डी पुलिस थाने के पास, शामगढ़, जिला मन्दसौर (म.प्र.)
डॉ. शौकत हुसैन मंसूरी (B.A.M.S. General Physician)

मंसूरी मोबाइल

थाना चौराह, मस्जिद रोड़, शामगढ़, जिला मन्दसौर (म.प्र.)
प्रो. अशरफ़ मंसूरी

क़सीदा शरीफ़

✲ हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक क़ादरी बांसवी रज़ियल्लाहु अन्हु (1048 हि.-1136 हि.) शहज़ादा-ए-ग़ौसुल आज़म सैयदना शेख़ अब्दुल क़ादिर ज़िलानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने सनँ 1120 हिजरी में बारगाहे मदारूल आलमीन में हाजरी का शर्फ़ हासिल किया और बारगाहे कुत्बुल मदार में क़सीदा शरीफ़ पेश किया।

ऐ जिगर ग़ोशे मुहम्मद ऐ हबीबे किर दिगार,
ऐ गुले गुलज़ार हैदर चूँ अमीरे शह सवार,
ऐ चिराग़े दीने अहमद हम शबिस्ताने बहार,
आशिक़े मक़सूदे मुतलक मेहरेमे परवरदिगार,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार।

कुर्रतुल ऐने मुहम्मद ऐ जिगर ग़ोशे अली,
यक नज़र फ़रमा बराये मुस्तफ़ा खैरून [illegible],
रौनके बागे विलायत मेहरेमे राज़े ख़फ़ी,
ऐ अमीरे ताजे अनवर फ़ैज़ बख़्शे मअनवी,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार।

वाक़िफ़े इल्मे लदुन्नी ऐ शहे क़ुतुबुल मदार,
महरमे सिर्रे हक़ीक़त बादशाहे नामदार,
गौहरे मक़सूदे आलम मज़हरे परवरदिगार,
नाज़िमे दीने मुहम्मद आज़मे सद इफ़तिख़ार,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार।

ऐ सरवरे जुमला आलम हामीये ताजे विला,
मुक़्तदाए अहले इरफ़ां वाक़िफ़े [illegible] खुदा,
अज मकनपुर ता ख़ुरासां फ़ैज़ बख़्श हर गदा,
साकिनाने आलमीं करदन्द तू बर जाँ फ़िदा,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार।

हाज़िरं अज़ रू ए इसयाँ ऐ शहे आली उमम,
लुत्फ़ कुन बर ईं गदा ए पेश ख़ुदारम जुरम,
चूँ ने आयम कोई नाज़ां शूम हर तस्तमम,
मी कुनम फ़रयाद हर दम कुन बदीउद्दीं करम,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार।

महरम ए हर ना तवांने दर्द मन्दान ए तूई,
वालीए हर बेकसाने दस्त दरमाने तूई,
शाफ़ए हर आसियाँ रा फ़ैज़ शाहाने तूई,
ताज बख़्शे हर गदा रा गंज सुल्ताने तूई,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार।

मन चे गोयम दर हयाते ऐ शहे रोशन ज़मीर,
हादीए हर गुमराहांओ आसियां रा दस्तगीर,
आजेज़म दरमान्दा उफ़्तादा आम जाने असीर,
बह नगर्द हर हाल आसी इल्तिजा दारद फ़क़ीर,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार,

मन न गोयम वस्फ़ तू सद आफ़रीं सद आफ़रीं,
फ़ैज़े तू ज़ारी व सारी बर सरे दुनिया व दीं,
मअदिने जूदो इनायत साकिन ए अर्शे बरीं,
समदियत अज़ मरतबत हासिल शुदा नूरे यक़ीं,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार।

बर हमा आलम शहा तू फ़ैज़ बारे ख़ासो आम,
यक नज़र फ़रमा बराए मुस्तफ़ा ख़ैरूल अनाम,
अज़ अज़ल हसतम गुलामी कू ए तू दारम मकाम,
आदम ए रू ए ख़ज़ालत दस्तगीरी कुन मदाम,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार।

ना तवानम बे करारम ख़ाकसारम चश्म ज़ार,
पर गुनाहम शर्मसारम न रदाएम दिल फ़िगार,
दर्द मन्दम मुतमन्दम जान सूज़ अश्कबार,
ख़स्ता हालम दाना दारम अज़ फ़ुर्क़त अश्कबार,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार,

आसी अब्दुर्रज़्ज़ाक क़ादरिया मा नसब,
दर्द कुन अज़ लुत्फ़ ए रहमत ई हमा रंज व गज़ब,
आमदा दर्गाहे शाहाना हमा इज़्ज़ा अदब,
मा बराएम ज़ां ख़राबम मन नमी दानम सबब,
कुन करम बहरे ख़ुदा सैयद बदीउद्दीं मदार।।

(हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक क़ादरी बांसवी रज़ियल्लाहु अन्हु, बानसा शरीफ़, जि. बाराबंकी)

फ़ैज़ाने सिलसिला आलिया मदारिया

तरीक़त ओ तसव्वुफ़ की दुनिया में सिलसिला आलिया मदारिया आफ़ताबे आलम ताब है। जिसकी किरनों से एशिया व युरोप के तमाम सलासिल और इरशादो सुलूक की तमाम खानक़ाहें मुनव्वरो ताबा हैं। चुँकि ये सिलसिला क़दीम होने की वजह से चार या सिर्फ़ पाँच वास्तों से रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक पहुँच जाता है, नीज़ शरफ़े उवैसियत से मालामाल है। इन्हीं हसनातों बरकात के हुसूल के लिए अहले दिल अहले नज़र ने इसे अपने सिर लगाया और अपने लिए क़ामयाबी व कामरानी का बाईस जाना।

यहाँ कुछ सलासिल का ज़िक्र किया जाता है, जिन्होंने इस सिलसिला आलिया मदारिया को अपनाया और फ़ैज़ाने मदारियत से मालामाल होकर अपने मन्सबों कमाल पर मोहरे तस्दीक़ सबत की।

हज़रत मदार पाक (कुदस) को न सिर्फ़ सुल्तानुल आरेफ़ीन इमामुत्तरीकत सैयदना तैफ़ूर बायज़ीद बुस्तामी कुदस से बैअ़तो खिलाफ़त हासिल है बल्कि दूसरे मशाईख़ हज़रत अब्दुल्लाह शामी रहमतुल्लाह अलैह ने भी आपको इज़ाज़तो ख़िलाफ़त से नवाज़ा है। इन मशाईख़ के शजरात में भी मदारूल आलमीन रज़ियल्लाहु अन्हु और साहिबे लोलाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दरमियान सिर्फ़ चार या पाँच वास्ते आते हैं।

सिलसिला क़ादरिया बरक़ातिया में सिलसिला-ए-मदारिया

सिलसिला आलिया क़ादरिया के बुज़ुर्गो ने अपनी-अपनी तस्नीफ़ात में इस हक़ीक़त का बरमला इज़हार फ़रमाया है कि उन्हें दीगर सलासिल के साथ खुसूसन सिलसिला मदारिया की निस्बत हासिल है।

अगवान क्लिनिक

सदर बाजार, कुकड़ेश्वर, जिला नीमच (म.प्र.)

डॉ. मुश्ताक एहमद मंसूरी Mob. : 9826032913

हज़रत सैयद शाह जमालुल औलिया कुड़वी जहानाबादी रहमतुल्लाह अलैह पर फ़ैज़ाने मदारियत (973 हि.-1047 हि.)

हज़रत शाह जमालुल औलिया कुड़वी जहानाबादी रहमतुल्लाह अलैह सिलसिला क़ादरिया बरक़ातिया रिज़विया के 29 वें इमाम है। आपके वालिदे मोहतरम का नामे नामी शाह अब्दुद्दीन उर्फ़ हज़रत मख़दूम जहानियां सानी बिन शाह बहाउद्दीन है। आपके वालिद बुर्ज़ुगवार ने अव्वल आपको अपने सिलसिलए आलिया चिश्तिया निज़ामिया में बैअ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाकर निस्बते कादरिया व सोहरवर्दिया से भी सरफ़राज़ी बख़्शी। वालिदे मोहतरम से अपने ख़ानदानी निस्बतों से मुमताज़ व माज़ून होने के बाद मकनपुर शरीफ़ तशरीफ़ लाकर आस्तानाए कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु पर हाज़िरी दी। उस वक्त हज़रत साहिबे सज्जादा मकनपुर शरीफ़ में मौजूद थे उन्होंने आपको अपना मेहमान फ़रमाया और अपने सिलसिलए मदारिया की निस्बत से मालामाल फ़रमाकर खिलाफ़त व इज़ाज़त अता फ़रमाई।

(नूर मदाईहे हुज़ूर-गुलाम शब्बर क़ादरी बरकाती)

हज़रत शाह सैयद अबुल हुसैन अहमद नूरी बरकाती मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह अपनी किताब ''अन्नूर वलबहा'' में अपने शजरए बदीइया मदारिया में इसका इज़हार फ़रमाते हैं।

तर्जुमा : ''यह फ़कीर अबुल हसन नूरी अफ़ी अन्हु कहता है कि मुझको सिलसिलए बदीइया मदारिया की इज़ाज़त मेरे दादा और मुरशिद सैयद आले रसूल अहमदी कुद्दिसा सिर्रह ने दी, उन्हें हज़रत अच्छे मियां साहब से उन्हें सैयद हम्ज़ा से उन्हें सैयद आले मुहम्मद साहब से उन्हें साहिबुल बरकात मारहरवी से उन्हें सैयद शाह फ़ज़्लुल्लाह कालपवी से उन्हें अपने दादा सैयद मुहम्मद साहब से उन्हें जमामुल औलिया से उन्हें शैख़ क़यामउद्दीन से उन्हें शैख़ कुत्बुद्दीन से उन्हें शैख़ सैयद जलाल अब्दुल क़ादिर से उन्हें सैयद मुबारक से उन्हें सैयद अजमल से उन्हें आरिफ़े अकमल कामिल मकम्मल मौलाना बदीउल हक़ वल मिल्लत बदीउद्दीन मदार मकनपुरी रहमतुल्लाह अलैह से।''

(अन्नूर वल बहा फ़ी असानिदुल हदीसो सलसिल अल औलिया, सफ़हा 72, शाह अबुल हुसैन नूरी मारहरवी)

जमालुल औलिया का निस्बते उवैसिया से मुस्तफ़ीज होना

हज़रत अब्दुल मुज्तबा रिज़विया ''तज़किरा मशाईखे क़ादरिया बरक़ातिया रिज़विया'' के सफ़हा 310-311 पर फ़रमाते हैं कि, ''हजरत शाह जमालुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह ने बिला वास्ता अरवाह मुबारक सैयदना मुहीयुद्दीन शेख अब्दुल क़ादिर जिलानी ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद और हजरत शाह बदीउद्दीन कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हुमा से फ़ैज़े उवैसिया हासिल फ़रमाया।

हज़रत मीर सैयद मुहम्मद तिर्मिजी कालपवी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत मीर सैयद मुहम्मद तिर्मिजी कालपवी रहमतुल्लाह अलैह जो कालपी की खानकाह के बानी हैं। आपको सिलसिला क़ादरिया, चिश्तिया, सुहरवर्दिया के साथ सिलसिला आलिया बदीईया मदारिया का फ़ैज़ान भी हासिल है। चुनाँचे मीर गुलाम अली आजाद बिलग्रिरामी फ़रमाते हैं -

''मीर सैयद मुहम्मद तिर्मिजी कालपवी कुद्दिसा सिर्रहू ने दर्से निज़ामी की आखिरी किताबें किसी क़दर मौलाना उमर जाजमवी रव्हल्लाहु रूहहू से पढ़ी और अक्सर शेख जमाल कुड़वी कुद्दिसा सिर्रहू के हलकए दर्स में शामिल रहे और फ़ज़ीलतें सौरी में बुलन्द मरतबा हासिल किया और फ़ातहए फ़राग हजरत जमाले औलिया से पाया और आप ही से तरीक़ए आलिया चिश्तिया में बैअ्त हुए और सिलसिलए क़ादरिया व सोहरवर्दिया और सिलसिलए मदारिया में इज़ाज़त हासिल किया।''

(माअ्सरूल किराम 81)

मौलाना गुलाम शब्बर बरकाती बदायूनी फ़रमाते हैं कि ''हज़रत मीर सैयद मुहम्मद कालपवी कुद्दिसा सिर्रहू ने हज़रत जमाले औलिया कुड़वी कुद्दिया सिर्रहू से तरीक़ए चिश्तिया में बैअ्त की और सलासिले क़ादरिया व सोहरवर्दिया व मदारिया में इज़ाज़त पाई।'' (मदायह हुज़ूरे नूर मतबूआ 1334 हि., सफ़हा 28/ आइनाए कालपी सफ़हा 20)

ईमामे सिलसिलाए बरक़ातिया

हज़रत सैयद शाह बरकतुल्लाह मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह

मुसन्निफ़े ''तज़किरा-ए-मशाईखे क़ादरिया'', सुल्तानुल आशिक़ीन, हज़रत सैयद शाह बरकतुल्लाह मारहरवी कुदस के मुताल्लिक फ़रमाते हैं -

''हुज़ूर शाह बरकत उल्लाह मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहू जिनकी ज़ाते गिरामी और नामे नामी की तरफ़ सिलसिलए बरकातिया मन्सूब है मारहरा मुतहहरा को

रूहानियत की आमाजगाह और तरीक़त व तसव्वुफ़ की दर्सगाह बनाने वाली आपकी ही ज़ाते बाबरकत है। आपने हज़रते सैयद शाह उवैस कुद्दिसा सिर्रहू से हासिल फ़रमाया और वालिद माजिद ने जुमला सलासिल की इज़ाज़त व ख़िलाफ़त मुरहमत फ़रमाकर सलासिले ख़म्सा क़ादरिया, चिश्तिया, नक्शबन्दिया, सोहरवर्दिया, मदारिया में बैअ्त लेने की भी इज़ाज़त मरहमत फ़रमाई।''

(तज़क्रिरा मशाइखे क़ादरिया बरकातिया रिज़विया, सफ़हा 333)

हज़रत साहिबुल बरकात को हज़रत शाह फ़ज़्लुल्लाह कालपवी से सिलसिलाए मदारिया की इज़ाज़त

हज़रत शाह बकत उल्लाह मारहरवी रहमतुल्लाहिल क़वी ने जब सैयदना शाह फ़ज़्लुल्लाह कालपवी रज़ियल्लाहु अन्हु के इल्मो हिकमत व सुलूक व मारफ़त का शोहरा सुना तो क़ालपी शरीफ़ जाने का रख्ते सफ़र बांधा। नूरूल आरिफ़ीन हज़रत सैयद शाह फ़ज़्लुललाह कुद्दिसा सिर्रहू की बारगाहे आली वक़ार में पहुँचे। हज़रत की निगाह आप पर पड़ी आगे बढ़कर अपने सीने से लगाया और इरशाद फ़रमाया, दरिया ब दरिचा पेवस्त दरिया ब दरिचा पेवस्त दरिया ब दरिया पेवस्त .... और चलते वक़्त इस तरह इरशाद फ़रमाया - ''ऐ शाह बरकतुल्लाह ! आपकी ज़ात जुमला उमूरे सूरी व मानवी से मामूर है और आपका सुलूक इन्तिहा को पहुँचा हुआ है, आप तशरीफ़ ले जाइये और अपने घर ही क़याम फ़रमाइये, मज़ीद तालीम व तअल्लुम की आपको हाजत नहीं।'' फ़िर एक दो मुक़द्दमात और बहुत ख़ास चीजें जो इस राह के मुअज़्ज़मात से थीं, इनायत फ़रमाकर सलासिले ख़म्सा क़ादरिया, चिश्तिया, नक्शबंदिया, सोहरवर्दिया, मदारिया की इज़ाज़त मअ सनदे ख़िलाफ़त और दूसरे आमाल व अशग़ाल इनायत फ़रमाकर दो रोज़ से ज़्यादा वहाँ रहने की इज़ाज़त नहीं दी। (मशाइखे क़ादरिया बरकातिया रिज़विया, सफ़हा 334)

हज़रत सैयद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मारेहरवी को सिलसिलाए मदारिया की इज़ाज़त

हुज़ूर सैयदना शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मारेहरवी कुद्दस की ज़ाते गिरामी मोहताजे तआरूफ़ नहीं है। आप को इज़ाज़तो ख़िलाफ़त अपने शेख़े तरीक़त हज़रत सैयद शाह आले रसूल मारहरवी (कुद्दस) से थी। इरशादो सुलूक की तकमील के बाद शेख़े क़ामिल ने जो सनदे ख़िलाफ़त आप का बख़्शी वो ये है -

''अल्लाह बस है और उसके सिवा कोई नहीं। अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरबान रहमत वाला है।

हज़रत जनाब सैयद आले रसूल अहमदी फ़रमाते हैं कि नूरे निगाह सुरूरे क़ल्ब व सीना मेरी आँखों की ठंडक और मेरे दिल के क़रार सैयद अबुल हुसैन अहमद नूरी मियां साहब तुव्वेला उमरूह व ज़ैद कुदरूह, को पांचो सलासिला यानी क़ादरिया, चिश्चितया, नक़्शबन्दिया, सोहरवर्दिया और मदारिया क़दीमा व जदीदा और सिलसिलए क़ादरिया रज़्ज़ाक़िया और अलविया मनामिया की इज़ाज़त व ख़िलाफ़त और ख़ानदाने बरकातिया के मामूला तमाम अज़कार व अशग़ाल और औराद व वज़ायफ़ की इज़ाज़त बिऐनिही उसी तरह दे रहा हूँ जिस तरह मेरे चचा मुर्शीदी व मौलाई हज़रत सैयद शाह अबुल फ़ज्ल आले अहमद अच्छे मियां साहब अनारूल्लाह बुरहानहू से और मेरे वालिद माजिद हज़रत सैयद आले बरकात उर्फ़ सुथरे मियां नव्वरल्लाहु मरकदहू से मुझे पहुँची है और मौसूफ़ को मैं अपना ख़लीफ़ा मजाज़ व माज़ून क़रार देता हूँ।''

(तज़किरा मशाइख़े क़ादरिया बरक़ातिया, सफ़हा 381, तज़किरए नूरी, सफ़हा 13)

हुज़ूर सैयदना शाह अहुल हुसैन अहमद नूरी मियाँ कुद्दिसा सिर्रहू को उनके आबा-व-अज़दाद से जो फ़ुयूज़ व बरकात हासिल हुए हैं वह अपनी जगह ख़ास है लेकिन बारगाहे कुत्बुल मदार सैयदना बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु अन्हु से आप पर बड़ी मख़सूस करमफ़रमाईयाँ हुई है। मरातिब व मनासिब की बशारतों से नवाज़ा गया है और ख़ुसूसियत के साथ ओहदए कुत्बियत से आपको सरफ़राज़ किया गया है। चुनान्चे साहिबे तज़किरा मशाइख़े बरकातिया आपकी अज़मते शान को ज़ाहिर करते हुए रक़म तराज़ है कि, आप अक़ताबे सबआ में से एक कुत्ब हैं। जिनकी बशारत हज़रत बूअली शाह क़लन्दर पानीपती और हज़रत शाह बदीउद्दीन कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हमा ने दी है और यही इस सिलसिलए बशारत के ख़ातिम हैं।

(तज़किरा मशाइख़े क़ादरिया बरक़ातिया सफ़ाह 381 बहवाला तज़किरए नूरी सफ़ाह 55-56)

ग़ालिबन इसी करम नवाज़ी की वजह से हज़रत नूरी मियाँ कुद्दिसा सिर्रहू ने कुत्बुल मदार सैयदी ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु अन्हु की मुहब्बत व इनायत में डूब कर आशिक़ाने कुत्बे मदार के वज़ीफ़े के लिए ''सलाते मदारिया'' नाम की एक किताब लिखी है जिसमें हज़रत सैयद बदीउद्दीन कुत्बे मदार के असमाए हुस्ना 99 सैग़ों के साथ दर्ज है। (तज़किरा मशाइख़ 386)

हज़रत नूरी मियाँ का शजरए मदारिया

आपका शजरए मदारिया बदीइया जिसको आपने अपनी किताब अन्नूरू वलाबहा में ख़ुद रक़म फ़रमाया है, इस तरह है -

अम्माबाद फ़यक़ूलुल फ़क़ीर अबुल हुसैन नूरी अफ़ी अन्हु, अजाज़नी बिस्सिलसिलतिल बदीइयतिल मदारिया जद्दी व मुरशिदी अलसैयद आले रसूलिल अहमदी कुद्दिसा सिर्रहू अनिल हज़रत अच्छे मियाँ साहब अनिस्सैयदा हम्ज़ा अनस्सैयद आले मुहम्मद साहब अन साहिबिल बरकात अलमारहरवी अलिस्सैयद अहमद अन जद्देहि अस्सैयद मुहम्मद साहब अन जमालिल औलिया अनिश्शैख़ अस्सैयद जलाल अब्दिल क़ादिर अनिस्सैयद मुबारक अनिस्सैयद अजमल अनिल आरिफ़िल अकमलिल कामिलिल मुकम्मल अलमौलाना बदीउल हक़ वलमिल्लत वद्दीन कुत्बिलमदारू मकनपुरी रहमतुल्लाह तआला अलैह अन अब्दिल्लाह अश्शामी अनिश्शैख़ अब्दुल अव्वल अनिश्शैख़ अमीनउद्दीन अनन अमीरूल मोअमेनीन मुर्तज़ा अली कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम अन सैयदुल मुरसलीन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। (अन्नूर वलबहा फ़ी असानीदिल हदीस व सलासिलिल औलिया सफ़ाह 72 शैख़ सैयद अबुल हुसैन अहमद नूरी मारहरवी)

सैयदुल उलमा आले मुस्तफ़ा अलैहिर्रहमा और सिलसिलाए मदारिया

जनाब अबुल हसनैन आले मुस्तफ़ा सैयद मियाँ बरकाती नूरी अलैहिर्रहमह जो सैयदुल उलमा के लक़ब से मशहूर हैं उलमाए अहले सुन्नत और सालिकाने रहे मारफ़त में एक मख़सूस मुक़ाम रखते हैं। मारहरा मुतहहरा और ख़ानदाने बरकातिया के चश्म व चराग़ होने के नाते उस दौर में जमाअते अहले सुन्नत में आपको बड़ी पिज़ीराई हासिल थीं। सिलसिलए आलिया बदीइया मदारिया के इज़राए फ़ैज़ से मुतअल्लिक़ कुछ बातें ग़लत तौर से आपकी ज़ात से मन्सूब कर दी गई। जिनकी सफ़ाई और वज़ाहत के लिए 9 दिसम्बर 1941 ई. को एक तवील मकतूब आल इण्डिया सुन्नी जमीअतुल उलमा के लेटर पेड पर ख़ानक़ाहे आलिया मदारिया मकनपुर शरीफ़ के एक बुज़ुर्ग के नाम आपने इरसाल फ़रमाया जो आज भी अपनी असली हालत में साहिबे सज्जादा अलहाज सैयद जुलफ़िक़ार अली क़मर मदारी मद्दाजिल्लाहुल आली के पास मौजूद है और जिसकी फ़ोटो कॉपी हज़रत मुफ़्ती इस्राफ़िल मदारी के पास मौजूद है।

हुज़ूर सैयदुल उलमा अलैहिर्रहमा के मक़तूब का इक्तिबास, आप फ़रमाते हैं, ''आप तो अच्छी तरह जानते हैं ख़ानकाहे आलिया क़ादरिया बरक़ातिया मारहरा मुतहहरा तीन सदियों से नामूसे औलियाए किराम अलैहिमुर्रहमतु वर्रिज़वान के लिए अपनी सारी कूव्वतें और ताक़तें बाज़ी पर लगाए हुए हैं तो फ़िर इस ख़ानकाह शरीफ़ के एक हक़ीर ख़ादिम की हैसियत से क्योंकर मुतसव्विर था कि वह अपने एक मुर्शिदे इज़ाज़त ज़ाते बरगुज़ीदा सिफ़ात हुज़ूर पूरनूर सैयदना कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू अन्ना की बारगाहे फ़ज़ीलत पनाह में ज़बाने गुस्ताख़ाना दराज़ करता, ऐ सुब्हानल्लाह ! क्या मैं इतना अहमक़ था कि जिस शाख़ पर बैठा था उसी पर कुल्हाड़ी चलाता। सिलसिलए आलिया मदारिया के इज्राए फ़ैज़ का इंकार क्या ख़ुद मेरे जद्दे अकरम सैयद शाह बरकत उल्लाह कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ की मआज़ अल्लाह तजहील व तहमीक़ के मुतरादिफ़ न होता।''

(मक़तूब सैयदुल उलमा, सफ़हा 3)

''मेरे जद्दे आला हज़रत साहिबुल बरकात सैयद शाह बरकतुल्लाहिल बिलग्रामी वल मारहरवी अलैहिर्रहमह कालपी शरीफ़ से सिलसिलए आलिया मदारिया लाए और फ़क़ीर को जिस तरह सलासिले आलियात चिश्तिया व सोहरवर्दिया व नक्शबन्दिया की इज़ाज़त व खिलाफ़त है इस सिलसिलए मुबारका की भी इज़ाज़त व ख़िलाफ़त है।'' (मक़तूब सफ़हा 2)

आप बफ़ज़्लिही तआला अहले इल्म हैं अच्छी तरह जानते हैं कि ऐसे कलाम अजिल्ला बुर्ज़ुमाने एज़ाम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन के कहे गये, मिसालन अर्ज़ करता हूँ मुहद्दिसीन ने इत्तिफ़ाक किया कि सैयदना अमीरूल मोअमेनीन मौलाए कायनात सैयदना मुर्तज़ा अली कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम से हुज़ूर अहसनुत्तबिईन सैयदना इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु को लिक़ा व सोहबत हासिल न थी। दूसरे गिरोह ने इसको रद्द किया और सैयदना इमाम को हुज़ूर अमीरूल मोअ्मेनीन से ख़िरक़ए खिलाफ़त साबित किया। सिलसिलए नक्शबन्दिया सिद्दीक़िया के सिलसिले में फ़िर मुहद्दिसीन ने कलाम किया कि सैयदना इमाम क़ासिम बिन मुहम्मद अमीरूल मोअ्मेनीन सैयदना सिद्दीक़ अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सैयदना सलमान फ़ारसी रजियल्लाहु अन्हु से बैअ्त व ख़िलाफ़त न थी कि आगे चलकर हज़रत सैयदना बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु अन्हु के दरमियान सौ बरस का ज़माना साबित करते हुए बाहमी लिक़ा व सोहबत के इंकार किया इसी तरह हज़रत

सैयदना अली अहमद मखदूम साबिर पाक और हज़रत सैयदना कुत्बे जमाल हांसवी का बाहमी मुक़ाबला भी रिवायतों में मज़कूर है। इरशाद फ़रमाया जाए क्या बरसबीले तज़किरा इन रिवायतों में से किसी के बयान करने वाला इन सलासिले आलिया का मुनकिर क़रार दिया जायेगा ? क्या यह सलासिले आलिया मआज़ल्लाह सोख़्त व महरूमुल फ़ैज़ हो गये हैं हाशा व कल्ला हरगिज़ नहीं तो फ़िर इंसाफ़ फ़रमाइये कि फ़क़ीर के इस इक़रार के बावजूद कि मेरे ख़ानदाने बावक़ार के पास सिलसिलए मदारिया की इज़ाज़त मौजूद है जो कालपी शरीफ़ से आई है और ख़ुद फ़क़ीर को इज़ाज़त है मुझ पर सिलसिलए आलिया के सिरे से सोख़्त होने के अक़ीदे का इलज़ाम बोहतान है या नहीं ? लिहाज़ा फ़क़ीर ख़ाकेपाए मुर्शीददाने एज़ाम हुज़ूर पुरनूर सैयदना बदीउद्दीन मिल्लत वशशरीअत वत्तरीक़त वल इस्लाम बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना वैसा ही मुर्शीदे इजाज़त मुफ़ीज़ व मुफ़ीद यकीन करता है जैसा कि ख़्वाजाए ख़्वाजगान सुलतानुल हिन्द वली उल हिन्द अताउर्ररसूल सैयदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ चिश्ती अजमेरी व हज़रत ख़्वाजा बहाउल मिल्लत वद्दीन सैयदना मौलाए नक़्शबन्द व सैयदना शैख़ुश्शयूख़ शहाबुल मिल्लत वद्दीन उमर सोहरवर्दी रिज़वानुल्लाह अज्मईन को।

(मक़तूब सैयदुल उलमा सफ़ाह 3-4)

मारहरा मुतहहरा में बफ़ज़्लिही तआला मदारी गद्दी सदियों से क़ायम है और फ़क़ीर के बुर्ज़ुग़ाने किराम हमेशा से उसकी ख़िदमत करते चले आए। मेरे जद्दे करीम हुज़ूर शम्सुल मिल्लत वद्दीन सैयदना आले अहमद अच्छे मियाँ कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ ने अपने अहदे मुबारक में सरकार मदारूल आलमीन के नामे नामी से मन्सूब मेला क़ायम कराया जो 9 जमादिल ऊला को बराबर होता है और उस दिन जब गद्दीनशीन अपना जुलूस लेकर दरगाहे बरकातिया पर हाज़िरी देते हैं तो वक़्त का साहिबे सज्जादा दरगाह शरीफ़ के दरवाज़े पर ख़ैरमक़्दम करता है और उनको फ़ातहे के लिए ले जाता है फ़िर हवेली सज्जादा नशीनी पर आते हैं और फ़ातहा का तबर्रुक़ सज्जादा बरकातिया को देते हैं और साहिबे सज्जादाए बरकातिया गद्दीनशीन को दरगाहे बरक़ातिया की तरफ़ से हदया के तौर पर एक रूमाल और सवा रूपया नज़र देते हैं, यह नज़र मेरी दरगाह कमेटी के बजट में सालाना पास होती है और वक़्फ़ बोर्ड के नविश्ते में आती है। मौज़ूदा गद्दीनशीन मियाँ दीदार अली शाह साहब फ़क़ीर के बड़े अच्छे दोस्त हैं और बाहमी रूहानी रिश्ते उनके और

फ़क़ीर के दरमियान भी क़ायम है। दरगाह शरीफ़ के मकतब की मन्ज़ूर शुदा छुट्टियों में मेला शाह मदार अलैहिर्रहमह की छुट्टी भी है। इस रोज असातज़ए मकतब बच्चों को मेला शाह मदार की तहनियत खुशनुमा कागज़ों पर देते हैं और बच्चे अपने उस्तादों की खिदमत जरे नक़्द से करते हैं, यह रक़म ''मदारी'' कहलाती है। फ़क़ीर के खानदान में मखतूबा लड़कियों को उनके होने वाले शौहरों के घरों से 9 जमादिल ऊला को जोड़ा और मिठाई और नक़्द व ज़ेवर जाता है। हुज़ूर ज़िन्दा शाह मदार अलैहिर्रहमह के उर्से विसाल की इस तरह याद मनाई जाती है। यह सारी चीज़ें सदियों से मुझसे और मेरे सिलसिले से वाबस्ता है और फ़िर मुझ पर सिलसिलए आलिया के सोख्त समझने का इलज़ाम ? मआज़ल्लाह मआज़ल्लाह ॥ (मक्तूब सैयदुल उलमा सफ़ाह 5) मुझे बड़ा अफ़सोस है कि बात पहुँचाने वालों ने मेरा यह सरीह बयान कि, ''खुद मझको सिलसिलए आलिया मदारिया में इज़ाज़त व खिलाफ़त है'' आप हज़रात तक क्यों नहीं पहुँचाया, क्या किसी सोख्त सिलसिले में भी इज़ाज़त व खिलाफ़त होती है ? तौबा मआज़ल्लाह। (मक़्तूब सफ़ाह 6)

हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह और सिलसिला मदारिया

फ़ाज़िल बरेलवी की ज़ात दौरे हाज़िरा के उलमा के लिए मोहताजे तअर्रुफ़ नहीं है। वह सिलसिलए रजविया के इमाम और बानी है। उन को मशाइखे तरीक़त के कम अज़ कम तेरह सिलसिलों में इज़ाज़त व खिलाफ़त हासिल थीं और उन सलासिल में दूसरों को भी इज़ाज़त व खिलाफ़त देने के माज़ून व मज़ाज़ थे जैसा कि उनकी किताब अलइज़ाज़तुल मतीना की इबारत से ज़ाहिर है, उनको जिन सलासिले तरीकत में इज़ाज़त व खिलाफ़त हासिल थी उसकी तफ़सील इस तरह है - (1) क़ादरिया बरकातिया जदीदा (2) क़ादरिया आबाइया क़दीमा (3) क़ादरिया अहदाया (4) क़ादरिया रज़्ज़ाक़िया (5) कादरिया मन्सूरिया (6) चिश्तिया निज़ामिया क़दीमा (7) चिश्तिया महबूबिया जदीदा (8) सोहरवर्दिया वाहिदिया (9) सोहरवर्दिया फुज़ैलिया (10) नक्शबन्दिया उलाइया सिद्दीक़िया (11) नक्शबन्दिया उलाइया अलविया (12) बदीइया (13) अलविया मनामिया वग़ैरह-वग़ैरह।

(मशाइखे क़ादरिया रज़विया, सफ़हा 399)

मुजद्दीद हज़रत अहमद रज़ा खान फ़ाज़िले बरेलवी ने बदीइया मदारिया सिलसिले के लिए अपनी मुहब्बत का इज़हार फ़रमाते हुए अल एज़ाज़तुल मतीना

में रक़म फ़रमाया है कि - ''मैंने सिलसिलाए बदीइया मदारिया को आं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सबसे क़रीब पाया।'' (ऐज़ाज़तुल मतीना)

शजराए मदारिया हज़रत मुजद्दीद अहमद रज़ा खाँ रहमतुल्लाह अलैह

हजरत सैयदना रहमतल्लिल आलमीन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत अमीरुल मोअमेनीन अली इब्ने अबी तालिब कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम
हज़रत शेख़ इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत शेख़ अमीनुद्दीन शामी रजियल्लाहु अन्हु
हज़रत अब्दुल अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत शेख अब्दुल्लाह शामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार रजियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद शाह अजमल बहराईची रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद मुबारक रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत जलाल अब्दुल कादिर रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ कुतुबुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ क़यामुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ सैयद जमालुल औलिया रजियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद मुहम्मद कालपवी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद अहमद कालपवी रजियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद शाह फ़ज़लुल्लाह कालपवी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद शाह बरक़तुल्लाह मारहरवी रजियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद आले मुहम्मद मारहरवी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ हमज़ा मारहरवी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद अच्छे मियाँ मारहरवी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद आले रसूल मारहरवी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद अबुल हुसैन नूरी मारहरवी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत अहमद रज़ा खाँ बरेलवी रज़ियल्लाहु अन्हु

मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द पर सिलसिलाए मदारिया का फ़ैज़ान

मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ नूरी बरेलवी जो मुफ़्ती आज़मे हिन्द के लक़ब से मशहूर हैं, सिलसिलए रज़विया में उनका मुक़ाम भी बड़ा ऊँचा है। फ़ाज़िले बरेलवी के शहज़ादे होने की वजह से वह इस सिलसिले में अपने दौर में मरकज़े अक़ीदत बने रहे। हिन्द व पाक के हज़ारों लोग उनके दामन से वाबस्ता है। शेखे तरीक़त हज़रत सैयद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मारहरवी रहमतुल्लाह से आपको बैअ़तो ख़िलाफ़त हासिल है। छः साल की उम्र मुबारक में आपके शेख़े तरीक़त ने बैअ़त करने के बाद जुमला सलासिल मसलन क़ादरिया चिश्तिया नक्शबन्दिया सोहरवर्दिया मदारिया वग़ैरह की इजाज़त से भी नवाज़ा। अपने शेख़े तरीक़त के अलावा वालिद माजिद मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िल बरेलवी से भी ख़िलाफ़त व इजाज़त हासिल की। (तज़किए मशाइख़े क़ादरिया बरकातिया रज़विया, सफ़हा 507, मुसद्दक़ा मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब अज़हरी बरेलवी)

सिलसिलाए मुज़द्दिदीया नक़्शबन्दिया पर फ़ैज़ाने सिलसिला मदारिया

सैयदना इमामे रब्बानी मुजद्दीद अल्फ़सानी हजरत शेख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैह की ज़ाते गिरामी मोहताजे तआरुफ़ नहीं। आप के इल्मों फ़ज़ाईल **से आलम** का ग़ोशा-ग़ोशा रोशन है। बुज़ुर्गानि दीन के जिन सलासिल में **आप को इजाज़तो** ख़िलाफ़त हासिल थीं उनमें सिलसिला आलिया मदारिया भी ख़ुसूसियत **से मज़कूर** है। चुनांचे ख़जीनतुल असफ़िया में दर्ज है कि -

''**हज़रत शेख़** मुजद्दीद अल्फ़ सानी रहमतुल्लाह को सिलसिला रिफ़ाईया व मदारिया कुबरविया वग़ैरह में तलक़ीन फ़रमाने की इज़ाज़तो ख़िलाफ़त आपके वालिदे बुज़ुर्ग़वार हज़रत शेख़ अब्दुल अहद कुद्दस से है।''

(ख़ज़ीनतुल असफ़िया, जिल्द 1, सफ़हा 609/611)

हज़रत गुलाम अली नक्शबंदी मुजद्दी देहलवी अलैहिर्रहमा हुज़ूर मुजद्दीद अल्फ़सानी इमामे रब्बानी के अहवाले बैअ़त और हुसूले निस्बत के बारे में फ़रमाते हैं कि ''आप पहले ख़ानदाने आलीशान चिश्तिया में अपने वालिदे बुज़ुर्ग़वार से बैअ़त थे और इस ख़ानदान से आपको इज़ाज़तो ख़िलाफ़त हासिल थीं बल्कि वालिदे

बुज़ुर्ग़वार से दूसरे मसलन सुहरवर्दिया कुबरविया क़ादरिया शत्तारीया और सिलसिला मदारिया की भी इज़ाज़तो ख़िलाफ़त आपको हूसुल थीं।''

(दुर्रुलमुआरिफ़, मलफ़ूज़ा हज़रत गुलाम अली नक्शबंदी अलैहिर्रहमा, सफ़हा 123, मौअल्लिफ़ शाह रऊफ़ अहमद मुजद्दी मताबेअ् वक़्फ़ुल इख़्लास इस्तांबुल तुर्की)

हज़रत इमामे रब्बानी मुजद्दीद अल्फ़ सानी शेख़ अहमद सरहिन्दी अलैहिर्रहमा का शजरा-ए-मदारिया इस तरह है -

हज़रत सैयदना रहमतल्लिल आलमीन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत सैय्दना अलीयुल मुर्तज़ा कर्मल्लाहे वज्हुल करीम
हज़रत सैयदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु (बहरे दो वास्ता)
हज़रत अब्दुल्लाह अलमबरदार रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत ऐनुद्दीन शामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ तैफ़ूर शामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ सैयदना बदीउद्दीन ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद अजमल बहराईची रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद बुढ़्ढन बहराईची रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद दरवेश मुहम्मद बिन क़ासिम अवधी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अब्दुल कुद्दुस गंगोही रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ रूकनुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अब्दुल अहद रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी रज़ियल्लाहु अन्हु

(नज़किरतुल मुत्तक़ीन, सफ़हा 174) (मक्तूबात इमाम रब्बानी, दफ़्तर 1, जवाहिर मुजद्दीया हिस्सा 2, सफ़हा 60/ मताबेअ् अलजन्नतुल इल्मीया चंचलगोड़ा, हैदराबाद)

हक़ मोबाइल
नूर महल रोड़, पुरानी ईदगाह के सामने, निम्बाहेड़ा (राज.)
Mob. : 9950486643

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह का शजरा-ए-मदारिया

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत अमीरूल मोअमेनीन अली इब्ने अबी तालिब कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम
हज़रत शेख़ इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख हबीब अजमी रजियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ सैयदना बायजीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ सैयदना बदीउद्दीन ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख हिसामुद्दीन सलामती जौनपुरी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ हिदायतुल्लाह सरमस्त रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ हाजी हुज़ूर रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ हाजी ज़हूर रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ वजीहुद्दीन गुजराती रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ सैयद सिबग़तुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ मुहम्मद शनावरी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ अहमद कशाशी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ इब्राहिम रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ अबू ताहिर मदनी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ शाह वलीउल्लाह मुहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह

(मक़ालाते तरीक़त, सफ़हा 188/ मौलाना अब्दुल क़य्युम मज़ाहिरी) (मक़ालाते तरीक़त माअरूफ़ बिही फ़ज़ाइले अज़ीजीया सफ़हा 187/मौलाना अब्दुर्रहीम सा. ज़िया)

हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रहमतुल्लाह अलैह का शजरा-ए-मदारिया

आपने ख़ुद मौलाना सैयद अमीर हसन जाफ़रह अलमदारी रहमतुल्लाह को इस तरह नक़्ल फ़रमाया -

हज़रत सैयदना व नबिय्यना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत सैयदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत अब्दुल्लाह अलमबरदार रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत ऐनुद्दीन शामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत यमीनुद्दीन शामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ तैफ़ूर शामी रजियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ सैयदना बदीउद्दीन ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद अजमल बहराईची रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद बुढ्ढन बहराईची रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद दरवेश मुहम्मद बिन क़ासिम अवधी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अब्दुल क़ुद्दुस गंगोही रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ रूकनुद्दीन रजियल्लाहु अन्हु
हज़रत अब्दुल अहद रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत मुजद्दीद अल्फ़ सानी इमाम रब्बानी अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद मासूम रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत हुज्जतुल्लाह मुहम्मद नक्शबंद सानी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत क़िब्ला ए आलम ख़्वाजा मुहम्मद ज़ुबैर रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत ख़्वाजा ज़ियाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शाह मुहम्मद आफ़ाक़ रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रहमतुल्लाह अलैह

(तज़्किरतुल मुत्तक़ीन, सफ़हा 176)

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह (शेख़ उलमाए देवबंद)

हज़रत सैयदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत सैयदना अमीरूल मोअमेनीन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अब्दुल्लाह अलमबरदार रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना यमीनुद्दीन शामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत ऐनुद्दीन शामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ तैफ़ूर शामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद बदीउद्दीन क़ुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अजमल बहराईची रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ बुढ्ढन बहराईची रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ दर्वेश मुहम्मद बिन क़ासिम अवधी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ निज़ामुद्दीन अल उमीह थानेसरी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत अबू सईद नोमानी गंगोही रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शाह मुहीबुल्लाह अल्लाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत मुहम्मद मक्की जाफ़री रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शाह अद्दुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शाह अब्दुल हादी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शाह अब्दुल बारी सिद्दीक़ी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ुल मशायख़ हाजी शाह अब्दुर्रहीम विलायती रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत अक़दस मियाँ जी नूर मुहम्मद झंझानवी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह

(तज़्करतुल मुत्तक़ीन, सफ़हा 170)

हुज़ूर सैयदना बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर रज़ियल्लाहु अन्हु का शजरा-ए-मदारिया

हज़रत सैयदी व मौलाई मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हुलकरीम
हज़रत इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना हबीब आजमी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना बदीउद्दीन अहमद ज़िंदा शाह क़ुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना जानेमन जन्नती रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना सिद्धन सरमस्त (सुलजन सरमस्त) रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद सादिक़ बन्दगी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत ताज बरहना मदारी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत ~~फ़रीदुद्दीन~~ मसऊद गंज शकर रज़ियल्लाहु अन्हु
फरीदुद्दीन

(शजरतुर्रफ़ाया)

ये महज़ चंद तरीक़त के बुज़ुर्गों का ज़िक्र है। अगर सूलूको तरीक़त की दीगर ख़ानक़ाहों से मुनसलिक बुज़ुर्गों की किताबें ज़िन्दगी का मुताअला फ़रमाएँ तो बिलवास्ता उन बुज़ुर्गों के सिलसिले में भी हज़रत क़ुत्बुल मदार की निस्बत ज़रूर मिलेगी।

किश्वरे हिन्द में दारून्नूर मकनपुर सदियों से अहले अक़ीदत और अहले सुन्नत के दिलों का मर्कज़े इश्क़ शाहों गदा के लिए क़िब्लाए आरज़ू और काबा-ए-मक़सूद रहा है। आज भी ये ख़ानक़ाह लाखों अहले दिल का मर्जाए मक़सूद है।

सलातीने शर्क़ीया और सलातीने मुग़लिया से लेकर आज तक वक़्त के बड़े फ़रमा रवांओं ने भी इस दयारे पुर अनवार की ख़ाक को आँखों का सूरमा बनाया और यहाँ के ज़र्रे-ज़र्रे से अपनी वालेहाना अक़ीदत का सर रिश्ता जोड़कर अपनी वफ़ाओं का सुबूत फ़राहम किया है।

हज़रत बादशाह औरंगज़ेब आलमगीर हुज्जाती रहमतुल्लाह अलैह की दरबारे कुत्बुल मदार में हाज़री

हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रहमतुल्लाह अलैह जब बारगाहे कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु में हाज़िर हुए तो दरिया-ए-ईसन पर पहुँच कर जो कि मकनपुर शरीफ़ के किनारे पर जारी है, प्यादा पा हो गए। मुग़लिया सिपाहसालार और अवाम ने सबब दरियाफ़्त किया तो आपने बरसाख़्ता फ़रमाया -

''बया कि उज कमालात रा ज़हूर ईं जास्त,
बया कि मर जए हर क़ैसर ओ क़सूर जास्त,
जनाबे अक़दस शहंशाह मदार जहाँ,
बया-ए-दीदाह बया ऊ बिबिन कि नूर ईं जास्त।''

तर्जुमा : हर औज हर कमाल का मज़हर है इस जगह, उम्मीदगाहे शाहो तवन्गर है इस जगह, आँखों के बल जवारे मदारे जहाँ में आओ, देखो कि नूरे ख़ालिक़ अकबर है इस जगह।

और सहने दरगाह शरीफ़ में पहुँचकर कोहनियों के बल चलकर मज़ारे मुक़द्दसा शहंशाह-ए-मदार की बारगाह में नज़रे अक़ीदत और क़दमबोसी पेश की।

हज़रत आलमगीर ने हाज़िरे आस्ताना होकर रोज़ा शरीफ़ के चारों तरफ़ संगे मरमर की जालियाँ नसब करवाई और खिड़कीनुमा दरवाजा लगवाया। ताकि कोई शहंशाह और कोई गदा आपकी बारगाह में बग़ैर सरख़म किए हाज़िर न हो सके। मस्जिद, धमाल खाना और बाबे आलमगीर की तामीर करवाई।

इसका सबब ये है कि ये उस ताजदार का आस्ताना है जिसके तसर्रुफ़ात व इख़्तियारात हयाते ज़ाहिरी और बातिनी में यक़सा है।

हज़रत वाजिद अली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं -

''हज़रत बदीउद्दीन कुत्बुल मदार के कमालाता मुल्के हिन्दुस्तान में शोहरते आम्मा रखते हैं और आप के तसर्रुफ़ात हयात व ममात में बराबर हैं।''

(मतलउल उलूम व मजमअल फ़ुनून)

शेख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती फ़रमाते हैं -

''शेख़ बदीउद्दीन शाह मदार के तसर्रुफ़ात हयात व ममात में बराबर हैं।''

(मिर्रातुल असरार)

इमामे मलंग, मलंगे आज़म

हज़रत इमामे मलंग मलंगे आज़म सैयदना मो.जमालुद्दीन जानेमन जन्नती रज़ियल्लाहु अन्हु की सैयदना शेख़ सादी शिराज़ी रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाकात

एक मर्तबा जानेमन जन्नती रज़ियल्लाहु अन्हु शेर पर सवार हाथ में साँप का ताज़ियाना लिए हुए रोदबार के इलाके में सैर फ़रमा रहे थे कि हज़रत शेख़ सादी शिराज़ी रज़ियल्लाहु अन्हु से इत्तफ़ाक़न मुलाकात हो गई। हज़रत जानेमन जन्नती की ये शान देखकर शेख़ सादी शिराज़ी हैबत के मारे काँपने लगे। हुज़ूर जमालुद्दीन जानेमन जन्नती ने तबस्सुम फ़रमाया और शेख़ सादी को तसल्ली व तश्फ़ी दी।

इरशाद फ़रमाया - ''ऐ सादी ! इस दरिन्दा जानवर से जो मेरी सवारी में है, तुझ पर हैबत और ताज्जुब तारी है कि इंसान के क़ाबू में कैसे है ? ये कोई ताज्जुब की बात नहीं है। जो बन्दा ख़ुलूस के साथ ख़ुदा की रज़ा व ख़ुशनुदी हासिल कर लेता है तो ख़ुदा तआला की बारगाह से ये रुतबा मिल जाता है कि ये शेर क्या ? सारी मख़्लुक़ाते ख़ुदा उसकी मुतीअ व फ़रमाबरदार हो जाती है और सारी मख़्लूक़ उसकी रज़ाजोई करती है।''

शेख़ सादी इस वाक़ेआ को इस तरह नज़्म फ़रमाते हैं -

''यके दिदम अज़ अरसा ए रोदबार
कि पेश आमद परपिलनो सवार
तबस्सुम कुनां दस्त बर लबे गिरफ़्त
कि सादी मदार आँ चे दीदी शगफ़्त
तो हम गरदन अज़ हुक़्म दावर मपींच
कि गरदन ना पींचद ज़े हुक़्मे जो हिंच''

(मन्क़ूल अज़ ख़ुला सातुल मदारिया)

''फैली है इनसे निकहते फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा, शादाब हर चमन है, इन्हीं की बहार से।
चिश्तिया क़ादरिया सोहरवर्दी नक़्शबंद, वाबस्ता सब हैं दामने कुत्बुल मदार से॥''

हज़रत कुत्बुल मदार...

सन् 242 हिजरी से सन् 838 हिजरी तक

हासीले मुक़ामे समदियत, वासीले मुक़ामे मेहबुबीयत, तबए ताबउल अस्र हज़रत सैयद बदीउद्दीन अहमद मदार रज़ियल्लाहु अन्हु कि विलादत 242 हि. है और वफ़ात 838 हि.। इस तरह 596 साल आपने उम्र मुबारक पाई। इस सिलसिले में मुअर्रख़ीन में इख़तलाफ़ात पाए जाते हैं, लेकिन मुसतनद और जमहूर महक्केकीन ने तहरीर फ़रमाया है कि 242 हिजरी ही सहीह है। इस की वजह ये है कि जिन मुअर्रख़ीन ने 242 हि. से इख़तलाफ़ किया है, इन्होंने ये भी तहरीर किया है कि आप सुल्तानुल आरेफ़िन बायज़ीद बुसतामी से बैतुल मुक़द्दस में बैअ्त हुए और ख़िलाफ़त हासिल की। सन् 261 हि. में हज़रत बायज़ीद बुसतामी ने विसाल फ़रमाया। इसके अलावा 242 हि. से 838 हि. तक मुआत्तबर मुअर्रख़ीन ने आपका ज़िक्र कहीं अजमाली, कहीं तफ़सीली किया है। हज़रत हुज़ैफ़ा मरअशी शामी से भी आपने शरफ़े तलम्मुज़ हासिल किया।

सन् 242 से 300 हिजरी तक कुत्बुल मदार के जल्वा अफ़रोज़ होने की शहादत

हजरत हुज़ैफ़ा मुरअशी शामी के बारे में हज़रत अब्दुल रहमान चिश्ती तेहरीर फ़रमाते हैं कि - ''आप हज़रत इब्राहिम बिन अदहम बलखी के मुरीद व ख़लीफ़ा थे, आमने खरकाए ख़िलाफ़त ख़्वाजा इब्राहिम बिन अदहम से हासिल किया और जो नेअ्मात की हज़रत ख़्वाजा इब्राहिम अदहम रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम, इमाम मुहम्मद बाकर रज़ियल्लाहु अन्हु और फुज़ैल बिन अयाज़ से हासिल कीं, सब ख़्वाजा हुज़ैफ़ा मुरअशी शामी के हवाले कर दीं और अपना जानशींन बनाया और आप सफ़र व हज़र में ख़्वाजा इब्राहिम अदहम की ख़िदमत में रहते थे। आपने अपने वक्त के तमाम मशाइख़े ईज़ाम से फ़ैज़ सोहबत हासिल किया। आपके करामात व कमालात बेशुमार है, जो अहाता तहरीर से बाहर है।''

(मिर्अतुल असरार, सफ़हा 305)

हज़रत इब्राहिम बिन अदहम की वफ़ात 187 हि. में हुई। सभी तज़किरा निगारों ने तेहरीर किया है कि हज़रत कुत्बुल मदार सैयद बदीउद्दीन को आपके वालदैन करीमैन ने बराए तालीम हुज़ैफ़ा मरअशी शामी के सुपुर्द फ़रमाया। हज़रत हुज़ैफ़ा ने अलीफ़ पढ़ाया, हज़रत बदीउद्दीन शाह मदार ने अलीफ़ की एक हफ्ते तक शरह बयान फ़रमाई। चुंकि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. हज़रत ख़्वाजा इब्राहिम बिन अदहम के मुरीद हैं और हजरत इब्राहिम बिन अदहम की वफ़ात 187 हि. में है, इसलिए ये बात करीनाए कयास है कि हुज़ैफ़ा शामी 242 हि. में मौजुद थे।

※ मौलाना हकीम फ़रीद अहमद अब्बासी मुहम्मदी नक्शबन्दी, तबीब रियासत भीकमपुर ने अपनी किताब ''मदारे आज़म'' सन् 1333 हि. में लिखी है। इसमें ''कशफ़ूल महजूब के हवाले से सफ़हा 128 पर तेहरीर फ़रमाया है :

''शेख़ अहमद बिन मसरूक , ख़ुरासान के बुज़ुर्गों में से थे, और औलिया अल्लाह का इत्तफ़ाक़ है कि वोह 'औतादुलअर्द' में से थे।''

बाअ्ज़ कलमी किताबों में तहरीर है कि अबुल अब्बास अहमद बिन मसरूक मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत शाह मदार के हैं। ''तज़किरातुल औलिया'' में भी तेहरीर है कि आपको कुत्बुल मदार की सोहबत हासिल थीं।

(कश्फ़ूल महजूब सफ़हा 221) (तज़किरातुल औलिया, हज़रत ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाह अलैह, सफ़हा 241)

''तारीख़े औलिया'' के मुसन्निफ़ ने जिल्द अव्वल के सफ़हा 267 में लिखा है कि शेख़ अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद मसरूक रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत सैयद बदीउद्दीन अहमद मदार रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना एक था। शेख़ अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद मसरूफ़ आपकी ख़िदमत में इक्कीस बरस तक रहे और आप ही की तवज्जो से कुत्बीयत पर फ़ाइज़ हुए। बग़दाद शरीफ़ में आपका मज़ार मुबारक है।

''फ़ज़ाईले एहले बैअ्त अतहार'' में ''आईना नस्ब नामा'' के हवाले से मौलाना सैयद मुख़तार अली ने सफ़हा 61 पर तेहरीर किया है - ''299 हि. में शेख़ अहमद बिन मुहम्मद मसरूफ़ की वफ़ात हुई।''

इन क़दीम और मुसतनद हवालों से ये बात साबित होती है कि हज़रत सैयद बदीउद्दीन अहमद मदार मज़कुराह बुज़ुर्गों के ज़माने में भी हयाते ज़ाहिरी के साथ मौजुद थे।

❊ ''तज़किरतुल औलिया'' में हज़रत ख़्वाज़ा फ़रीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाह अलैह ने तेहरीर फ़रमाया है कि - ''हज़रत अबू बक्र वर्राक फ़रमाते हैं कि -एक रोज़ मुहम्मद हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने मुझ से कहा कि, आज में तुझ को एक जगह ले चलुँगा। मैंने अर्ज किया - आप मुख़्तार हैं। मैं आपके हमराह हो गया। थोड़ी दुर चले होंगे कि एक बहुत बड़ा बयाबान नज़र आया और उस जंगल के दरम्यान एक सरसब्ज़ दरख़्त के नीचे एक ज़रनिगार तख़्त बिछा हुआ देखा। जहाँ एक पानी का चश्मा जारी था और एक शख़्स निहायत मुकल्लिफ़ और उम्दा लिबास पहने हुए उस तख़्त पर बैठे थे।

जब हज़रत हकीम तिर्मिजी उस के नज़दीक गए, तो वह बुज़ुर्ग तख़्त से उठ खड़े हुए और शेख को उस तख़्त पर बिठाया। थोड़ी देर ना गुज़री होगी कि हर तरफ़ से लोग आने लगे, यहाँ तक कि चालीस आदमी जमा हो गए। उन बुज़ुर्गों ने आसमान की तरफ़ इशारा किया, उसी वक़्त आसमान से ख़ाने की चीज़ें उतरने लगी। सब ने ख़ाना शुरू किया। शेख़ हकीम ने उनसे एक सवाल किया और उस मर्द ने उसका बहुत तवील जवाब दिया, जिसका मैं एक कलमा भी न समझ सका। फ़िर इज़ाज़त चाही और पलटे। उन्होंने मुझसे फ़रमाया - कि जा तू सईद हो गया, नेकबख़्त हो गया। थोड़ी ही देर में हम तिर्मिज़ आ गए। मैंने अर्ज किया - ऐ शेख़ ! वह कौन सी जगह थी ? और वह बुज़ुर्गवार कौन हैं ? हज़रत हकीम तिर्मिजी ने फ़रमाया - वह बनी ईस्राइल का जंगल था और वह मर्द कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु थे। मैं ने अर्ज किया कि हम एक पल में तिर्मिज से बनी ईस्राइल के जंगल में कैसे पहुँच गए ? तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया - ऐ अबू बक्र ! तुझे इन बातों से क्या काम है ? तू ख़ामोश रह।

(अनवारूल अज़किया, सफ़हा 419-420) (कश्फ़ूल महजूब, सफ़हा 333)

ये दोनों बुज़ुर्ग तीसरी सदी हिजरी के बहुत ही आली मर्तबा वली-ए-कामिल हैं। बहुत बड़े अकाबिर मशाईख़ में से हैं। इनकी हज़रत कुत्बुल मदार से मुलाक़ात शाहिद है, कि आप तीसरी सदी में भी जल्वा अफ़रोज़ थे।

हज़रत बदीउद्दीन मदार रजियल्लाहु अन्हु सन् 400 हिजरी में हज़रत सैयद सालार मसूद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह की विलादत (405 हि.-424 हि.)

''करामाते मसऊदिया'' जो मौलाना मुहम्मद अलीम की अरबी तसनीफ़ है, जिसका फ़ारसी तर्जुमा मौलाना मुहम्मद मसीह अवधी ने किया है, फ़िर इसका उर्दू तर्जुमा मौलाना इलाही बख़्श नक्शबंदी ने किया। ये किताब पहली बार क़ौमी कुतुबख़ाना लखनऊ से सन् 1296 हि. में शाया हुई। इस किताब में मरकुम है कि-

सैयद सिकन्दर दिवाना फ़रमाते हैं कि, ''सुल्तान मेहमुद गज़नवी की बदौलत उम्दाह-उम्दाह नफ़ीस कपड़े पहनता रहा। जब 401 हि. में सुल्तान ने सैयद सालार साहू को, जो कि मेरे चचा हैं, एक ज़बरदस्त फ़ौज के साथ कन्धार से मुज़फ्फ़र ख़ान की इमदाद के लिये अजमेर शरीफ़ भेज दिया तो उस वक़्त मुजफ्फ़र ख़ान, राय भैरू, राय सोमकृपा, राय सिंह, राय सुकन, राय महेन्द्र, राय माखन, राय जगन वग़ैरह उनतालीस (39) राजाओं के नरग़े में मेहसुर था। मैं उस वक़्त में ख़ास सुल्तान का अरदिली था और नाना-ए-मुअज़्ज़म हज़रत सैयद सालार साहू ग़ाज़ी मुझ से बहुत मुहब्बत फ़रमाते थे। मुझे उनकी जुदाई हरगिज़ ग़वारा न हुई। घर का इन्तज़ाम ज़हीर फ़रज़ाना को सुपुर्द करके और सुल्तान मेहमुद ग़ज़नवी से इज़ाज़त लेकर हज़रत सैयद साहू सालार ग़ाज़ी के साथ ठिठूर के रास्ते अजमेर पहुँचा। रास्ते में हजरत कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार से मुलाक़ात हुई। जैसे ही उनकी नज़र सैयद सालार साहू ग़ाज़ी पर पडी तो फ़ौरन कहा, ''सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी के बाप इधर आओ।'' मैं ये सुनकर मुताज़्जुब हुआ कि ज़िंदा शाह मदार क्या फ़रमा रहे हैं ? मग़र सैयद सालार साहू ग़ाज़ी को इसकी आरज़ु जरूर है। ग़रज़ कि हज़रत सैयद सालार साहू ग़ाज़ी उस मुकाम से आगे बढ़े और सब राजाओं को शिकस्त देकर क़ाफ़िरों से मुसलमानों को निज़ात दिलाई। चन्द सुबाज़ात फ़तह करके सुल्तान हुकूमत में शामिल हुए। जब ज़रा इतमिनान हुआ तो चची मुअज़्ज़मा मख़दुमा को ग़ज़नी से हिन्दुस्तान बुलवा लिया।

कुदरते ख़ुदा से सन् 405 हि. में सैयद सालार साहू ग़ाज़ी के एक फ़रज़न्द आफ़ताब की तरह रोशन हुआ और उसका नाम मसऊद्द रखा गया। मुफ़स्सिले हाल ''तवारीख़े मेहमुदी'' में दर्ज है। मेरा एतेकाद हज़रत सैयद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के साथ मज़बुत हो गया और इरादा किया कि उनके साथ चलकर फ़क़ीरी

इख़्तियार करूँ। एक दिन हज़रत सैयद सालार साहू ग़ाज़ी ने कुछ तहाइफ़ देकर मुझे हज़रत सैयद बदीउद्दीन ज़िंदा शाह मदार के पास भेजा और कहा कि, तुम आगे चलो, मैं अभी आता हूँ, मैं तो ख़ुदा से यही दुआ करता था कि बारगाहें क़ुत्बुल मदार में हुज़ूरी हो और मैं हाज़िर हुआ और उनके सामने जाकर तहाइफ़ को पैश किया और क़दम चुमे। मैंने दस्तबस्ता अर्ज किया कि हज़रत मुझे अपने सिलसिले में दाख़िल कर लिजिये। ज़िन्दा शाह मदार रजि. ने कहा, ''तुम तो उम्दाह-उम्दाह लिबास पहनते हो, ऐश व इशरत में ज़िन्दगी बसर कर रहे हो, फ़क़ीरी में ये आराम कहाँ''? मैंने सुनकर अपने सब कपडे फ़ाड़ डाले, सतर छुपाने के लिये एक तेहबन्द रख लिया और सिलसिला आलिया मदारिया में दाख़िल हुआ।

एक रोज़ बाद हज़रत सैयद सालार साहू ग़ाज़ी अपने फरज़न्द को लेकर हाजिर हुए और ज़िन्दा शाह मदार के सामने पेश किया। मसऊद कि आँख जैसे ही हज़रत सैयद बदीउद्दीन शाह मदार पर पड़ी सलाम के लिये हाथ उठाया। ज़िन्दा शाह मदार ने ख़ैरियत पुछी, आपने दाँए-बाँए गर्दन हिलाई। हज़रत सैयद सालार ग़ाज़ी ने आपको हज़रत शाह मदार के क़दमों पर डालना चाहा तो आपने ज़ोर से रोना शुरू कर दिया और मुँह आसमान की ज़ानिब बुलन्द किया। हर चन्द हज़रत सैयद सालार साहु ग़ाज़ी उनकी गर्दन फ़ैरना चाहते मगर बेसुद इनका रोना कम नहीं होता था। आख़िर हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने उठकर गोद में ले लिया। हाथ-पैरों को चुमा, पैशानी पर बोसा दिया और ये कहा कि, ''आज से तु हमेशा इसके साथ रहा कर, इस की मुशाहबेअ्त से तुझको शहादत का रुतबा मिलेगा और मैं आज सिलसिला आलिया मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से तुम्हें नवाज रहा हूँ।''

(करामाते मसऊदिया, सफ़हा 27)

एक हिन्दु मोअर्रिख आचार्य चतुर सेन ने एक किताब तहरीर की जिसका नाम ''सोमनात'' रखा और सौराष्ट्र के शहर वेरावल के मन्दिर सोमनात और साहू सालार से मुताअ्ल्लिक़ पुरा वाकेआ तफ़सील से दर्ज किया है। जिसमें बहुत दिलचस्प अन्दाज़ से सफ़हा 129 से 134 तक ''शाह मदार'' उनवान से लिखा है :

'अजमेर शरीफ़ में मदार टेकरी पर शाह मदार तशरीफ़ फ़रमा थे। साहू सालार के दो सिपाहियों ने हज़रत सैयद बदीउद्दीन शाह मदार से मुलाक़ात का शर्फ़ हासिल किया और सोमनात की फ़तह के बारे में दुआ की दरख़्वास्त की। हुज़ूर क़ुत्बुल मदार ने फ़रमाया, ''अल्लाह ज़ामिन है और मैं दुआगौ हूँ।'' इसके बाद

साहू सालार ख़ुद हाज़िर हुए और फ़तह के लिये दुआ की दरख़्वास्त की। सरकारे क़ुत्बुल मदार ने इरशाद फ़रमाया, ''अल्लाह हाकिम है और मैं दुआगौ हूँ। जाओ।'' सरकार क़ुत्बुल मदार का हुक्म पाते ही सैयदना सालार ग़ाज़ी ने सफ़र किया, आपके सभी सिपाहियों ने आपसे पुछा, आपने इरशाद फ़रमाया, ''शाह मदार ज़ामिन है और फ़तह क़रीब है।'' हज़रत साहू सालार हुज़ूर मदार पाक से इज़ाज़त लेकर मुजाहीदे इस्लाम की कुमक के लिये रवाना हुए।

हज़रत सैयदना मसऊद ग़ाज़ी का आपकी दुआ से पैदा होना और हज़रत सालार साहू और मेहमुद गजनवी का हज़रत क़ुत्बुल मदार की दुआ से सोमनात के मन्दिर पर फ़तह पाना, इस बात की वाज़ेअ् दलील है कि हज़रत 400 हि. के वक्त से 418 हि. तक हिन्दुस्तान में मौजुद थे और मुख़तलीफ़ मक़ामात पर कार तबलीग़ में मशगुल पाए गए।

सन् 400 से 500 हिज़री तक हज़रत क़ुत्बुल मदार के जल्वा अफ़रोज़ होन की शहादत

ग़ौसे आज़म हज़रत सैयदना अबू मोहीयुद्दीन शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रजियल्लाहु अन्हु

ग़ौसे आजम हज़रत सैयदना अबू मोहीयुद्दीन शेख़ अब्दुल क़ादिर ज़िलानी रजि. की विलादत के बारे में किसी ने मादाह विलादत ''आशिक़'' तहरीर किया है, तो किसी ने ''इश्क़ गोया''। आपकी तारीख़ विलादत 470 हि. या 471 हि. है। हज़रत ग़ौसे आज़म से हज़रत क़ुत्बुल मदार की दो मुलाक़ातें मोअत्तबर मोअर्रख़ीन के कलम से साबित है।

हज़रत अल्लामा मुहम्मद जानी इब्ने अहमद अलकानी क़ादरी ने ''अल कवाकेबुल दरारिया फ़ी तनवीर मुनाक़ीबुल मदारिया'' अरबी ज़बान में तहरीर फ़रमाई है। जिसका उर्दू तर्जुमा मौलाना मुहम्मद बाकिर जईसी साहब ने किया है। राकेमुल हुरूफ़ हज़रत सैयद मेहज़र अली मदारी के पास अरबी और उर्दू के दोनों नुस्ख़ें मौजूद है। ''अल कवाकेबुल दरादिया'' के उर्दू तर्जुमे के सफ़हा 9 पर तहरीर है कि हज़रत सैयद बदीउद्दीन क़ुत्बुल मदार जब बग़दाद शरीफ़ तशरीफ़ फ़रमा हुऐ तो हज़रत क़ुत्बुल मदार और हज़रत ग़ौसे आज़म क़रीबे सोहबत हुए और दरियाए मुहब्बते हक़ में गोताज़न हुए। उस वक़्त हज़रत सैयदना ग़ौसे पाक की कैफ़ियत

जलाली थी। बाअ्ज मोअर्रखीन ने तहरीर फ़रमाया है कि हजरत कुत्बुल मदार की तवज्ञो से ग़ौसे पाक का जलाल जमाल में तब्दील हो गया।

इसके अलावा हुज़ूर ग़ौस पाक ने हुज़ूर मदार पाक की ख़िदमत में दो भांजे और दो भतीजे ख़िदमते दीन और तरबियत के लिये पेश किये। भांजो के नाम इस तरह है -

(1) हज़रत सैयद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह। जिनका मजार मुक़द्दस हिल्सा, जत्ती नगर (बिहार) में मरजाअ् ख़लाइक है।

(2) सैयद अहमद बादपा रहमतुल्लाह अलैह। इनका मजारे मुक़द्दस दरगाह नाम के एक गाँव में है। जो आजमगढ़ और मऊ के दरमियान है। यु.पी. के मशहुर क़स्बों में इनका शुमार होता है।

हजरत ग़ौस पाक रजियल्लाहु अन्हु के दो भतीजों के नाम ये हैं -

(1) हजरत मीर रुकनुद्दीन हसन अरब रहमतुल्लाह अलैह

(2) हज़रत मीर शम्सुद्दीन हसन अरब रहमतुल्लाह अलैह। इनके मज़ारात मकनपुर से चार किलो मीटर दूरी पर वाक़ेअ् है।

हज़रत सैयद मुहम्मद और सैयद अहमद के वालिद का नाम मोअर्रखीन ने सैयद मेहमुद तहरीर किया है। जबकि इनकी वाल्दाह का नाम सैयदा बीबी नसीबा लिखा गया है।

हजरत (सैयद महज़र अली मदारी) राक़ेमुल हर्फ़ पहली बार जब बग़दाद मोअल्ला पहुँचा तो हुज़ूर सैयदी व सनदी आक़ाई व मौलाई सैयदी मोहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर ज़िलानी ग़ौसे समदानी रज़ियल्लाहु अन्हु की बारगाह के सेहन में जो मेहमान खाना सद्दाम हुसैन का तामीर कर्दा है, उसमें कई रोज़ कयाम किया और वहाँ के ज़िम्मेदारान से हुज़ूर ग़ौस पाक की बहन के बारे में मुआलुमात की, किसी ने कोई तशफ़ी बख़्श जवाब न दिया। इसके बाद अहमद ख़ान जो अफ़ग़ानिस्तान के रहने वाले हैं और अरबी व उर्दू दानों ज़बानें बोलने पर कुदरत रखते हैं, उन से भी मुआलुमात हासिल की, कि क्या हुज़ूर ग़ौसुल आजम दस्तगीर की कोई बहनें भी थीं ? इन्होंने भी नेस्त में जवाब दिया। इसके बाद सैयदना ग़ौसे आजम की बारग़ाह में मैंने अर्ज़ी पेश की और अपने हुज़रे में आ गया। इसी तशवीश में थे कि "मुख़ज़ने करामात" का फ़ैज़ हुआ। सामने अलमारी की तरफ़ नज़र गई, वहाँ एक किताबचा रखा हुआ था। जिस पर तहरीर था, "फ़ातेहा ग्यारहवीं शरीफ़" जिसमें हुज़ूर ग़ौस

पाक के फ़ातेहा का तरीक़ा तहरीर था, कि क़ुर्आन करीम और दुरूद पाक वग़ैरह पढ़कर ये अशआर ज़रूर पढ़ें -

"सैयदा व सुल्ताने फ़क़्रो ख़्वाजा मख़्दुमुल ग़रीब,
बादशाहों शेख़ों दुरवेशों वली मौलाना,
मीर स्वालेह फ़ातमा सानी असामी वालदैन,
बुसईद पीरे ईशां मर्दे हक़ मरदाना,
ज़ैनब ओ बीबी नसीबा ख़्वाहरान हज़रत अनद,
ई असामी पाक़ राबायद कि हर फ़रज़ाना।"

इन अशआर में सैयदना ग़ौस पाक की दो बहनों का नाम पढ़कर मसर्रत व शादमानी हासिल हुई। अक़सर लोग कहते हैं कि आपकी कोई बहन नहीं थीं, हालांकि सैयदना ग़ौसे आज़म मेहबुब सुब्हानी अब्दुल क़ादिर ज़िलानी कुद्दुस सुरहूलनुरानी के सीरत निगारों ने अपनी किताबों में कई बहनों का तज़किरा किया है।

मशहुर आलीम, मुहद्दस और साहब 'मुरक़ात' व 'नज़ुहतुल ख़ातीरूल फ़ातिर' मुल्ला अली क़ारी इरशाद फ़रमाते हैं -

"सैयदना ग़ौस आज़म की एक बहन थीं जिनका नाम आयशा था, जो साहिबे करामात ज़ोहरा व आयाते बाहेरा थीं।"

(महबुबुल अतक़िया फ़ी ज़िक्रे सुल्तानुल औलिया, सफ़हा 5)

ये किताब उर्दू ज़बान में इस्लामी इस्टीम प्रेस लाहौर से शाया हुई है। 'नुज़हतूल ख़ातीरूल फ़ातिर फ़ी तरज़ुमतुल सैयदुल शरीफ़े अब्दुल क़ादिर' का उर्दू तर्ज़ुमा है, जो मुल्ला अली क़ारी की तरफ़ मनसुब है।

अद्दुर्रूलमुनज़्ज़म में है कि, "ग़ौसे आज़म मेहबुबे सुब्हानी अब्दुल क़ादिर ज़िलानी कुद्दुस सुर्रहू की दो बहने थीं। एक का नाम बीबी ज़ैनब, एक रिवायत में है कि एक का नाम जलीसा, दूसरी का नाम रुक़य्या था।"

(अद्दुर्रूलमुनज़्ज़म फ़ी मनाक़िबे ग़ौसे आज़म अज़ अनवर अली शाह क़ादरी कलंदरी, सफ़हा 43)

दूसरी एक अहम किताब में ज़िक्र है कि, "नामे पाक ख़्वाहराने ग़ौस पाक बुद बीबी हलीमा ओ बीबी रुक़य्या" (कंज़ुलअंसाब, सफ़हा 34)

"तफ़रीहुल आशिक़ीन" में है कि, "ग़ौस आज़म की एक बहन थीं, मुसम्मात नसीबा, इनको भी ख़ुदाए तआला ने मज़हरे करामात फ़रमाया था।"

(तज़क़िरतुल आरेफ़ीन फ़ी अहवाल सैयदुस्सालेक़ीन, सफ़हा 7, अज़ अबुल हसन बिन हुसैन अलवी क़ादरी काकोरी)

खलीफाए मुफ्ती आजमे हिन्द मौलाना हिदायत रसूल कादरी के साहबजादे मौलाना मुहम्मद उमर कादरी बरकाती रिजवी अपनी किताब ''जीनतुल मिलाद'' में तहरीर फरमाते हैं, ''आपके वालिद का नाम अबुस्वालेह और वाल्दा माजेदह का इस्म गिरामी फातेमा सानी और शेख मोहतरम अबु सईद हैं। जैनब व बीबी नसीबा आपकी बहनें है।''

नसब नामा की मशहुर किताब ''मिर्रअतुनअंसाब'' जिस में हजरत सैयद बदीउद्दीन शाह मदार का शजरा हरसा ख्वाजगान तक मौजुद है। इस किताब में तहरीर है के हजरत सैयद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार ने हज का इरादा किया असनाए राह बग़दाद शरीफ़ पहुँचे। हजरत ग़ौस पाक की हमशीरा की औलाद नहीं थीं। उन्होंने आप से दुआ की इस्तदआ् की। हजरत शाह मदार की दुआ की बरकत से उनके यहाँ औलाद हुई। (मिर्रअतुनअंसाब, सफ़हा 158/अज़ज़ियाउद्दीन अहमद अलवी अमजदी अम्रोहवी, मताबेअ्त्रिपोलिया, जयपुर)

हज़रत शेख अब्दुल हक़ मोहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने ग़ौसुल वरा के सफ़हा 71 पर ग़ौस पाक की एक बहन का वाकेआ् बयान फ़रमाया है। जो इस्फ़हान में रहती थीं। (ग़ौसुलवरा सफ़हा 71, ज़ुब्दतुल आसार/ शेख अब्दुल हक मोहद्दीस देहलवी/ मुस्तबो तर्जुमा-पीर ज़ादा इकबाल अहमद फ़ारूकी, मताबेअ् जामेअ नूर, देहली)

हज़रत अल्लामा जामी ने भी ''नुफ्हातुलइन्स'' में भी आपकी इस्फ़हानी बहन का बयान किया है। हजरत ग़ौस पाक की हमशीरा के मुतअल्लिक साहिबे ''खमखाना-ए-तसव्वुफ़'' रकम तराज है कि, ''हजरत बीबी नसीबा की कोई औलाद नहीं थीं। जब कुत्बुल मदार बग़दाद तशरीफ़ ले गये, बीबी नसीबा आपकी दुआ की तालीब हुई आप की दुआ से दो लड़के पैदा हुए।''

(खमखाना-ए-तसव्वुफ़, सफ़हा 368)

मौलाना फ़सीह अकमल कादरी ''सीरते कुत्बे आलम'' में लिखते हैं -

''दूसरा वाक़ेआ् यह है कि नसीबा ने जो हज़रत ग़ौस पाक से औलाद के लिए इस्तदआ की, चुनांचे मौसुफ़ ने उनको शाह मदार पाक की तरफ़ रूजूअ् कराया और आप की दुआ की बरकत से बारी तआला ने उनको दो बेटे आला क़िरदार और सआदते आसार इनायत फ़रमाए। बड़े साहबज़ादे का नाम सैयद मुहम्मद (सैयद मुहम्मद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती) था और छोटे साहबज़ादे का नाम सैयद अहमद (सैयद अहमद बादपा) था। (सीरते कुत्बे आलम)

फारसी तर्जुमा ''सिमरातुलकुद्स'' जो मुल्क कामिल की तस्नीफ़ है, इस रिसाले के मौल्लिफ ''खुलासातुद्दारिया'' से नकल करते हैं,

''हजरत सैयद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार पाँचवी सदी हिजरी में अरब की सय्याहत फरमाते हुए बग़दाद तशरीफ़ लाए और ग़ौसुस्सक़लैन अबू मुहम्मद मुहीयुद्दीन अब्दुल कादिर जिलानी क़ुद्स से मुलाक़ी हुए, उस वक्त दोनों के दरमियान एक अजीब कैफ़ियत रुनुमा हुई। अस्सीरोंसिर्रहू अलग़रज हुज़ूर ग़ौस पाक ने कुत्बुल मदार के कमालात का मुशाहिदा फ़रमाया और अपने दोनों भांजों यानी सैयद महमुद की जोजा सैयदा बीबी नसीबा के दोनों साहबजादों को लेकर मोखजने इसरार सैयद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार की ख़िदमत में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ''ये दोनों मेरी छोटी बहन बीबी नसीबा के दिलबंद है। आंबिरादर की ज़ाते बाबरकत से फ़ाइज़ुलमिराम होना चाहते हैं।''

एक और कौल के मुताबिक हुज़ूर ग़ौस पाक ने बीबी नसीबा के लिए खुद ही कुत्बुल मदार से दुआ के लिए दर्ख्वास्त की थी और फरमाया कि, ''ऐ बिरादर ! रब्बुल इज़्ज़त की दरगाह में मेरी बहन के लिए दस्ते दुआ बुलंद फ़रमाऐं।''

''सिमरातुलकुद्स'' में एक तीसरी रिवायत इस तरह है -

'कुत्बुल मदार, ग़ौस पाक से मुलाकात के बाद हज को चले गए और सफ़रे हज की वापसी में दूसरी बार बग़दाद तशरीफ़ लाए और बीबी नसीबा ने ग़ौस पाक की वसीयत के मुताबिक अपने दोनों फ़रजन्दों को, जो कुत्बुल मदार की दुआ से पैदा हुए थे, बारगाहे मदारियत में पेश किया। हज़रत शाह मदार ने उन दोनों को दिलो जान से कुबुल किया और उन्हें लेकर ईस्तांबुल (तुर्की) की तरफ़ रवाना हुए। उस जगह उन दोनों अज़ीज़ों की तालीम के वास्ते अब्दुल्ला शामी के हवाले फ़रमाया और खुद एक खाई में शगले हब्स दम ज़िक्रे माबूद हकीकी में मशगुल हो गए। उस जगह चंद साल गुजारे फ़िर ख़ुरासान रौनक अफ़रोज हो गए।

(मुन्तखबुल आजाइबफ़ी इसरारूल ग़राईब, सफ़ाह 23-24 अज़ सैयद अब्दुल्ला)

इस किताब का एक कलमी नुस्खा मकनपुर शरीफ़ में सैयद ज़हीरूल मोअज़्ज़म के कुतुब खाने में मौजुद है।

मोहक़्क़ीके अलल इतलाक़ हज़रत शेख़ अब्दुल हक़ मोहद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने भी ग़ौस पाक की एक बहन का तज़कीरा किया है। मुलाहिज़ा हो ज़ुब्दतुल आसार व उर्दू तर्जुमा 'ग़ौसुल वरा' सफ़हा 17 तर्तिब और तर्जुमा पीर

ज़ादा इक़बाल एहमद फ़ारूक़ी मताबेअ जामेनुर देहलवी।

हज़रत सैयद अहमद बादपा जो हज़रत जमालुद्दीन जानेमन जन्नती के सगे भाई हैं और ग़ौस पाक की सगी बहन के दूसरे साहबज़ादे हैं। आपका मज़ार पुरअनवार परगना नत्थुपुर नवादा घोसी जिला मऊ में दरगाह शरीफ़ नामी गाँव कोल्हु बावन मशहुर है।

फ़रीद ख़ान उर्फ़ शेरशाह सूरी बादशाहे हिन्द ने एक एकड़ वसीअ् ज़मीन पर आपका रोज़ा शरीफ़ की तामीर की है। शेरशाह सूरी की बेटी माहबानों ने पूरी उम्र सैयद अहमद बादपा के क़दमों में गुज़ार दी और माहबानों का मज़ार भी आपके क़दमों में ही है। (आज़मगढ़ गजेट 1971 ई. सफ़हा 452 बहवाला तज़कीराए सैयद एहमद बादपा अज़ शरीफ़ अहमद)

साहिबे बहरेज़रवार शेख़ वजीउद्दीन अशरफ़ रहमतुल्लाह ने आपका तज़कीरा इन अल्क़ाबे अदाब से किया है -

'ऐ नुज़हरे आराऐ-चमने तौहिद।

'ऐ तश तरावते पिराऐ गुलशने तज़ारिद, ऐ ताज बख़्श सलातिने फुक़रा'

'ऐ मशुलो पिराऐ दोस्त सैयद अहमद बादपा मुरीदों ख़लीफ़ा सैयद कुत्बुल मदार। (बहरे ज़ख़्ख़ावर कलमी, सफ़हा 11)

इस ताज बख़्श सलातिनो फुक़रा के बारे में आपके सवाने निग़ार सैयद शफ़ीक़ अहमद बहरे ज़ख़्ख़ावर और मिरअते मदारी के हवाले से रक़म तराज़ है।

हज़रत कुत्बुल मदार हज और ज़ियारत के बाद काज़मो और नज़फ़ अशरफ़ होते हुए बग़दाद पहुँचे। वहाँ हज़रत ग़ौस पाक की बहन बीबी नसीबा रहमतुल्लाह अलैह की औलाद हुई, जिनका नाम सैयद अहमद रखा गया। वहाँ से हज़रत बदीउद्दीन तीसरी बार हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए।

बहरे ज़ख़रवार के हवाले से एक और जगह लिखते हैं कि जब एक सफ़र में हज़रत शाह मदार बग़दाद पहुँचे और सैयदना अब्दुल क़ादिर ज़िलानी रहमतुल्लाह अलैह बादपा को शाह मदार के हवाले किया और उनकी तालीमो तर्बीयत के मुताल्लिक़ ताकिद की। (तज़क़ीरा सैयद अहमद बादपा)

हज़रत ग़ौसुल आज़म सैयदना मुहीयुद्दीन शेख़ अब्दुल क़ादिर ज़िलानी रहमतुल्लाह अलैह की विलादत 471 हिजरी में हुई है। उनसे हज़रत कुत्बुल मदार की मुलाक़ात से ये बात भी साबित हो जाती है कि हज़रत कुत्बुल मदार 471 हिजरी

में भी मौज़ुद थे।

हज़रत ख़्वाजाऐ ख़्वाजगान हुज़ूर सैयदना मुईनउद्दीन हसन संजरी चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह (सन् 531 हिजरी– सन् 627 हिजरी)

हज़रत कुत्बुल मदार से ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने कोकिला पहाड़ी पर मुलाक़ात फ़रमाई।

शहाब चिश्ती अकबराबादी लिखते हैं, ''चिल्ला हज़रत शाह मदार रज़ियल्लाहु अन्हु अजमेर की मशरिकी पहाड़ की चोटी पर है जो 700 फीट बुलन्द है। उस पर सैयद बदीउद्दीन मदार शाह मकनपुरी जो हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के ज़माने में आए थे अरसे तक इबादते इलाही की थी।

(हालाते तारागढ़, सवाने उमरी मिरां हुसैन जंगसवार मताबे मुस्तफ़ाई प्रेस, आगरा)

इसके अलावा 'मीरअ्ते मदारी' के सफ़हा 129, 'फुसुले मसुफ़िया' के सफ़हा 186, 'बहरे ज़ख़्ख़वार कलमी' के सफ़हा 842, 'मुन्तख़िकुल अमाइब और तज़कीरतुल मुत्तक़ीन' के सफ़हा 46, 'मदारे आज़म', 'तज़कीरतुल मुत्तकीन' और उसके अलावा कई किताबों में तहरीर है कि हज़रत सैयदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत सैयद बदीउद्दीन मदार रज़ियल्लाहु अन्हु से कोकिला पहाड़ी पर मुलाक़ात फ़रमाई।

इसी पहाड़ी पर हज़रत कुत्बुल मदार ने क़याम किया जो आज मदार टेकरी के नाम से मशहुर है। इस मक़ाम पर तीन शाना रोज़ तक दोनों बुज़ुर्ग ख़ामोश बैठे रहे और बवक़्ते रूख़्सत बगलग़ीर हुए।

जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से पुछा गया कि आप लोगों ने आपस में बज़ाहिर कोई गुफ्तगु नहीं की तो आपने इरशाद फ़रमाया कि ''अहले दिल इसी तरह मुलाक़ात करते हैं।''

इन शवाहिद की बुनियाद पर हज़रत कुत्बुल मदार का हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की हयाते ज़ाहिरी में भी होना साबित है।

एक दूसरी जगह शेख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती (मतूफ़ी 1094 हिजरी) साहिबे मिर्अतुल असरार रक़म फ़रमाते हैं कि - ''हज़रत सैयदना ख़्वाजा-ए-चिश्त कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह ने अपने रिसाला-ए-कुतुबिया में तहरीर फ़रमाया है कि 'जब मेरे पीरो मुर्शिद सैयदना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती

मक्का मोअज़्ज़मा से हिन्दुस्तान आकर अजमेर शरीफ़ मुक़ीम हुए, तब जाकर क़ाफ़िरों पर फतह नसीब हुई। हजरत सैयद असलम ग़ाज़ी, हज़रत सैयद अकरम ग़ाज़ी, हज़रत सैयद सूफ़ी ग़ाज़ी, हज़रत सैयद मलिक ग़ौस ग़ाज़ी, हज़रत सैयद हामिद ग़ाज़ी यही पाँचों पीर हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज़रत सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाह अलैह और उनके रूफ़क़ा ओं शहीदाने उज़्ज़ाम के मज़ारात की ज़ियारत के ख़्वास्तगार हुए। उन पाँचों पीर को हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह ने एक हफ्ता मेहमान रखा और आठवें दिन ख़िर्क़ा-ए-ख़िलाफ़त अता फ़रमाकर हुक्म दिया कि आप लोग अब बहराईच शरीफ़ तशरीफ़ ले जाएँ, अलग़रज़ पाँचों पीर हज़रत बख़्तियार काकी की माईयत में बहराईच शरीफ़ पहुँच गए।

इसी असना में कुत्बुल मदार सैयद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार से शरफ़े मुलाकात हासिल हुआ। ज़िंदा शाह मदार ने पाँचों पीर को देखते ही फ़रमाया - ''बहुत दिनों के बाद सिद्दीकीन की ख़ुश्बु दिमाग़ में पहुँची है। चंद दिनों पाँचों पीर ख़िदमते अक़्दस में रह कर सूलुक के मदारिज तय करते रहें और ख़िर्क़ा-ए-ख़िलाफ़त हासिल करने के बाद क़दमबोस हुए। हज़रत बदीउद्दीन कुत्बुल मदार रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के मुताबिक सन् 615 हिजरी में ज़ियारते हरमैन तैयबेन के लिए तशरीफ़ ले गए।''

(मतर्जुम, गुलिस्ताने मसऊदिया मौल्लिफ़ शेख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती अलवी रहमतुल्लाह अलैह, सफ़हा 13-16)

इस वाकिअ़ से ज़ाहिर होता है कि अहदे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह में कुत्बुल मदार दुनिया में जल्वा अफ़रोज़ थे।

हज़रत सैयद मख़्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी का कुत्बुल मदार से बैअ़त होना

सुल्तानुत्तारेक़ीन हज़रत सैयद मख़्दूम अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी (708 हि.-832 हि.) लताइफ़े अशरफ़ी में फ़रमाते हैं कि, ''ख़िर्क़ा-ए-ख़िलाफ़त दो तरह के होते हैं। अव्वल ख़िर्क़ा, ख़िर्क़ा-ए-इरादत है जो बैअ़तो इरादत के वक़्त शेख़ अपने मुरीद को तौबा की तलक़ीन के साथ अता फ़रमाते है और दूसरा ख़िर्क़ा, ख़िर्क़ा-ए-मुहब्बत होता है, जो कि पीर अपने मुरीद को बैअ़त करने के बाद कपड़ा या ख़िर्क़ा अता करते हैं या दो दर्वेश जिन्होंने एक तवील ज़माना बतौर रफ़ाक़त एक

दूसरों को ख़िर्क़ा-ए-मुहब्बत अता करें। जैसा कि हज़रत शेख़ बदीउद्दीन मुलक़्क़ब ज़िन्दा शाह मदार और क़िद्वतुलकुबरा हज़रत मख़्दूम अशरफ़ जहाँगीर समनानी रज़ियल्लाहु अन्हु एक दूसरे के साथ सफ़रो हिज्र में बड़ी लम्बी मुद्दत तक़रीबन पूरे बारह साल तक रहे। फ़िर जब रूम के बंदरगाह से हज़रत शेख़ मदार ने ख़ित्ता-ए-अवध **की तरफ़** वापसी का इरादा फ़रमाया तो हज़रत शाह बदीउद्दीन मदार ने हज़रत मख़्दूम को ख़िर्क़ा-ए-मुहब्बत पहनाया और जुदाईगी के वक़्त दोनों बुज़ुर्ग एक दूसरे से बग़लग़ीर होकर बहुत रोए।

(लताइफ़े अशरफ़ी/फ़ारसी, सफ़हा 338)

लताइफ़े अशरफ़ी की इस इबारत में हज़रत मख़्दूम समनानी ने इरशाद फ़रमाया कि सैयद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार ने मुझे ख़िर्क़ा-ए-मुहब्बत से सरफ़राज़ फरमाया और सफ़रे हिजाज़ में अरसा-ए-दराज़ तक में शाह मदार के हमराह रहा।

ये शहादत इस बात का वाज़ेअ़ सुबूत है कि हज़रत कुत्बुल मदार रहमतुल्लाह अलैह 700 हिजरी में भी जल्वा अफ़रोज़ थे।

सन् 800 हिजरी तक कुत्बुल मदार का दुनिया में जल्वा अफ़रोज़ होना कुत्बे आलम हज़रत मख़्दूम शाह मीना लख़नवी (कुद्दस) को मक़ामे कुतबियत पर फ़ाईज़ फ़रमाना (801 हि.-884 हि.)

कुत्बे आलम हज़रत मख़्दूम शाह मीना लख़नवी रहमतुल्लाह अलैह की कुतुबियत का शोहरा उस वक़्त हुआ जब हस्ब ज़ैल वाकेअ़ पेश आया।

मलफ़ूज़ात शाह मीना लखनवी रहमतुल्लाह अलैह में है कि सुल्तानुल आरेफ़ीन हज़रत सैयद शाह बदीउद्दीन मदार साहब चन्द साल शहर जौनपुर में तशरीफ़ फ़रमा रहे और कुछ अर्से बाद जौनपुर को ख़ैराबाद कह सन् 813 हि. में लखनऊ तशरीफ़ ले आए।

एक शख़्स हज़रत कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु की आमद की इत्तला सुन अपनी बीवी की सेहतयाबी की दुआ के लिए आपकी ख़िदमत में हुआ। हज़रत शाह मदार रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरशाद फ़रमाया, ''लखनऊ की विलायत और कुतबियत शाह मीना के सुपुर्द कर दी गई है, उनसे रूजूअ करो।''

उस वक़्त तक शाह मीना की लखनऊ में शोहरत नहीं हुई थी। उस शख़्स ने दरयाफ़्त किया कि, ''मैं हज़रत कुत्बे आलम को कहाँ पाऊँगा।'' तब हज़रत बदीउद्दीन मदार रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस शख़्स को शाह मीना का पता बताकर उस शख़्स को जनाब क़ाज़ी शहाबुद्दीन परकाला आतिश के साथ कर दिया और कुत्बे आलम शाह मीना के लिए क़ाज़ी साहब के साथ एक मुसल्ला और एक थैली भी भेजी।

हज़रत शाह मीना की बारगाह में जनाब क़ाज़ी साहब ने हज़रत शाह मदार रज़ियल्लाहु अन्हु की अताकर्दा थैली और मुसल्ला पेश किया और उस शख़्स का मक़सद बयान फ़रमाया।

यह सुनकर हज़रत शाह मीना (रहमतुल्लाह अलैह) नया वुज़ू करके हज़रत सैयद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार के अताकर्दा मुसल्ले पर नमाज़ पढ़ने में मसरूफ़ हो गए और हज़रत शाह मीना रहमतुल्लाह अलैह की तवज्जो से उस शख़्स की बीवी सेहतयाब हो गई। इस वाकेअ् के बाद हज़रत शाह मीना रहमतुल्लाह अलैह की कुतबियत और विलायत का चहारं जानिब चर्चा व शोहरा हो गया।

आज भी जब कभी कोई परेशानी पेश आती है तो ख़ुद्दामे हज़रत कुतुबे लखनऊ सैयदना शाह मीना लखनवी (कुद्स) हज़रत सैयदना बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु की अताकर्दा थैली और मुसल्ले को वसीला बनाकर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ मांगते हैं और हासिले मक़सूद को पहुँचते हैं।

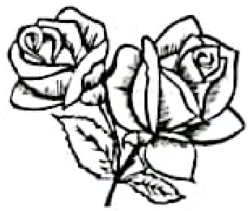

मंसूरी टेलीकाम एण्ड जनरल स्टोर

माधवगंज, नीमच सीटी, नीमच (म.प्र.)

वहीद मंसूरी, ज़ाहिद मंसूरी Mob. : 9826320637

फर्म :- मंसूरी टेन्ट हाऊस, माधवनगर, नीमच सीटी, नीमच

हज़रत शाह मीना लखनवी, मीर अब्दुल वहीद बिलग्रामी (मुसन्निफ़ सबऐ सनाबिल) और हज़रत सैयद बरक़तुल्लाह मारहरवी का शजरा-ए-सिलसिला-ए-मदारिया

हज़रत सैयदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत सैयदना अमीरुल मोअमेनीन अली इब्ने सैयदना अबी तालिब कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम
हज़रत इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत इमाम हबीब अजमी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत इमाम बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना बदीउद्दीन अहमद ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी मख़्दुम जहाँनिया जहाँगश्त (बराहे रास्त)
हज़रत सदरुद्दीन सैयद राजू कत्ताल रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत मख़्दूम शाह मीना लखनवी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ साद रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ शाह सफ़ी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शेख़ हुसैन रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत मीर अब्दुल वहीद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शाह मीर अब्दुल जलील रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत शाह उवैस रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सैयद शाह बरकतुल्लाह मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह

(अस्सहूलवारिख़) (सेफ़ मदार, अलहाज सैयद जुल्फ़िक़ार अली कमरी मदारी)

इन मज़कूरा बाला इबारत से साबित होता है कि तबेताबई सैयदना बदीउद्दीन कुत्बुल मदार रहमतुल्लाह अलैह सन् 800 हिजरी में भी जल्वा अफ़रोज़ थे।

तारीख़े सलातीने शरक़ीया व सूफ़ीयाए जौनपुर के मौअल्लिफ़ सैयद इक़बाल ज़ौनपुरी ने हज़रत कुत्बुल मदार का 9 वें सफ़हात पर तफ़्सहली तज़किरा किया है कि, ''ज़ौनपुर के बादशाह हज़रत इब्राहिम शर्की, जो कुत्बुल मदार के मुरीद और ख़लीफ़ा थे, हज़रत कुत्बुल मदार का बड़ा वालेहाना इस्तक़बाल किया और ज़ौनपुर

के अक्सर ओ बेश्तर लोग हज़रत सैयद कुत्बुल मदार के दस्ते मुक़द्दस पर बैअ़त हुए। बादशाह भी मुरीद हुआ और ख़िलाफ़त हासिल की। मीर सदरजहाँ भी मुरीद और ख़लीफ़ा हुए और मल्कुल उलेमा क़ाज़ी शहाबुद्दीन दौलताबादी ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए।

अलग़र्ज़ इन शवाहिद से ये बात बिल्कुल साबित होती है कि हज़रत कुत्बुल मदार की विलादत 242 हिजरी में हुई, जबकि 838 हिजरी में आपका विसाल हुआ और मकनपुर शरीफ़, ज़िला कानपुर में आपकी तदफ़ीन अमल में आई। जहाँ से आज भी फ़ूयुज़े बरकात ज़ारी व सारी है।

आपका मज़ार बादशाहे ज़ौनपुर ने अपने अहदे हुकुमत में तामीर करवाया था और वक़्त दर वक़्त उसमें दूसरे बादशाहे हिन्द ने मज़ीद इज़ाफ़ा किया। बादशाह अकबर, बादशाह जहाँगीर, बादशाह शाहजहाँ, शहज़ादा दाराशिकाह, बादशाह हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रहमतुल्लाह अलैह और कुली कुतुब शाह समेत कई बादशाहों ने शहंशाहे कुत्बुल मदार की बारगाह में अपनी इनायत पेश की।

जिलानी इंजिनियरिंग वर्कस

जामा मस्जिद के पास, महिदपुर रोड़ (म.प्र.)

मोहम्मद मुश्ताक़ मंसूरी, मक़सूद एहमद मंसूरी

Mob. : 9630129014

फर्म :- परफेक्ट विडियो शूटिंग, शुगर मिल रोड़, महिदपुर

आरिफ़ मंसूरी, महफ़ूज मंसूरी

ज्योति किराना स्टोर

17, गुरूनानक कॉलोनी, बेरसिया रोड़, सुपर मार्केट के पीछे

भोपाल (म.प्र.)

यादगार मोहम्मद

Mob. : 9893572348, 9827667643

हज़रत कुत्बुल मदार की दाअ़वती ख़िदमात

हज़रत कुत्बुल मदार सैयद बदीउद्दीन अहमद मदार की ज़ात दुनिया-ए-तसव्वुफ़ में मशहूर ओ मअ़रूफ़ है।

मोहद्दीसे हिंद, मोहक्क़िके अलल इतलाक़ हज़रत शेख अब्दुल हक़ मोहद्दीस देहलवी 'अख़्बारूल अख़्यार' में तहरीर फ़रमाते हैं - ''लोग शाह बदीउद्दीन मदार के अजीबो-ग़रीब हालात बयान करते हैं, फ़रमाते हैं कि आप मक़ामे 'समदियत' पर फ़ाईज थे जो सालिकों के मकामात में से है।'' (अख़्बारूल अख़्यार, उर्दू तर्जुमा सफ़हा 292)

तबकाते शाहजहाँनी में है - ''हज़रत बदीउद्दीन शाह मदार कुद्स ने तवील उम्र पाई थी। आपकी ख़िलाफ़त का सिलसिला चार वास्तों से सैयदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लयाहु अन्हु तक पहुँचता है। दुसरे सिलसिलों की ब निस्बत आपका सिलसिला क़रीब तर वसाईत की वजह से दिलों पर कश्फ़ो इश्शक और इद्राके मआनी औ हक़ीक़त के बाब में निहायत आला मुक़ाम रखता है। जो कोई आप को देखता है, बेइख़्तियार अल्लाह की बारगाह में सज्दा रेज हो जाता, उन अनवारे ईलाहिया के सबब जो आपी की पेशानी में ताबा थे, मगर आरे आम के दिन नकाब चेहरे से उठा देते थे। उस दिन जिस किसी को जो भी मुश्किल पेश आती, आप उस का हल फ़रमाते। मुर्दो को ज़िंदा करना, खाने पीने से बेनियाज रहना, बग़ैर धोबी के धोए कपड़े का सफ़ेद व शफ़्फ़ाक़ रहना आपकी जुम्ला करामात में से है। आप के खुल्फ़ा-ए-नामदार ओ असहाबे किराम क़सीर तादाद में हुए। जुमला ज़ाहिर शरीअत से आरास्ता थे।''

हज़रत कुत्बुल मदार की 596 साल की उम्र बजाए ख़ुद एक करामात है। हज़रत खिज़्र अलैहिस्सलाम ने हज़रत मदार पाक को मुख़ातिब कर के ख़िताब फ़रमाया है, जिस से हज़रत कुत्बुल मदार की अस्ल व नस्ल और वतन का इल्म बड़े वाज़ेअ़ तरीके से होता है। चुनांचे ख़िज़्र अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं -

''ऐ साहबज़ादे! बिला शुबाह तुम्हारी अस्ल मुहम्मदी है। खमीर फ़ातमी है, नस्ल अलवी है और पेदाईश हल्बी है। अनक़रीब अल्लाह तआला तुम्हें करामातों का मदार और अलामतों का मह्वर बनाऐगा।''

हज़रत कुत्बुल मदार मादरज़ात वली और सईद अज़ली थे। क़ब्ल विलादत अहदे शीर ख़्वारगी और अय्यामे तफ़ूलियत में भी ऐसे वाक़ेअ़त रूनूमा हुए जो कि न

सिर्फ़ दीगर अतफ़ाल बल्कि ज़लीलुल कद्र औलिया अल्लाह की तवील फ़हरिस्त में आपको मुमताज़ करते हैं। अहदे तफ़ूलियत में आम बच्चों की तरह आप लह्वों लुआब का शौक़ नहीं रखते थे। इत्तफ़ाकन खेलकूद के लिए निकल भी जाते तो सदा-ए-ग़ैबी होती - ''या बदीउद्दीन ! अरजा उला'' आप इस आवाज़ को सुनकर वापिस हो जाते। एक रोज़ मुहल्ले के कुछ बच्चों के साथ सैरो तफ़रीह के इरादे से एक बाग की तरफ़ चले कि दफ़अतन सदा-ए-ग़ैबी ने आप को चौंका दिया। कोई करने वाला कह रहा था -

''या बदीउद्दीन ! उम्मे ख़लक़त लिहाज़ा व अमरत लिहाज़ा।''

ये सुन कर आप आलमे हैरत में आ गए और उसी जगह साकित रह गए। कुछ देर के बाद पुकार उठे, ''लाइलाह इल्लल्लाह'' और दौड़ते-दौड़ते अपनी अम्मीजान सैयदा हाजरा फ़ातेमा सानिया रजियल्लाहु अन्हा की आग़ोशे मुहब्बत से लिपट गए। जिस्मे अक्दस पर हैरानी व परेशानी के आसार वाजेअ् तौर पर नुमाया थे। वाल्दाह मोहतरमा घबराई और नूरे नज़र के हाले परेशां से अपने शोहरे नामदार हज़रत सैयद अली हल्वी को मुत्तला किया। वालिदे गिरामी ने लख्ते जिगर को देख कहा, ''परेशान होने की बात नहीं, मेरे फ़रज़न्द को अल्लाह तआला ने अपनी दोस्ती के लिए मुन्तख़ब फ़रमाया है और वह अपने दोस्तों के साथ ऐसा ही सुलूक फ़रमाता है।'' (नज्मुल हूदा)

सिर्फ यही नहीं कि आप खुद खेल-कूद से दूर रहते थे बल्कि दुसरों को भी यही दर्स देते थे कि ''अपनी हयात मुस्तआर को खेल-कूद में बर्बाद न करो और वक़्त को राएगा न करो।''

एक मर्तबा का वाक़ेअ् है कि कुछ बच्चे खिलौनों से खेल रहे थे और खुश हो रहे थे, मगर आप गोशा-ए-तन्हाई में खड़े हुए रो रहे थे। उधर से एक शख्स का गुज़र हुआ, उसने आप रजियल्लाहु अन्हु को रोते हुए देखा तो क़रीब आकर पूछा कि, ''आप क्यूँ रो रहे हैं ? क्या आपके पास खिलौने नहीं है ?'' तो आपने जबाव दिया, ''न मुझे खिलौनों की जरूरत है और न ही खेलने का शौक़, मेरा सीना तो इस ग़म से फ़टा जाता है कि अल्लाह ने जिस मक़सद के लिए इन बच्चों को पैदा किया है,,उससे ग़ाफ़िल होकर ये अपना वक़्त खेल में सर्फ़ करते हैं, कहीं ऐसा न हो कि हयात दो रोज़ा की घड़ियाँ यूँही ख़त्म हो ज़ाए और सरमाया-ए-आख़िरत से महरूमी मुकद्दर बन जाए।'' वह शख़्स बहुत मुताअस्सिर हुआ। (नज्मुल हूदा)

उलूमे ज़ाहिरी से मुस्तफ़ैज़ और मुस्तफ़ीद होन के बाद बहुक्मे सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तब्लीग़े दीन मुतव्यन के लिए चल पड़े। रास्ते में हज़रत शेख़ अबू नस्र अब्दुल वहाब से मुलाकात हुई। दोनों बुज़ुर्ग एक क़ाफ़िले में शामिल होकर बसरा तशरीफ़ लाए, यहाँ हज़रत शेख़ ग़ीलान वास्ती रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात हुई। कुछ दिन वहाँ क़याम करके बग़दाद पहुँचे और सैयदना अब्दुल कादिर अलमारूफ़ शेख़ ज़मीरी बग़दादी ने आप की दाअ्वते ख़ास का अहतमाम किया। जिस में हज़रत सैयदना जुनैद बग़दादी, हज़रत सैयदना अहमद बिन मसरूक ख़ुरासानी और उनके रफ़ीक़ बू अली रोदबारी रिज़वानुल्लाह अज़मईन जो सिलसिला तमहिदा शाकर्रा से हैं, शरीक़ हुए।

इस मौके पर हज़रत अहमद बिन मसरूक ने खुशख़बरी दी कि ''बारी तआला ने आप (कुत्बुल मदार) की दुआ की बरकत से एक पीसर (बच्चा) इनायत फ़रमाया है, उसका नाम भी आप ही तहरीर और तज्वीज़ फ़रमाएँ तो बेहतर है।'' आपने उस नाम ''अब्बास'' रखा।

आपने इस पुर मसर्रत मौका पर सैयदना अब्दुल क़ादिर ज़मीरी और बू अली रोदबारी को बैअ्त किया और खिलाफ़त व इज़ाज़त से नवाज़ा।

हिन्दुस्तान में आमद : उस के बाद सन् 280 हिजरी में आप हिन्दुस्तान आने के लिए एक जहाज़ पर सवार हुए। अहले जहाज़ के रूबरू आपने तौहिदे बारी तबारक व तआला और फ़ज़ाईले नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बयान फ़रमाए, वह मलऊन इस ज़िक्रे पाक को सुन कर चिढ़ गए और आपकी शान में गुस्ताख़ी करने लगे कि इस मुसाफ़िर को सब मिलकर समंदर में डाल दें। उन लोगों का ये मश्वरा करना था कि दफ़अतन मशीयते ऐज़दी जलाल में आई और वह जहाज़ तूफ़ान में फँस कर तबाह हो गया।

जो लोग इस महबूबे ज़ुलजलाल और ज़िगर ग़ोशा-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ग़र्क़ करने के मश्वरे कर रहे थे। वह ख़ुद समंदर में डूब गए। कुछ लाग एक तख़्ते के सहारे बह निकले, लेकिन एक-एक कर के वह भी डूब गए।

आप जिस तख़्ते पर सवार थे बइनायते खुदावंदी वह साहिल (साहिले खम्बात) से जा लगा।

मक़ामे समदियत पर फ़ाईज़ होना : साहिल पर लगने के बाद आपने खुश्की पर पहुँच सज्दा-ए-शुक्र अदा किया। उस वक़्त आप को भूख की शिद्दत थी।

आपने सज्दे में दुआ फ़रमाई - ''ईलाही ! मुझे भूख, प्यास न लगे और मेरा लिबास मेला पुराना न हो।'' (दुर्रुलमुआरिफ़, सफ़हा 147-148, मलफ़ूज़ात हजरत गुलाम अली नक्शबंदी मुजद्दी रहमतुल्लाह अलैह मतबूआ तुर्की)

फ़िर एक आवाज आई, ''बदीउद्दीन'' आपने आवाज आने की सिम्त देखा, एक बुज़ुर्ग मोहतरम को खड़े हुए पाया। उन बुज़ुर्ग ने आपको अपने हमराह चलने को कहा। आप उनके साथ रवाना हो गए। वह बुज़ुर्ग आप को एक वसीअ् व अरीज़ बाग़ में ले गए, थोड़ी देर में एक अजीबो-ग़रीब मामला नजर आया। आपने अपने जद्दे अमजद सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को एक तख्ते मुरस्सा पर जल्वा गर पाया। आपने बा ताअ्ज़ील तमाम तहाईफ़े दूरूदो सलाम खिदमते सरवरे कौनेन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में पेश किया।

आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की बारगाह से इरशाद हुआ कि, ''ऐ लख्ते जिगर करीब आओ।'' आप करीब पहुँचे। एक ख्वान बहिश्ती पेरहान और ग़िज़ाए मलकूती से लबरेज़ गैब से नमूदार हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने दस्त मुबारक से आपको नौ (9) लुक़्मे खिलाए। जिसको खाते ही नौ तबकात रोशन हो गए और भूख की ख्वाहिश बिल्कुल खत्म हो गई और जन्नती लिबासे अतहर लेकर सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने दस्ते मुबारक से आपको जन्नती लिबास अतहर पहनाया जो तमाम उम्र ज़ेबे तन रहा न कभी मेला हुआ और न ही पुराना।

इसके अलावा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुत्बुल मदार के चेहरे-ए-अतहर पर अपना दस्ते नूरानी फ़ैर दिया। दस्ते अक़दस के मस होते ही आप का चेहरा मुबारक तजल्लियाते ईलाही का आईना बन गया। आपका चेहरा मुबारक इतना ताबिन्दा हो गया कि जो कोई आपके रूखे अनवर की तरफ़ देखता जमाले खुदा को देखकर बेइख्तियार अल्लाह की बारगाह में सज्दा रेज़ हो जाता। इसलिए आपने अपने चेहरा-ए-अनवर को सात नक़ाबों और पर्दों से ढाँप लिया था।

आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की इनायतों फ़ज़्लो करम से हज़रत सैयद बदीउद्दीन अहमद कुत्बुल मदार की तमाम नफ़्सानी ख्वाहिशात सल्ब कर ली गई और तमाम उम्र (556 साल) न कभी कुछ खाया और न ही कुछ पिया।

दुर्रुलमुआरिफ़ के सफ़हा 147-148 पर दर्ज है कि, ''इस दुआ के बाद बक़ीया पूरी उम्र में आपने कुछ न खाया न पिया और आपका लिबास मेला पुराना नहीं हुआ। वही एक लिबासे अतहर विसाल तक काफ़ी रहा।''

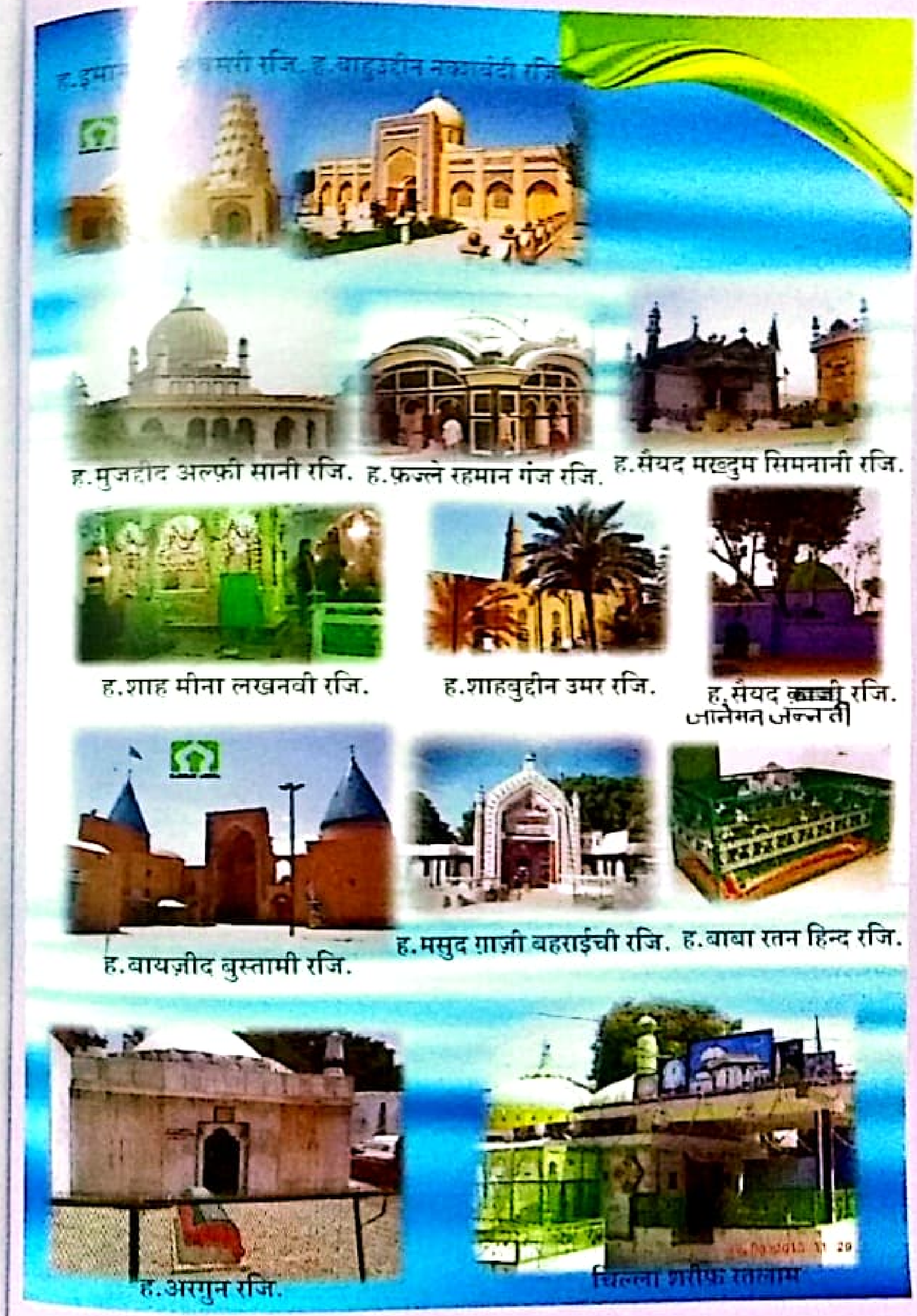

ह.मुजद्दीद अल्फ़ी सानी रजि. ह.फ़ज्ले रहमान गंज रजि. ह.सैयद मख़्दुम सिमनानी रजि.

ह.शाह मीना लखनवी रजि. ह.शाहबुद्दीन उमर रजि. ह.सैयद काज़ी रजि. जानेमन जन्नती

ह.बायज़ीद बुस्तामी रजि. ह.मसुद ग़ाज़ी बहराईची रजि. ह.बाबा रतन हिन्द रजि.

ह.अरगुन रजि. चिल्ला शरीफ़ रतलाम

हज़रत कुतबे रब्बानी ग़ौसे समदानी सैयदना शेख़ अब्दुल क़ादिर ज़िलानी महबूबे सुब्हानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मक्तूब 'निताब कुबरतुलवहदत' और हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी शहंशाहे हिन्दलवली रहमतुल्लाह अलैह ने अपने मक्तूब 'निताब अहदियतुल मुआरिफ़' में लिखा है कि -

''बिल्लाह सुम्मा बिल्लाह हमने देखा कि हज़रत सैयद शाह बदीउद्दीन के नक़ाब अहयानन एक या दो उठ जाते थे तो ख़ल्कुल्लाह सज्दे में गिरने लगती थी, क्योंकि जिस तरह आदम अलैहिस्सलाम मसजूदे मलाईक़ थे, उसी तरह हज़रत बदीउद्दीन मसजूदे ख़लाईक़ थे और ये शरफ़ उनको सिर्फ़ दस्ते अक़्दस हज़रत सरवरे कौनेन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरे पर मस करने से हुआ था। मग़र आप हिज़ाबात में अपना चेहरा मस्तूर रखते थे, ताकि शरीअत में बाहर क़दम न निकले।''

(तवारिख़े आईनाए तसव्वुफ़, मुसन्निफ़ हज़रत मौलाना मुहम्मद हसन चिश्ती रामपुरी अलैहिर्रहमा, सफ़्हा 154) (ज़ुल्फ़िक़ारे बदीअ, सफ़्हा 106) (मिलाद ज़िंदा शाह मदार, सफ़्हा 43) (सायक़ा,सफ़्हा 20-21, अंजुमन तहफ़्फ़ुज़े सिलसिला आलिया मदारिया शाख़ मुम्बई)

ग़ैर मुनकसिम हिन्दुस्तान के औलिया-ए-किराम की तारीख़ का मुतअ्ला करने पर ये बात मख़्फ़ी नहीं कि हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर बा ज़ाब्ता तब्लिग़ी व दस्तुरो निज़ाम लेकर आने वाले औलिया किराम में आप की ज़ात सरे फ़ेहरिस्त है।

हिन्दुस्तान में तब्लीग़-ए-इस्लाम : हज़रत कुत्बुल मदार की फ़ैज़ रसानी-ए-आलम और ख़िदमते दीन मुतय्यन का इस बात से अंदाज़ा लगाइये कि हिन्दुस्तान जैसे अवहाम परस्त मुल्क में आप तीसरी सदी हिजरी (280 हि.) में तशरीफ़ लाए। ये वह दौर था जब यहाँ मुसलमानों का नामों निशान न था। यहाँ आने वाले मुसलमान ताज़िर और फ़ातेह सिंध मुहम्मद बिन क़ासिम की क़ायम कर्दा हुकुमत ज़वाल पज़ीर हो चुकी थी। ज़ुनूबी हिन्द के साहिली इलाके में बग़रज़े तिज़ारत आने वाले मुसलमान ख़ाल-ख़ाल नज़र आते थे।

हिन्दुस्तान के इस ख़ित्ते में कोई ख़ास तब्दिली नहीं हुई थी। ऋषियों और मुनियों का बोलबाला था। शोअ्बदे बाज़ों का ड़का बज रहा था, जो जितना बड़ा शोअ्बदा बाज़ होता वह उतना ही बड़ा देवता होता और ऋषियों की इबादत का क़ायदा ये था कि वह अपनी साँस रोक कर बैठ जाते थे, इस तरह उनका बहुत एहतराम किया जाता था। ऋषि अक्सर जंगल में रहते थे।

हज़रत कुत्बुल मदार को इस माहौल में तब्लीग़े इस्लाम का नया रास्ता

मिला। आपने ''शग़ले हब्स दम'' शुरू किया। जिसकी तालीम आपके पीरो मुर्शीद सैयदना बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको अता फ़रमाई थी। आप ''लाइलाहा'' पर साँस अंदर लेते और ''इल्लल्लाह'' पर साँस बाहर निकालते। ये नई चीज़ देखकर लोग कसीर तादाद में जमा होने लगे। इस तरह मख्लूक़ की खिदमत और इस्लाम की तब्लीग़ में बड़ा सहारा मिला। आपको एक ऐसे मुल्क और ऐसी क़ौम से साबक़ा पड़ा था जहाँ की ज़ुबान, रहन-सहन, रस्मो रिवाज और तौर तरीक़े मुख्तलिफ़ थे। मुश्रिकाना माहौल और ज़ुल्मतो कुफ्र में आफ़ताबे मदारियत तुलूअ् हुआ और अपनी ज़ियापाशियों से हिन्दुस्तान की सरज़मीन को रोशनो ताबा किया। दौराने तब्लिग़ कुफ्फ़ार ओ मुश्रिक़ीन ने तब्लिग़े दीन में बहुत रूकावटें पैदा की। आपको शदीद तरीन मुश्किलात से गुज़रना पड़ा। मज़ाहमतों के पहाड़ इशाअते दीन में हाईल हुए। इस सफ़र में आपने तक़रीबन 36 हज़ार लोगों को दाखिले इस्लाम किया।

हज़रत कुत्बुल मदार पालनपुर में : हज़रत कुत्बुल मदार जब पालनपुर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो वहाँ का राजा बलवानसिंह मय चंद अकाबिर सल्तनत आपकी काविशों से मुसलमान हुआ। आप ने उस का नाम ज़ोरावर खाँ रखा। ज़ोरावर खाँ ने सैकड़ों मस्जिदें तामीर कराई।

कुत्बुल मदार अजमेर में : पालनपुर से आप अजमेर के लिए रवाना हुए। वहाँ पहुँच कर कोकिला पहाड़ी पर जल्वा अफ़रोज हुए तो वहाँ के बाशिंदे जो एक मुद्दत से परेशान थे। हाजिर हुए और क़याम फ़रमाने से मना करने लगे। आपने फ़रमाया कि ''ये क्या सुलूक है ? क्या यहाँ मेहमानों के साथ ऐसा ही सुलूक होता है ?'' वह लोग कहने लगे कि ''मेहमान नवाज़ी हम भी जानते हैं, मगर क्या करें इससे पहले भी आप ही जैसे लोग यहाँ आए थे जिन से जंग हुई, और वह मारे गए। जिनकी लाशें आज भी वैसी ही जंगल में पड़ी है। रात होती है तो उनमें ज़बर्दस्त चीखें पैदा होती है। जिन्हें सुन कर हमारे बच्चे डरते हैं। हम लोगों के दिन काँप जाते हैं, यहाँ तक कि कभी-कभी हमारी हामीला औरतों के हमल साक़ित हो जाते हैं। इसलिए हम लोग डर रहे हैं कि पहले लोगों की वजह से तो आज तक हम लोग परेशान हैं। अब आप आए हैं तो न मालूम क्या हो ?'' हज़रत ज़िंदा शाह मदार ने फ़रमाया, ''अगर ये आवाज़ें आनी बंद हो जाए तो जो मैं कहूँगा उस पर अमल करोगे ?'' वह सब इक़रार करके चले गए। आपने अपने खुल्फ़ा व मुरीदीन को जमा करके फ़रमाया, ''चलो उन बे गोरो कफ़न लाशों को दफ़्न कर दें। जिनसे तक्बीर की आवाजे आती है।'' आपने उन शहीदों की लाशों को दफ़्न कर दिया

और आवाज़ें आनी बंद हो गई। लोग आराम से सोए और सुबह उनमें से अक्सर लोग आकर दाखिले इस्लाम हो गए।

अजमेर में ही एक जोगी ''अधरनाथ'' जो बहुत बड़ा जादूगर था। ये हैरान हो गया और एक थान जादू के चनों से भरा हुआ लेकर हाज़िर हुआ। ये दिखने में चने थे मगर उनकी अस्ल लोहे के टुकड़ों की थी। ये थाल ''अधरनाथ'' ने कुत्बुल मदार के सामने पेश किया। आपने फ़रमाया, ''मैं रोज़े से हूँ। मुरीदीन में तक़सीम कर दीजिए।'' और एक चना थाल से उठा कर वहीं बो दिया। चना फ़ौरन फूट आया और वह चने मुरीदीन खाने लगे। अधरनाथ ये सब देखकर मुसलमान हो गया और उस रोज़ से मिसाल क़ायम हो गई, ''फ़कीरी क्या लोहे के चने चबाना है।''

मेवात में कुत्बुल मदार : इलाका-ए-मेवात में हज़रत कुत्बुल मदार के हमराहियों को लुटने के लिए बावन अफ़राद पर मुशतमिल डाकुओं का गिरोह आया। जैसे ही क़रीब पहुँचे नाबीना हो गए और गिड़गिड़ाकर माफ़ी माँगने लगे। आप की दुआ की बरकत से बिनाई लोट आई। ये करामत देखकर इतना मुतास्सिर हुए कि फ़ौरन मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए और बाक़ी ज़िन्दगी तब्लीगे इस्लाम में गुज़ार दी। ये लोग आज भी 52 गौट के नाम से मशहुर हैं। इनमें बाज को खिलाफ़त भी अता हुई। उनमें एक ''चौहर सिद्ध'' भी थे। आपने उनका नाम ''इस्लाम नबी'' रखा जो आगे चलकर बहुत बड़े साहिबे क़श्फ़ हुए।

साहिबे नज्मुल हुदा हज़रत निज़ामुद्दीन हसन तहरीर फ़रमाते हैं कि आप जब बग़रज़ तब्लीग़े इस्तांबुल, तुर्की पहुँचे तो एक यहूदी आया और दीने मुसवी की तारीफ़ और इस्लाम में ख़ामियाँ निकालने लगा। मआग़ अनी आप उसके हर सवाल का माअ्कुल जवाब देते थे। दौराने गुफ्तगु कहने लगा कि ''हमारे पैग़म्बर हज़रत दाउव्द अलैहिस्सलाम जब ज़ुबूर की तिलावत फ़रमाते थे तो सारा आलम मह्व हो जाता था। यहाँ तक कि जंगली जानवर, परिंदे, आबो हवा 'ज़ुबूर मुक़द्दस' सुनकर मदहोश हो जाते थे और तुम्हारा दावा है कि क़ुर्आन जो तुम्हारे नबी पर नाज़िल हुआ है वह सारे सहाईफ़ व कुतुबे आसमानी से अफ़ज़ल व आला है और मैंने बार हा वह कलाम सुना है मग़र ऐसी बात इस क़ुर्आन में कभी नहीं पाई।'' आपने फ़रमाया, ''हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का ये मौजज़ा मुझे तस्लीम है और बेशक यही बात है, जो तूने कही और बिला शक ओ शुबहा क़ुर्आन करीम सब से अफ़ज़लो आला है खुदाए वाहद हू लाशरीक़ का कलाम है।''

यहूदी ने एक सूखे हुए दरख़्त की तरफ़ इशारा करके कहा कि, ''अगर तुम्हारा कुर्आन ये सूखा दरख़्त पढकर सुनाए और तुम्हारे दीन की सचाई की शहादत दे तो मैं तुम्हारे दीन में दाख़िल हो जाऊँगा और तुम्हारे नबी का कलमा पढ़ लूँगा।''

हज़रत कुत्बुल मदार ने उस दरख़्त के क़रीब जाकर दो रक़ात नमाज़ अदा की और ब वसीला-ए-पंजतन पाक रब तआला से इल्तिजा की, ''इलाहुल आलमीन ! बातिल के सामने इस बंदा-ए-आजिज़ को सुर्ख़ रूह फ़रमा''

आपने सूरहः इख़्लास की तिलावत बा आवाज़े बुलंद फ़रमाई, ख़ुदा की शाने कुदरत देखिए, सुखे दरख़्त से भी तिलावते कुर्आन की आवाज़ साफ़-साफ़ सुनाई देने लगी। आपने पूरी सूरहः की तिलावत की और कलमा-ए-शहादत बुलंद आवाज़ से पढ़ा; दरख़्त की सूखी शाखों से कलमा-ए-शहादत पढ़ने की आवाज़ आई। यहूदी ये सब देखकर हैरान रह गया और उसने पढ़ लिया-''लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदर्ररसूलुल्लाह''

एक मर्तबा हज़रत शेख़ ईसा ज़ौनपुरी रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत कुत्बुल की बारगाह में अलिज़्ज़ा पेश किया और पूछा, ''हुज़ूर आप एक दिन में कितनी रक़ात नमाज़ पढ़ते हैं ?'' हज़रत कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुस्कुराकर फ़रमाया, ''मैं हर साँस (दम) में एक रक़ात नमाज़ पढ़ता हूँ।'' शेख़ ईसा ने मुताज़्जुब होकर अर्ज़ किया, ''हुज़ूर ये कैसे मुमकीन है ?''

आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरशाद फ़रमाया, ''ऐ शेख़ ईसा ! मैं अली (कर्रमल्लाहु वज़्हुल करीम) का बेटा हूँ, और मेरे वालिद हज़रत अली ज़मीन से घोड़े की रकाब में पैर मुबारक रखने तक पुरा कुर्आन शरीफ़ पढ लेते थे। इसलिए ये मुझे विरासत में मिला है।'' (ख़ुत्बाते निज़ामी तारीखे ज़ौनपुर व सलातीने शरकीया)

इनके अलावा भी आप से बहुत सी करामतों का ज़हूर हुआ है। आपने मुक़म्मल 596 साल से ज़ाईद दीने मतीन की ख़िदमत अंजाम दी है।

मक़नपुर शरीफ़ में आमद और क़याम : दरबारे मदीना में आख़िरी हाज़री के वक़्त आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत कुत्बुल मदार को हुक्म फ़रमाया कि, ''ऐ बदीउद्दीन ! तुम हिन्द में नवाहे कन्नौज चले जाओ और वहीं क़याम करो'' आपने अर्ज़ किया, ''या रसूलुल्लाह ! (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हिन्द तो मुईनुद्दीन को अता किया जा चुका है।'' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि, ''मुईनुद्दीन चिश्ती को हिन्द अता किया है, ओर

तुम्हें तमाम आलम का मदार बनाकर हिन्द भेज रहे हैं।''

ब हुक्मे ख़ुदा ओ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत कुत्बुल मदार ने सन् 818 हिजरी में शहर कन्नौज के जुनूब की तरफ़ जंगलों में वाकेअ् ख़ैराबाद को अपना मर्कज़े तौहिद बनाया। जो बाद में आपके मुरीद हज़रत मक्कनसर बाज़ के नाम से 'मकनपुर' मशहुर हुआ।

विसाल शरीफ़ : 6 जमादिल अव्वल सन् 838 हिजरी, अपने विसाल से 11 दिन क़ब्ल आपने अपने ला तादाद ख़ुल्फ़ा ओ मुरीदीन की मौजुदगी में ख़ुत्बा पढा जिसमें आपने अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान फ़रमाई और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शाने रहमतल्लि आलमीन पर रिक़अत अंगेज़ वाअ्ज़ फ़रमाया। आपने सभी को कुर्आन शरीफ़, हदीस शरीफ़ और मुहब्बते अहले बैअ्तो सहाबा-ए-किराम पर अमल करने की हिदायत फ़रमाई। फ़िर आपने अपने बिरादरे गिरामी (भाई) हज़रत सैयद मेहमुदुद्दीन हल्बी रज़ियल्लाहु अन्हु की 16 वीं पीढ़ी के फ़रज़न्दों सैयद अबू मुहम्मद अरग़ून, सैयद अबू तूराब फ़न्सूर और सैयद अबुल हसन तैफ़ूर रज़ियल्लाहु अन्हुमा (जिन्हें आपने अपनी फ़रज़न्दी में कुबूल फ़रमा लिया था) को तलब फ़रमाकर इरशाद फ़रमाया, ''आज से इन फ़रज़न्दों को बजाय मेरे तसव्वुर करना और जो मुश्किल पेश आए तो इनकी जानिब रूजूअ करना।'' उसके बाद कुत्बुल मदार ने हज़रत अबू मुहम्मद अरग़ून को अपना जानशीन मुकर्रर फ़रमाकर ख़िलाफ़त का ताज सिर पर रखा और सनदे ख़िलाफ़तो जानशीनी अता फ़रमाई।

(1) *हज़रत सैयद अबू मुहम्मद अरग़ून रज़ियल्लाहु अन्हु*
विलादत बा सआदत : 1 रबीउल अव्वल 783 हि., हलब, सीरिया
विलाल शरीफ़ : 6 जमादिउस्सानी 891 हि., मकनपुर शरीफ़

(2) *हज़रत सैयद अबू तूराब फ़न्सूर रज़ियल्लाहु अन्हु*
विलादत बा सआदत : 786 हि., हलब, सीरिया
विसाल शरीफ़ : 28 शाबान 894 हि., मकनपुर शरीफ़

(3) *हज़रत सैयद अबुल हसन तैफ़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु*
विलादत बा सआदत : 790 हि., हलब, सीरिया
विसाल शरीफ़ : 3 रमज़ान 899 हि., मकनपुर शरीफ़

16 जमादिल अव्वल 838 हिजरी सुबह पंचशम्बा (जुमेरात) को हज़रत

कुत्बुल मदार ने अपने खुद्दामे ख़ास से इरशाद फ़रमाया, ''आज तुम चंद नए घड़े ख़रीद लाओ और दरिया 'ईसन' से भरकर मेरे हुज़रे में रख दो। अब वक्त विसाल अज़ महबूबे हकीकी करीब आ गया है।'' आपके इरशाद के बाद पूरा मजमा गिरीया ओ ज़ारी में मुब्तिला हो गया। हजरत के हुक्म की तामील की गई। आपने फिर इरशाद फरमाया, ''जब तुम मुझे देखने की ख्वाहिश करो तो मेरे मज़ार पर आकर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना, बाद अज़ विसाल भी मुझे इसी तरह देखोगे।''

खुद्दामो दीगर मुरीदीने ख़ास ने अर्ज किया, ''हुज़ूर ! आपको गुस्ल कौन देगा ?'' आपने इरशाद फ़रमाया कि, ''ये ख़िदमत तो अज़ल से मर्दाने ग़ैब के लिए मुक़र्रर हो चुकी है। वही अंजाम देंगे।'' खुद्दाम ने मज़ीद अर्ज किया, ''हुज़ूर की नमाज़े जनाज़ा कौन पढ़ाएँगे ?'' आपने इरशाद फ़रमाया, ''ये ख़िदमत भी अज़ल से मौलाना हिस्सामुद्दीन सलामती ज़ौनपुरी के लिए मुक़र्रर हो चुकी है। वही नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएँगे।''

जब शबे विसाल आई तो हजरत सैयद बदीउद्दीन अहमद ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु ने सभी को ज़ुहदो तक्वा की हिदायत फ़रमाई और सबको खुदा वंद करीम के सुपुर्द कर हुज़रे शरीफ़ के अंदर तशरीफ़ ले गए और दरवाज़ा बंद कर के बआवाज़े बुलंद ज़िक्र-ए-इलाही में मशगुल हो गए। बाद नमाज़े तहज्जुद ये आवाज़ ख़ामोशी में तब्दिल हो गई।

''इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राज़ेऊन 0''

17 जमादिल अव्वल 838 हिजरी बरोज़ जुमा, सुबह हज़रत मौलाना हिस्सामुद्दीन सलामती ज़ौनपुरी आँसू बहाते हुए रंजो ग़म में डूबे हुए मकनपुर शरीफ़ तशरीफ़ लाए और दरवाज़े पर दस्तक दी। हुज़रा शरीफ़ का दरवाज़ा खुल गया। जब देखा तो पाया कि हज़रत कुत्बुल मदार नहलाए-कफ्नाए मौज़ुद है। मालुम हुआ कि ये काम मर्दाने ग़ैब का है। जनाज़ा मुबारक बाहर निकाला गया और आपके इरशाद के मुताबिक जहाँ आप आराम फ़रमा रहे थे उसी हुज़रे में आपकी क़ब्र मुबारक तैयार की गई।

बाद नमाज़े जुमा खलीफ़ा-ए-कुत्बुल मदार हज़रत मौलाना हिस्सामुद्दीन सलामती ने लाखों खुल्फा, मुरीदीनो, अकीदत मंदों के मजमा में हज़रत सैयदी बदीउद्दीन अहमद ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (हजरत मौलाना हिस्सामुद्दीन सलामती ने एक बार हजरत मदारे पाक के जमाले

मुबारक को बे नकाब देखा था, इसी ऐवज में आपको हज़रत मदार पाक की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की सआदत नसीब हुई।)

इसके बाद जनाज़ा उठाया गया। अल्लाह अल्लाह वह जिस्मे अतहर जो तमाम उम्र इस्लाम की खिदमत में हर पहलू से कोशां रहा था, जिस जिस्म पर कभी मक्खी नहीं बैठी थी। जिसका कपड़ा कभी मेला व पुराना नहीं हुआ था। जिसने तमाम उम्र कुछ खाया न पिया, जिसने लज्ज़ाते दुनिया को यकलख्त तर्क किया जिसने इस दुनिया को 'अद्दुनिया यौमुल्ला फ़ीहा सौमुन' (ये दुनिया एक रोज़ा है और इस में रोज़ादार हूँ।) जाना जो कि बिल्कुल नूर का पुतला हो गए थे वह 17 जमादिल अव्वल 838 बरोज़ जुमा हुज़रे शरीफ़ में सुपुर्द-ए-ख़ाक़ कर दिए गए।

आपने अपनी हयाते तय्यबा में अक्सर बिलादो अमसार, जंगलात व बयाबान पुर बीच घाटियाँ और बहरो बर के पुरख़तर रास्ते तय किए और सरज़मीने हिन्दुस्तान के गोशे-गोशे, बिलाद व करियात, हत्ता कि संगलाख वादियों और पहाड़ों को ज़िक्रे इलाही से मामूर फ़रमाया और पहाड़ी में बसने वाली मख्लूक बिलखुसूस जिन्न में भी आपने दीने इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाई और बादशाहे जिन्न 'इमादुल मुल्क' को मुरीदी में दाखिल फ़रमाया। आज तक भी नमाज़ मग़रीब से नमाज़े फ़ज्र तक इमादुल मुल्क आपके मज़ार पुर अनवार पर हाज़िरी और पहरा देते हैं। नमाज़े असर से नमाज़े मग़रीब के दरमियान आज भी अबाबिल आपके मज़ार शरीफ़ का तवाफ़ करती है।

आप हज़ारों मकामात पर बारह-बारह, चौदह-चौदह साल तक रियाज़तो मुजाहिदे के लिए चिल्ला कश रहे। आज भी आपकी ज़ाते मुक़द्दसा से मन्सूब हज़ार हा ऐसे मकामात मौज़ूद है, जो मदार पहाड़ी, मदार टेकरी, मदार चिल्ला, मदार दरवाजा, मदार कुआँ, मदार गेट, मदार चौकी, मदार शहर, मदार गाँव, मदार कस्बा के नाम से मौसूम है। जो आपकी ख़िदमाते दीनी का आज भी ऐलान कर रहे हैं। आप ताउम्र ख़िदमाते खल्क़ तब्लीग़े दीन और दावते इस्लाम की नशरो इशाअत में कोशां रहे। आपने दुनिया के बेश्तर मुमालिक का सफ़र किया। करोड़ों की तादाद में कुफ़्रो-शिर्क की गंदगी में पड़े हुए इंसानों ने आपके दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम कुबुल किया।

रिसाला हज़रत सैयद ज़हीरूद्दीन इलियास रहमतुल्लाह अलैह ने सन् 840 हिजरी में तहरीर फ़रमाया है कि, 'हज़रत कुत्बुल मदार के जुमला खलीफ़ा एक लाख चौबीस हज़ार तीन सौ साठ है ओर आपने साढ़े नौ करोड़ काफ़िरों को दायरा-ए-इस्लाम में शामिल फ़रमाया। आप जहाँ-जहाँ तशरीफ़ ले जाते वहाँ तब्लीग़ के

लिए अपने ख़ुल्फ़ाओं को मामूर फ़रमाया करते थे। आपने अक्साए आलम में अपने खुल्फ़ा को दुनिया के मुखतलिफ़ मक़ामातों पर फ़ैला दिया था। जो इल्मो अमल में पाबंदे शरीअ्त, वाक़िफ़े रमूज़े हक़ीक़त और एहले माअरेफ़त थे।

आपका तब्लीग़ी मर्कज़ व महव अगरचे हिन्दोस्तान था, मग़र आपके तब्लीग़ी सफ़रनामे से मालूम होता है कि आपका तब्लीग़ी दायरा हिन्दो-पाक ही तक महदूद न था बल्कि हुदुदे हिन्द से तजावि़ज करके बैरूने हिन्द तक पहुँच चुका था।

सवानेह निगारों ने हज़रत कुत्बुल मदार के तब्लीग़ी दौरे का ज़िक्र करते हुए तहरीर फ़रमाया है कि हिन्दुस्तान से आपने सात मर्तबा हरमैन तैयबैन की ज़ियारत फ़रमाई और हर बार अलग-अलग रास्तों से सफ़र फ़रमाया और हर मर्तबा कितने ही मक़ामातों ममालिक मिले, वहाँ इस्लाम की शम्अ् फ़रोज़ां करते हुए गुज़रे।

शाम, हिज़ाज़, इराक, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, अलमानिया, रूम, युनान, मिस्र, सुडान, मराकश और श्रीलंका, सरानदीप, इंडोनेशिया, मलेशिया वग़ैरह का सफर फ़रमाया। आपने ऐशिया, अफ़्रीक़ा और युरोप के तक़रीबन 52 मुल्कों में करोड़ों क़ल्बों के चिराग़ नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से रोशन फ़रमाऐं। हिन्दुस्तान के 1442 चिल्लागाहों जैसे बठिण्डा, भीड़वाड़ा, दरभंगा, बरेली, खम्बात, राजकोट, सूरत, शाहवली, अहमदाबाद, भरूच, दातार, रतलाम, मन्दसौर, उज्जैन, प्रतापगढ़, कालपी, अजमेर, चेचर कूना, कालपी, ज़ौनपुर, लखनऊ, मुम्बई, चंबा, कन्नौज,, जामनगर, बैंगलोर, जबलपुर, पन्ना, दमोह, कानपुर, पाटन, हटा, हिंडोरिया, दिल्ली, मेवात, नागपुर, नासिक, बड़ौदा, कराची, मियाँवली, मदारीपुर समेत पुरी दुनिया में आपकी सवा लाख से जायद चिल्लागाहें मर्कज़े फ़ैज़ान है। आपने चहार जानिब इस्लाम का परचम बुलन्द फ़रमाया। जहाँ-जहाँ वुरूदे मसऊद हुआ, हजारों की तादाद में लोग दाख़िले इस्लाम हुए। आज भी आपके फ़ैजान से आलम फ़ैजयाब हो रहा है।

हज़रत सैयदना तबा ताबाई मदारूल आलमीन रहमतुल्लाह अलैह ने तब्लीग़े दीन के दौरान बठिण्डा में सहाबी-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत सैयदना बाबा रतन हिन्दी रज़ियल्लाहु अन्हु जिनकी उम्र मुबारक आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की दुआ की बरकत से 700 साल हुई, उनकी सोहबत में हज़रत कुत्बुल मदार ने चिल्ला कशी फ़रमाई और हज़रत बाबा रतन रज़ियल्लाहु अन्हु की तवज्जो ओर इनायत से आपने ताबई होने का शरफ़ भी हासिल फ़रमाया।

बठिण्डा में हज़रत बाबा रतन की दरगाह के दरवाज़े के पास मदारूल आलमीन का चिल्ला मौज़ूद है। हिन्दुस्तान में हज़रत मदारूल आलमीन की चिल्लागाहें उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, ओडिशा, तमिलनाडू, कश्मीर, पश्चिम बंगाल, पंजाब, आसाम, केरल, अंडमा निकोबार, बिहार, झारखण्ड वग़ैरह में ज़ियारतगाह और फ़ैज़ाने रहमत का मर्कज़ बनी हुई है। मध्यप्रदेश के अतराफ़ों अक्नाफ़ में उज्जैन, रतलाम, मन्दसौर, प्रतापगढ़, जबलपुर वग़ैरह में सैकड़ों चिल्लागाहें मौजूद हैं।

शहर उज्जैन में हज़रत सय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह कुत्बुल मदार (रह.) का चिल्ला मुबारक मदारगेट, तोपख़ाना में वाकेअ् है। जो पंद्रहवीं (15 वीं) सदी ईस्वी का तामीर कर्दा है। जो दरगाह मदार साहेब (रह.) के नाम से मशहूर है। दरगाह मदार साहेब सुन्नी मर्कज़ है जो ज़ियारत और फ़ातेहा ख्वानी वग़ैरह के लिए वक़्फ़ है। जहाँ पिछले 600 बरसों से मख़्लूक़ चिल्लागाह पर हाज़िर होकर फ़ैज़याब हो रही है। इस चिल्लागाह हज़रत मदार साहेब (रह.) की मिल्कियत में 8 हेक्टेयर ज़मीन दरगाह से लगी हुई है, जिसमें हज़रत मदार कॉम्प्लेक्स तामीर हो रहा है। इसके अलावा 100 बीघा ज़मीन ज़िले के अरली बेड़ली गाँव में है।

दरगाह के सेहन में एक मस्जिद, एक स्कूल सेन्ट मदार हाई स्कूल, एक ईमाम बाडा शरीफ़, एक हज़रत चमेली शाह (रह.) कम्यूनिटी हॉल और कई बुज़ुर्गों के मज़ारात हैं। हज़रत ख़्वाजा कमाल निहाल (रह.)

❊ चंद मज़ारात :- *1. हज़रत बीबी चिनान सरमस्त (रह.)*

2. हज़रत ख़्वाजा बाबा चमेली शाह सरमस्त (रह.)

3. हज़रत ख़्वाजा वज़ीर अली शाह दिवानगान (रह.) (पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा चमेली शाह (रह.)

4. हज़रत सय्यद ज़ैनुलऑबेदीन सा. (रह.) (ओसिएर सा.)

5. हज़रत अलायार खान सा. (रह.)

मर्कज़ मकनपुर शरीफ़ से इस चिल्लागाह (ख़ानकाह) के लिए सिलसिला मदारिया दिवानगान हुसैनी के बुज़ुर्ग हज़रत सैयदना ख्वाजा बाबा चमेली शाह सरमस्त रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और ख़लीफ़ा हज़रत ख़्वाजा बाबू शाह लतीफ़ रहमतुल्लाह अलैह को सज्जादा नशीन मुकर्रर किया गया। आपके विसाल के बाद ये ख़िदमत आपके ख़लीफ़ा बाबू गुलाम शब्बीर साहब किब्ला के सुपुर्द की गई।

वक़्फ़ ज़ायदाद

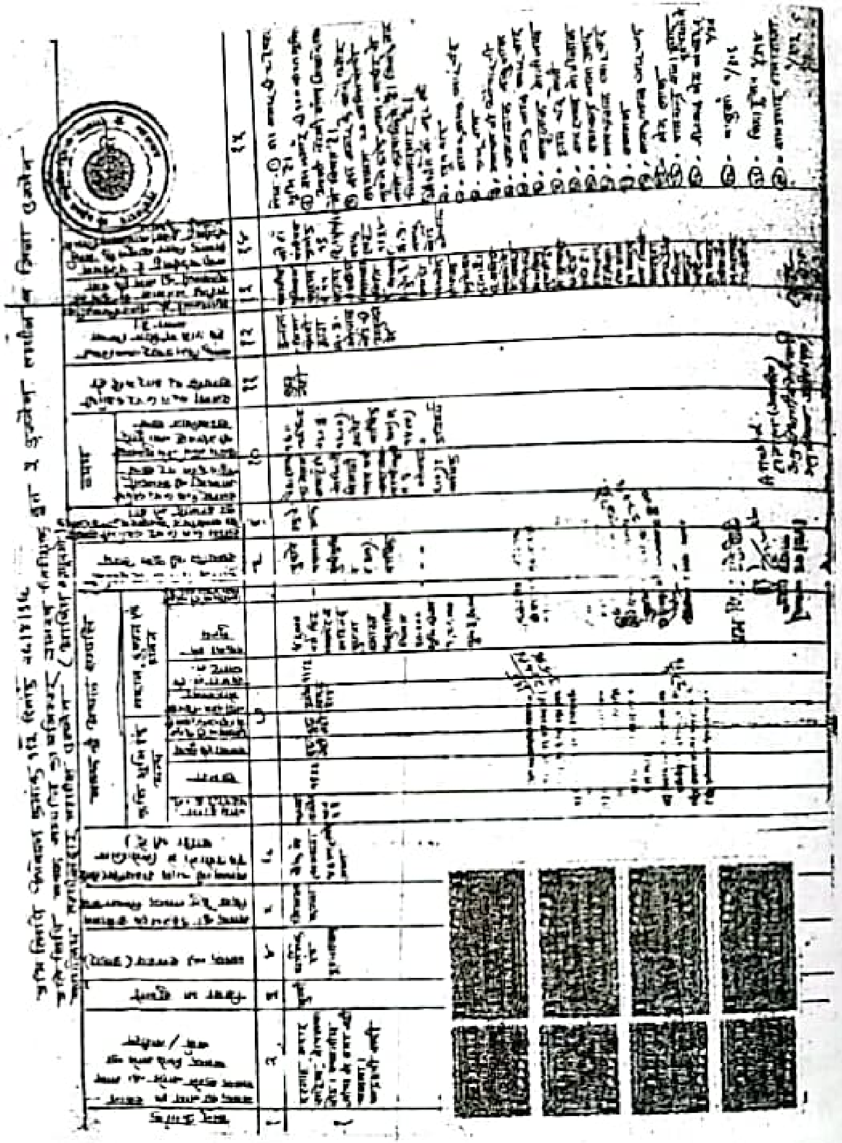

नक़्शा दरगाह शरीफ़

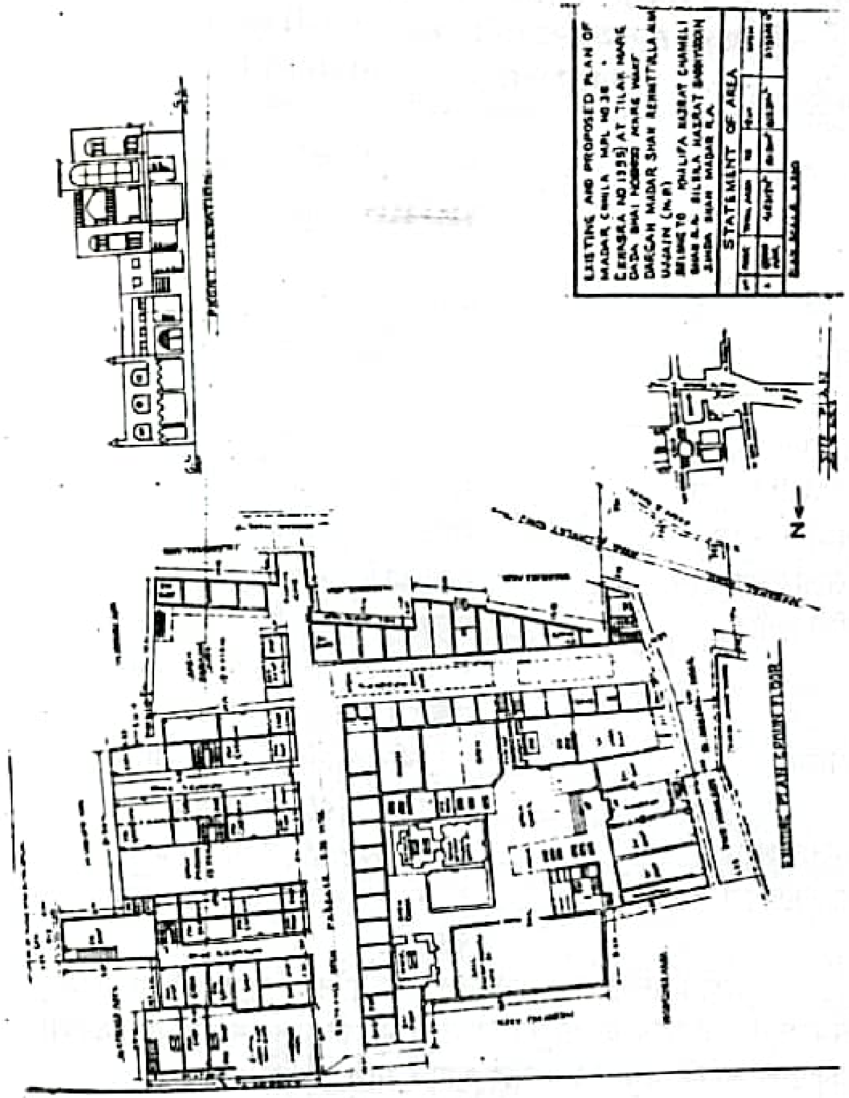

इलाही ता बा अबद आस्ताने यार रहे।
ये आसरा है ग़रीबों का, बरक़रार रहे॥

कुत्बुल अक़ताब, शम्सिल आरेफ़ीन सैयदना हज़रत ख़्वाजा बाबा चमेली शाह सरमस्त रहमतुल्लाह अलैह का तज़कीरा

पुरा नाम	:	*सैयद आले हसन उर्फ़ ख़्वाजा चमेली शाह*
पैदाइश	:	[redacted], मुक़ाम गुढ़यानी, ज़िला-गुड़गाँव, हरियाणा
वालिद का नाम	:	सैयद फ़ज़लुल हसन
वाल्दाह का नाम	:	सैयदा किबरिया बेगम
दादा का नाम	:	सैयद मज़हर अली
बड़े भाई का नाम	:	सैयद मुहम्मद हसन
तायाजी का नाम	:	सैयद हबीबुल हसन
चचा का नाम	:	सैयद मेहमुदुल हसन
सिलसिलाए बैअ्त	:	मदारिया दिवानगान हुसैनी
पीरो मुर्शीद	:	हज़रत सैयद वज़ीर अली शाह दीवानगान रहमतुल्लाह अलैह आपका मज़ार पुर अनवार उज्जैन में दरगाह मदार चिल्ला के सेहन में है।
विसाल	:	25 रबीउस्सानी सन् 1365 हिजरी मुताबिक 30 मार्च 1946, बरोज़ बुध
मजार शरीफ़	:	दरगाह मदारगेट, उज्जैन (म.प्र.)
ख़लीफ़ा ओ जानशीन	:	हज़रत बाबू शाह लतीफ़ रहमतुल्लाह अलैह रतलाम

हज़रत चमेली शाह रहमतुल्लाह अलैह मादर ज़ाद वली-ए-कामिल थे। बचपन में ही 9 साल की उम्र मुबारक से ही आपकी हालत मजज़ुबियत की थी। इस वजह से आपके चचा का बरताव आपके साथ अच्छा नहीं था। ठेकेदार जनाब निज़ामुद्दीन साहब जो आपके मामु साहब थे, उज्जैन में कोठी के निर्माण में काम की

देखरेख के लिए बाबा साहब को ले आए। बाबा हुज़ूर मदार चिल्ला कब्रिस्तान में रहने लगे। 12 साल की उम्र मुबारक तक आप मज़ज़ूब मशहूर हो गए।

बहुत अर्से तक आपका क़याम उज्जैन में रहने के बाद आप अचानक उज्जैन से रवाना होकर कुछ अरसे तक सेहरानवर्दी करते रहे और बाद में आपने सनावद जिला खण्डवा की ईदगाह में क़याम फ़रमाया। सन् 1940 में मुहम्मद ख़ाँ साहब उर्फ़ मुंशी जी साकिन जावरा अक़सर सनावद जाया करते थे और वह किसी साहिबे कमाल बुज़ुर्ग की तलाश में थे। मुंशीजी हज़रत से बैअ्त हुवे और एक चिल्ला सनावद में ही पुरा किया, उसी वक़्त हज़रत चमेली शाह ने फ़रमाया के दो शख़्स जावरा से और ले आना। उसी वक़्त उन्हें ख़्याल आया कि उनकी दोस्ती हक़ीम अनवारोज़्ज़मा सा. और बाबू अब्दुल लतीफ़ साहब (पोस्ट मास्टर सा.) से हैं। बस यह ख़्याल दिल में आया और हज़रत ने फ़रमाया हाँ वही दोनो। मुंशीजी ने वहीं से दोनों को ख़त लिखकर गुलामी में कुबुल किये जाने पर इज़हारे ख़ुशी किया और शुक्रिया अदा किया। उसके बाद दोनों हज़रात ने सनावद में हाज़री दी और बाबा साहब की बैअ्त से मुशर्रफ़ हुवे। बाबू साहब (लतीफ़ साहब) हर महीने बाबा हुज़ूर की ख़िदमत में अपने मिलने वाले और ज़रूरतमंदों को लेकर पेश होते थे और उनकी जो भी मुश्किलात होती थी वह दूर होती थी। बाबा साहब हज़रत बर्सों सनावद की ईदगाह में मुकीम रहे। पूरे साल (तीनों मौसम) में इसी ईदगाह में क़याम फ़रमाते थे और हमेशा ख़ुले में ही रहते थे। आपका बिस्तर मुबारक कभी गिला नहीं हुआ। आप अपना बिस्तर ख़ुद ही उठाकर शहर में तशरीफ़ लाते और एक चबुतरे पर लाकर रखते और पूरे दिन वहीं क़याम फ़रमाते। उनके पास जो भी आते थे, उनको अपनी ज़ेबे ख़ास से खाना खिलाते थे और आप कुछ नहीं खाते थे।

सन् 1944 में आप जनाब इब्राहिम कच्छी सेठ के यहाँ कस्बा बड़वाह, जिला खण्डवा में उपर की मंज़िल पर रहने लगे। 1946 में आप वहाँ से इन्दौर तशरीफ़ लाए। चार माह यहाँ क़याम करने के बाद उज्जैन तशरीफ़ लाए और हज़रत इब्राहिम कच्छ सेठ के घर में क़याम फ़रमाया और वहीं 25 रबीउस्सानी 1365 हिजरी मुताबिक 30 मार्च 1946 बरोज़ बुध विसाल फ़रमाया और सेहने मदार चिल्ला में आराम फ़रमा हुए।

माशुक़े क़िर्दगार है ख़्वाजा चमेली शाह, रहमत की यादगार है ख़्वाजा चमेली शाह।
किस शान से मदार के चिल्ले में ए शफ़ी, आसुदा-ए-मज़ार है ख़्वाजा चमेली शाह।

दुसरी दुनियावी जंग (द्वितीय विश्व युद्ध) चल रही थी। हिटलर (जर्मनी नाज़ी तानाशाह) सभी मुल्कों पर क़ब्ज़ा करते-करते रंगून (बर्मा) पहुँच चुका था, और हिन्दुस्तान पर क़ब्ज़ा करने की तैयारी थी। बाबू लतीफ़ सा. रहमतुल्लाह अलैह ने बारगाहे बाबा हुज़ूर रहमतुल्लाह अलैह सनावद में हाज़री दी और अर्ज़ किया, "हुज़ूर ! हिटलर हिन्दुस्तान में दाखिल होने वाला है।" तो बाबा हुज़ूर ने फ़रमाया "ऐसी बात है। कुछ देर आप ख़ामोश रहें" और फ़रमाया, "बाबू ! मैंने हिटलर की नाक-काट ली यार।" बाबू साहब ने क़दम बोसी की, हुज़ूर ने फ़रमाया, "भला हो गया।"

अगले दिन अख़बार में ख़बर आई कि हिटलर लापता है। जिसका आज तक भी पता नहीं कि हिटलर मरा, मारा गया या ख़ुदकुशी की या कैद किया गया।

सन् 1965 में पाकिस्तान से जंग चल रही थी। जिसमें अय्युब ख़ान पाकिस्तान के प्रसिडेण्ट थे और लाल बहादूर शास्त्री हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री थे। बाबू जी हुज़ूर उस वक़्त उज्जैन में बाबा हुज़ूर की दरगाह पर हाज़िर थे। उस वक़्त गृहमंत्री वाय.बी. चौहान ने ऐलान किया कि, "कल सुबह संघ प्रमुख के साथ लाहौर में चाय पीने जाएँगे।"

उज्जैन में दरगाह शरीफ़ में मौजूद लोगों ने बाबू साहब से अर्ज़ कि, "साहब ! ये क्या हो रहा है ?" उस रात सभी लोग दरबार में सोए। सुबह फ़ज्र की नमाज़ के बाद बाबू हुज़ूर ने फ़रमाया कि "हुज़ूर ने नक्शा पलट दिया है।"

सुबह 8 बजे की न्यूज़ में थी कि 'गृहमंत्री और संघ प्रमुख लाहौर नहीं जा सके।'

इन्हीं 'सोतों' से तो है, फ़ैज़ के दरिया जारी।
इन्हें 'सोता' न समझ, वे कभी ग़ाफ़िल नहीं 'सोते'।

सनदे ख़िलाफ़त बाबू साहब

सनदे ख़िलाफ़त बाबू साहब

हज़रत ख्वाजा बावा चमेली शाह रहमतुल्लाह अलैह के विसाले पाक के बाद आपके गुलाम और खलीफ़ा हज़रत ख्वाजा बाबू शाह लतीफ़ साहब रहमतुल्लाह अलैह को मर्कज मकनपुर शरीफ़ से दरगाह चिल्ला हज़रत मदार साहब उज्जैन का सज्ज़ादानशीन मुकर्रर फ़रमाया गया। हज़रत बाबू साहब रहमतुल्लाह अलैह ने सन् 1946 ई. से वक्ते विसाल सन् 1974 ई. तक इस दरबारे आलीशान के गुलाम बनकर अपनी बेशकिमती ख़िदमत अंजाम दी।

हजरत ख्वाजा बाबू शाह लतीफ़ रहमतुल्लाह अलैह ने खिर्का-ए-खिलाफ़त हजरत ख्वाजा बावा चमेली शाह रहमतुल्लाह अलैह से हासिल फ़रमाया और सिलसिला-ए-दीवानगान मदारिया से बैअ़त हुए। आप भी हुज़ूर बावा सा. की इनायतो करम से साहिबे कमाल बुज़ुर्ग हुए और वक्त के कुत्बुल अक़्ताब और कुत्बे आलम गुज़रे।

नहीफ़ है मेरा इदराक़ मेरी अक़्ल ज़ईफ़,
मैं ख़ाक़ समझूँ क्या है तुम्हारी ज़ाते शरीफ़।
तुम्हारी ख़ुश्बू तो कहना ही क्या चमेली शाह,
तुम्हारे सूँघे हुए फूल भी है कैसे लतीफ़।

आपका विसाल 25 रबीउल अव्वल 1394 हिजरी मुताबिक 18 अप्रेल 1974 ई. बरोज़ जुमआ़ को रतलाम में हुआ। आपका मज़ार शरीफ़ हाट रोड क़ब्रिस्तान में मरजा-ए-खलाईक़ है।

क़तआ़-ए-तारीख़

जुमआ़ पच्चीस रबीउल अव्वल थी शफ़ीअ़,
जब हुए शाह अब्दुल लतीफ़ हमसे दूर।
साले रहलत में मैंने ये मिसराअ कहा,
जा मिले आज रब से जो बाबू हुज़ूर।

हज़रत ख्वाजा बाबू शाह लतीफ़ रहमतुल्लाह अलैह के विसाले पाक के बाद आपके खलीफ़ा और जानशीन हज़रत बाबू शाह गुलाम शब्बीर उर्फ़ अच्छे

मियाँ साहब दामतबरकातहू को मर्क़ज़ मकनपुर शरीफ़ से दरगाह चिल्ला हज़रत मदार साहब उज्जैन का सज्ज़ादानशीन मुक़र्रर फ़रमाया गया। सन् 1974 से हज़रत अच्छे मियाँ सा. क़िब्ला दरगाह शरीफ़ हज़रत मदार साहब के गुलाम बनकर इस ख़िदमत को बख़ुबी अंज़ाम दे रहे हैं।

میں کہ سید محمد مجیب الباقی ولد سید محمد فخر مجیب سجادہ
نشین آستانہ زندہ شاہ مدار مکنپور شریف ضلع کانپور نگر
یوپی کی جانب سے غلام شبیر عرف اچھے میاں ولد
بابو عبداللطیف خلیفہ محمد اعظم و خلیفہ و مرید حضرت چمیلی
شاہ رحمۃ اللہ علیہ منتظم درگاہ مدار العالمین اجین تھے
بعد وصال بابو عبداللطیف درگاہ کا نظام بگڑ گیا اور
اور دوسروں نے قبضہ شروع کر دیا تمام آرازی درگاہ
شہر اجین محلہ مدار گیٹ دولت گنج مدھیہ پردیش کافی
پرانہ قریب چار پانچ سو سال سے سلسلہ مداریہ کے
ملنگ و خلیفہ گدی نشین ہوتے آئے ہیں سنہ ۱۹[illegible]
وہ ہجری سنہ ۱۳۹۴ء مطابق (۹) اپریل (۷۴) ربیع الاول
بروز جمعہ سے نظام بگڑا اب آئندہ غلام شبیر عرف
اچھے میاں ولد بابو عبداللطیف ۱۲ [illegible] کو
مقرر کیا گیا - نوٹ = قانون درگاہ مدار العالمین کی پاس
داری نہ ہوگی اور اگر قانون مدار العالمین کے خلاف
مرضی کی تو کسی اور کو مقرر کر دیا جاسکتا ہے اور یہ حق
حاصل ہے کہ اگر کسی کمیٹی کی ضرورت پڑے تو بنا سکتے
اور درگاہ کی دیکھ بھال ذمہ داری سمجھا تو بنا سکتے ہیں

فخر البدیع

اللّٰه

محمد

سندِ خلافت

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ نَوَّرَ قُلُوْبَ الْمُؤْمِنِیْنَ بِنُوْرِ الْهِدَایَةِ وَالْاِیْمَانِ وَشَرَحَ صُدُوْرَ الْعَارِفِیْنَ بِصِدْقِ التَّوْحِیْدِ وَالْاِیْقَانِ وَبِفَضَائِلِ الطَّرِیْقَةِ وَالشَّرِیْعَةِ مَعَ الْقُرْاٰنِ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَعَلَی الْمَدَارِ الْبَدِیْعِ الْکَرِیْمِ مَنَابِعِ الْبَرَکَةِ وَالْفَیْضَانِ

مہر دستخط شیخ

اہل سنت کا ترجمان ماہنامہ زندہ شاہ مدار مکن پور شریف ضلع کانپور نگر یوپی انڈیا

आज भी सेहने दरगाह मदार गेट में वाकेअ् ख्वाजा चमेली शाह रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह में हर जुमेरात को बाद नमाज़ ईशा ज़िक्र हल्का-ए-शरीफ़ मुनअक्द होता है।

हर महीने की 17 वीं तारीख़ को सुबह 10:30 बजे फ़ातेहा ख्वानी और हर साल 17 जमादिल अव्वल को सैयदना बदीउद्दीन ज़िंदा शाह कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु अन्हु का उर्स मुबारक बड़ी अक़ीदत के साथ मुनअक्द होता है।

हर साल 25 रबीउस्सानी को हज़रत सैयदना ख्वाजा बाबा चमेली शाह रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मुबारक मुनअक्द होता है और 24 रबीउल अव्वल को रतलाम में हज़रत ख्वाजा बाबू शाह लतीफ़ रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मुबारक मुनअक्द होता है।

हज़रत बाबू शाह गुलाम शब्बीर उर्फ़ अच्छे मियाँ

(सज्जादा नशीन, मुतवल्ली)

✲ दरगाह चिल्ला हज़रत कुत्बुल मदार रहमतुल्लाह अलैह

✲ दरगाह हज़रत चमेली शाह रहमतुल्लाह अलैह

मदार गेट, तोप खाना, उज्जैन (म.प्र.)

✲ दरगाह हज़रत बाबू शाह लतीफ़ रहमतुल्लाह अलैह

हाट रोड क़ब्रिस्तान, रतलाम (म.प्र.)

- रिहाईशी पता -

137-हाट रोड, रतलाम (म.प्र.)

मोबाईल : 9893005089, 8602196081, 9893226321

E-mail : ammar.pharma10@gmail.com

Visit facebook : DARGAH HAZRAT KHWAJA BABU SHAH LATIF RADIALLAHO TA'ALAANHO, RATLAM

शजरा शरीफ़ बुज़ुर्गवाराने सिलसिला मदारिया दीवानगान हुसैनी

बिस्मिल्लाह हिर्रेहमान निर्रहीम

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल ऑलमीन

वल आके बतो लिलमुत्तक़ीन अस्सलातो वस्सलामो अलॉ रसूलेही मोहम्मदिवं व आलेही व असहाबेही व ज़ुर्रियातेही व अज़वाजेही व अहले बैअ्तेही अजमईन बे रहमतेका या अर्रहमर्राहिमीन।

1. इलाही ब हुरमते राज़ोनियाज़ सरवरे कायनात ख़ुलासए मौजूदात सय्यदिल मुर्सलीन ख़ातेमन्नबीयीन शफ़ीउल मुज़नबीन रहमतललिल ऑलमीन अशरफुल अम्बियां हबीबे किबरिया एहमदे मुजतबा सय्यदेना व शफ़ीअना मौलाना व मुर्शिदना व नबीय्यना अबुल क़ासिम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

2. इलाही ब हुरमते राज़ो नियाज़ अमीरूल मुमेनीन इमामुल मुत्तकीन असदुल्लाहिल ग़ालिब मतलूबे कुल्ले तालिब इमामुल मशारिक़ वल मग़ारिब ख़ातिमे ख़िलाफ़त मौलाए कायनात सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना व शफ़ीअना अबुतुराब हज़रत अली इब्ने अबी तालिब करमल्लाहो वज्हील करीम।

3. इलाही ब हुरमते राज़ो नियाज़ सय्यदित्तायफ़ीन ताजदारे आरेफ़ीन इमामे औलियाए ज़मन महबूबे रब्बे ज़ुलमनन सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना ख़्वाजाए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

भारत बोरवेल एण्ड प्रोपर्टी कंसलटेंट

फर्म :- Mob. 9826737336

मंसूरी कृषि फार्म कॉटन मशीन

मंसूरी ोटिंग कम्प्रेसर

अनमो वस्त्रालय

अजीज भा Mob. 9993053112

फ़ारूक भा Mob. 9826718564

पुरानी क शाला के पास

गरोठ, जिला–मन्दसौर

M.S. ज्वेलर्स

हमारे यहाँ सोने–चाँदी के आभूषण बनाये जाते हैं।

विशेष : कड़ी–आंवले का कार्य किया जाता है।

प्रो. : इक़बाल भाई

Mob. 9827205788

8889362526

5 अप्सरा कॉम्प्लेक्स

बड़ा दरवाजा, लखेरवाड़ी

उज्जैन (म.प्र.)

दम मदार बेड़ा पार

जी.एन. स्टोन सप्लायर्स

सुखपुरा, बिजोलिया, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

जी.एन. एक्सपोर्ट्स इन्टरप्राइजेस

मांडलगढ़, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

फर्म :-

ज्योति क्रेन सर्विस

मांडलगढ़, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

ज्योति ट्रेडर्स एक्सप्लोज़िव ब्लास्टींग

प्रो.: मो.शाकिर टांक

सदर-मदरसा हिमायतुल ईस्लाम, मस्जिद नूरी

मो.रफ़ीक़ टांक

नेता प्रतिपक्ष, नगर पालिका परिषद, मांडलगढ़

ज्योति स्टेशनर्स

C.B.S.E., N.I.O.S., I.C.S.E., N.C.E.R.T.
School, College, Engineering Books, Religious & General Books, Society, Competition etc.

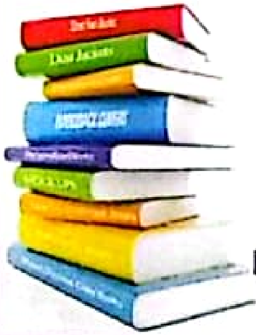

प्रो.: अब्दुल हई, ज़ैनुल आबेदीन

A-3/A-5, सेक्टर-4, शांति नगर,
मीरा रोड़, थाणें (महाराष्ट्र) 401107
Mob. 8976010602, 9029003015, 9821004164
E mail : jyotist@yahoo.com

4. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना मोहब्बिल असफ़िया हज़रत ख़्वाजा हबीब अजमी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

5. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ सुल्तानुल आरेफ़ीन क़िदवतुस्सालेकीन तैफ़ूर सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

6. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ जुब्दतुल आरेफ़ीन सिराजिस्सालेकीन कुत्बेआलम सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना हज़रत ख़्वाजा सैयद बदीउद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह कुत्बुलमदार रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

7. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ सय्यद जमालुद्दीन शाह जमाल सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना हज़रत ख़्वाजा जानेमन जन्नती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

8. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हज़रत ख़्वाजा सुलजन सरमस्त रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

9. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन मक्की रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

10. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हज़रत ख़्वाजा कमाल निहाल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

11. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हज़रत ख़्वाजा फ़तेहउल्लाह शाह नूरजी दुर्वेश रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

12. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हज़रत ख़्वाजा ख़िज़रगंज पड़ौलिया रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

13. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हाजीयुल हरमैन शरीफ़ैन हज़रत ख़्वाजा अबुयज़ीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

14. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हज़रत ख़्वाजा स्वालेह मोहम्मद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

15. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ शाहे विलायत सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना हज़रत ख़्वाजा दिलदार अली शाह दीवनागान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

16. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हज़रत ख़्वाजा इनायत अली शाह दीवानगान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

17. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हज़रत ख़्वाजा आलम अली शाह दीवानगान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

18. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हज़रत ख़्वाजा हिम्मत अली शाह दीवानगान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

19. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ कुत्बुल अकताब सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना हज़रत ख़्वाजा शमशेर अली शाह दीवानगान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

20. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ सय्यदिस्सालेकीन फ़ख़रे औलिया सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना हज़रत ख़्वाजा वजीर अली शाह दीवानगान रज़ियल्लाहो अन्हो।

21. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ शम्सिल ऑरिफ़ीन सिराजिस्सालेकीन कुत्बेआलम सय्यदना व मौलाना व मुर्शिदना व शफ़ीअना हज़रत ख़्वाजा

चमैलीशाह सरमस्त रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

22. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ मुरब्बीएमन कुत्बुल अक़ताब रेहबरे कामिल सय्यदना मौलाना व मुर्शिदना व शफ़ीअना हज़रत ख़्वाजा बाबूशाह लतीफ़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

23. इलाही बहुरमते राज़ो नियाज़ हाजीयुल हरमैन शरीफ़ैन हज़रत ख़्वाजा बाबू शाह गुलाम शब्बीर उर्फ़ अच्छे मियाँ ग़फ़रल्लहु

इलाही मन बन्दए अमत गुनाहगार उम्मीद्वार रहमते परवरदिगार बेक़स आज़िज़ो शर्मसार ग़रीब मिस्क़ीन (नाम) रा मुहब्बत अम्मार उल इस्लाम खुद इनायत फ़रमा व अज़ निस्बते सींनए साफ़्फ़ीया बुज़ुरग्वाराने मदारिया बहरेवर गरदाँ व अज़दूई बर आर आमीन या रब्बिलऑलमीन।

हर किरा वाशद तमन्नाए दीदने परवरदिगार।

हर जमाँ व सिद्क ख़्वानद शजरए कुत्बुल मदार।

आरज़ू दारम के ख़ाके आँ क़दम।

तुतियाए चश्म साज़म दम वदम।

बहक़्क़े ला इलाहा इल्लल्लाहो मोहम्मदुर रसूलुल्लाह।

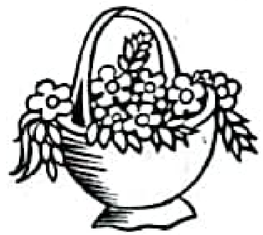

शजरा–ए–बैअ़त हुज़ूर ग़ौसुल आज़म सैयदना शेख़ मोहियुद्दीन अब्दुल क़ादिर ज़िलानी हसनी हुसैनी रज़ियल्लाहु अन्हु बग़दाद शरीफ़

हज़रत रहमतल्ललिल आलामीन सरवरे कायनात
सैयदिन मुर्सलीन एहमदे मुजतबा सैयदना व शफ़ियना व मौलाना
व मुर्शीदना व नबीय्यना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत अमीरूलमुअ्मेनीन अली इब्ने
हज़रत अबी तालिब कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम
हज़रत इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत ख़्वाजा हबीब अज़मी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ दाऊद ताई रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ माअ्रूफ़ कर्ख़ी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ सिरी सक़ती रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ ज़ुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत अबू बक्र शिबली रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत अबुल फ़ज़ल अब्दुल वाहिद यमिनी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत अबुल फ़रह तरतूसी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अबुल हसन हिनकारी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अबू सईद मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर ज़िलानी रज़ियल्लाहु अन्हु

शजरा–ए–बैअ़त शेख़ुश्शूयूख़ सैयदना मुहम्मद उमर शहाबुद्दीन सोहरवर्दी रज़ियल्लाहु अन्हु बग़दाद शरीफ़

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत अली युल मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम
हज़रत इमाम आली मक़ाम सैयदुश्शोहदा इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा
हज़रत सैयदना इमामुद्दारेन इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना इमामुल इस्लाम इमाम मुहम्मद बाकर रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत इमामुल अईम्मा इमाम ज़ाफ़र अस्सादीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत इमामुल औलिया इमाम मूसा काज़िम रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत इमामुल मशाईख़ इमाम अली युर्र रीज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ माअ्रूफ़ कर्ख़ी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ सिरी सक़ती रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ ज़ुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत अबू बक्र शिबली रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत अबुल फ़ज़ल अब्दुल वाहिद यमिनी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत अबुल फ़रह तरतूसी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अबुल हसन हिनकारी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अबू सईद मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर ज़िलानी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत शेख़ सैयद उमर शहाबुद्दीन सोहरवर्दी रज़ियल्लाहु अन्हु

शजरा–ए–बैअ्त हुज़ूर सैयदना अता–ए–रसूल नाईबुन्नबी फ़ील हिन्द हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन संजरी चिश्ती हसनी हुसैनी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरी रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत सैयदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत अमीरूलमुअ्मेनीन अली इब्ने
हज़रत अबी तालिब कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम
हजरत ख़्वाजाए ख़्वाजगाल इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन जैद रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल इब्न अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत ख़्वाजा सुल्तान इब्राहिम बिन अदहम रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत शेख़ कबीर बदरूद्दीन हुज़ैफ़ा मरअ्शी शामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अमीनुद्दीन अली हुबैतुल बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत सैयदना मुमशाद अलवी दीनवी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अबू इस्हाक़ शामी चिश्ती रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत सैयदना अबू अहमद अदल चिश्ती रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अबू मुहम्मद चिश्ती रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत सैयदना नसीरूद्दीन अबू युसूफ़ चिश्ती रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत सैयदना क़ुतुबुद्दीन मौदूद चिश्ती रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी चिश्ती रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना उस्मान हरवनी चिश्ती रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना मोईनुद्दीन हसन चिश्ती रज़ियल्लाहु अन्हु

शजरा–ए–बैअ्त हुज़ूर सैयदना सुल्तानुल आशेक़ीन शाह–ए–नक्शबंद हज़रत शेख़ बहाउद्दीन नक्शबंद बुख़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत सैयदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम
हज़रत अमीरूलमुअ्मेनीन अली इब्ने अबु बक्र सिद्दीक
हज़रत अबी तालिब कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना क़ासिम इब्ने मुहम्मद इब्ने अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना तैफ़ूर बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अबूल हसन अली अल ख़िरक़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अबू अली अल फ़रमादी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अबू याक़ूब युसूफ़ अल हमदानी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अबूल अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अब्दुल ख़ालिक़ अल गुजदवानी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना आरिफ़ अल रिवाक़्री रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत ख़्वाजा महमुद अल अन्जीर अल फग़नवी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना अली अर रमितानी रज़ियल्लाहु अन्हु
हजरत सैयदना मुहम्मद बाबा असस्समासी रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना आमिर क़ुलाल रज़ियल्लाहु अन्हु
हज़रत सैयदना मुहम्मद बहाउद्दीन शाहे नक्शबंद रज़ियल्लाहु अन्हु

क़सीदा शरीफ़

हज़रत ख़्वाजा चमेली शाह रहमतुल्लाह अलैह

तुम आशिक़े हक़ माशूके नबी या ख़्वाजा चमेली शाह वली,
मतलुबे हसन महबूबे अली या ख़्वाजा चमेली शाह वली।
मरग़ुबे हुसैनों जुमला वली या ख़्वाजा चमेली शाह वली,
हर नाम से निस्बत तुम को हुई या ख़्वाजा चमेली शाह वली,
मशहूरे जहाँ लेकिन है यहीं या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
मक़बुले मोहियुद्दीन वली या ख़्वाजा चमेली शाह वली,
मनज़ुरे मोईनुद्दीन चिश्ती या ख़्वाजा चमेली शाह वली।
तुम साबरी भी हो निज़ामी भी या ख़्वाजा चमेली शाह वली,
हर नाम से निस्बत तुम को हुई या ख़्वाजा चमेली शाह वली।
मशहूरे जहाँ लेकिन है यहीं या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
उलफ़त है अज़ल से दिल में तेरी या ख़्वाजा चमेली शाह वली,
आँखों में तेरी तस्वीर खींची या ख़्वाजा चमेली शाह वली।
है नाम तेरा तस्बीह मेरी या ख़्वाजा चमेली शाह वली,
है सुबहो मसा बस विर्द यहीं या ख़्वाजा चमेली शाह वली।
या ख़्वाजा चमेली शाह वली, या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
सरशार मऐ तौहिद हो तुम वो बादा-ए-वहदत तुमने पी,
हाँ मस्त हो तुम सरमस्त हो तुम मस्तों से मिली है ये मस्ती,
क्या तुम से निहाँ सब तुम पर अयाँ तुम से है भला क्या बात छुपी,
हो सिर्रे ख़फ़ी या राज़े जली पोशिदा नहीं है तुम से कोई।
तुम महरमे राज़े लमयज़लीं या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
जो टूट के फ़िर अब तक ना बना सरकार मैं वो टूटा दिल हूँ,
मौजों ने जिसे छेड़ा ही नहीं वो सूखा हुआ इक साहिल हूँ,
लिल्लाह मेरी इमदाद करो तुम दाता हो मैं साइल हूँ,
गुमक़र्दा-ए-राहे मंज़िल हूँ, ख़ुँगश्ता-ए-हसरत इक दिल हूँ,
फ़रीयाद सूनों फ़रीयाद मेरी या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...

ये नाम तुम्हारा नामे ख़ुदा, दुख दर्द मुसीबत की है दवा,
दामन में तुम्हारे राहत है, दामन है तुम्हारा फ़ज़ले ख़ुदा,
क्या शान है ये माशा अल्लाह क़ुर्बान तुम्हारे क्या कहना,
जब मुँह से तुम्हारा नाम लिया और हाथ से दामन थाम लिया,
मुश्किल ना रही फ़िर कोई अड़ी या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
हम प्यासे हैं साक़ी मुद्दत से, हाँ आज हमारी प्यास बुझा,
सागर पे पिलाए जा सागर दो चार से होगी सैरी क्या,
मयख़ाना लुटा दे ख़ैर तेरी इन मस्त निगाहों का सदक़ा,
मयख़्वारों के लब पर है ये सदा हाँ और पिला हाँ और पिला,
मयखाना-ए-ईरफ़ाँ के साक़ी या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
अख़्लाके नबी औसाफ़े वली सूरत से अयाँ सिरत ये अयाँ,
बातों में अजब है शिरीनी हर बात है सिर्रे हक़ का बयाँ,
बलहार तुम्हारी बातों पर मस्ताना अदाओं के क़ुरबाँ,
सरताजे शहाँ सुल्ताने ज़माँ महबूबे ख़ुदा मक़बूले जहाँ,
चेहरें से अयाँ है शाने अली या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
करते हो गदाई मे शाही ये शाने विलायत है वल्लाह,
बातिन में ख़ज़ानों के मालिक ज़ाहिर में हो कम्बल पोश गदा,
अलफ़क़्र तुम्हारा हिस्सा है बरसे में बुज़ुर्गों से जो मिला,
हो फ़ख़्र ना क्यों कर तुम को भला इस फ़क़्र पे अपने या मौला,
इरशादे नबीं भी जब है यहीं या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
इस रूए मुबीं के परवानें इस ज़ुल्फ़ें रसा के दिवानें,
इन मस्त निगाहों के बिस्मिल इस खंजरे अब्रु के कुश्ते,
अंदाज़े तक़ल्लुम के ज़ख़्मी मस्ताना अदा के मतवाले,
मसरूर तुम्हारी बातों के मख़मूर तुम्हारी नज़रों के,
है ढुंढ़ते हर दम तुम को हीं या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
तक़दीर से हमको आप मिले तक़दीर हमारी यावर है,
है फ़ख़र बजा जितना भी करें ये फ़ज़ले ख़ुदाए बरतर है,
दामन है तुम्हारा हाथों में और साया दामन सर पर है,
क़दमों तुम्हारे जन्नत है आँखों में तुम्हारे कौसर है,

सर चश्मा-ए-फ़ैज़े मुस्तफ़वी या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
क्यूँ हम से मुक़द्दर अपना फ़िरें क्यूँ हम पे फ़लक़ बैदाद करें,
हम आपके होकर रंज सहें हाँ रहम गुलामों पर अपनें,
हर चाहनें वाला शैदाई दिलशाद रहे आबाद रहे,
हर दामनें दिल मक़सद से भरें हर नख़्ले तमन्ना फूलें फलें
ऐ बाग़े बहारे मुरतज़वी या ख़्वाजा चमेली शाह वली...
फ़रियाद के मुझ से बख़्त मेरा फ़िर देखिए बदला जाता है,
इमदाद के तीरे रंज़ों आलम फ़िर मुझ पे फ़लक बरसाता है,
रूक-रूक के मुसीबत आती है थम-थम के सितम ये ढाता है,
फ़िर आँखे फ़लक़ दिखलाता है रह-रह के मुझे धमकाता है,
है लाज तुम्हारे हाथ मेरी या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
क़िस्मत ने दिए हैं दाग़ बहुत तक़दीर का मारा हूँ देखो,
सरकार मेरी फ़रियाद सुनों लिल्लाह मेरी इमदाद करो,
क्या चीज़ नहीं है क़ब्ज़े में और क्यूँ न हो हक़ के प्यारे हो,
तक़दीरें बदल दो चाहो तो दुनिया को उलट दो चाहो तो,
ख़ालिक़ ने दिया है ज़ौरे अली या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
तुम रूहें रवां तुम (जान) की जाँ तुम मेरे मकाने दिल के मकीं,
तुम दर्दे ज़िगर के दरमां हो तुम राहते क़ल्बें ज़ारों हज़ीं,
तुम मुझ में समाए हो ऐसे कुछ और नज़र आता ही नहीं,
नज़रों में खिंचा है रूए मुबीं सजदें में झुकी है दिल की ज़बीं,
कदमों में बिछी है आँखें मेरी या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
जो आया लगाया सीने से अपना के पराया कोई हो,
मेहमान बनाया हर इक को दस बीस हो या सौ दो सौ
ये शान करम अल्लाह ग़नी ये ख़ुल्क़ तवाज़ो देखो तो,
हँस-हँस के हँसाया रोतों को तस्कीन भी दी रनजुरों को,
तुम रहमते हक़ हो हक़ के वली या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
लब्बैक कहा और जाम पिया जब तुम ने सूनी आवाज़ें अज़ल,
पूरा ही किया पैमाने अज़ल क्या बात है ऐ जाँबाज़ें अज़ल,
ख़ालिक़ से मिला ऐजाज़े अज़ल लारैब हो तुम मुमताज़े अज़ल,

सरबस्ता-ए-राज़े रोज़े अज़ल दिलबस्ता-ए-सौज़ो साज़े अज़ल,
ऐ हामिले इश्क़े लमयज़ली या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
ख़ुद क़िबला नुमा ख़ुद क़िबला तुम मसजूद भी तुम साजिद भी तुम,
हस्ती है तुम्हारी शाने ख़ुदा हो ज़ाते ख़ुदा में तुम ख़ुद गुम,
दुनिया-ए-मुहब्बत के हाक़िम मानिये हक़ीक़त के कुलज़ुम,
है होश वहाँ पर अक़्ल के गुम जिस मंज़िले ईरफ़ाँ में हो तुम,
ऐ रह रवे राहे मुसतफ़वी या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...
गुमकर्दा-ए-राहें हस्ती हूँ मालुम नहीं मंज़िल है कहाँ,
रास्ते पे लगा दो मैं सदक़ें मंज़िल का पता दो मैं क़ुरबाँ,
हाँ जाने शफ़ी-ए-ज़ार हो तुम क़ुर्बान शफ़ी-ए-ज़ार की जाँ,
ऐ मुरशिदना हादी-ए-ज़माँ ऐ वाक़िफ़े राज़े कौनो मक़ाँ,
ख़ुर्शीद की भी हो राह बरीं या ख़्वाजा चमेली शाह वली ...

जनाब ख़ुर्शीद साहब ने ये कसीदा शरीफ़ बावा हुज़ूर की बारगाह में पेश किया। हुज़ूर ने उस क़सीदा शरीफ़ को दो-तीन मर्तबा पलट कर देखा और फ़रमाया सुनाओ यार मौला।

ख़ुर्शीद साहब ने क़सीदा शरीफ़ पढा। बावा हुज़ूर दोनों पैर मुबारक पर बैठकर सर पर आसा मुबारक टिकाकर सुनने लगे। कसीदा शरीफ़ ख़त्म होने के बाद फ़रमाया, ''ये तुमने थोड़ी लिखा है यार, ये तो मैं बोल रहा था और तुम लिख रहे थे।'' उसके बाद से कसीदा बावा हुज़ूर ने बाबू साहब को दिया और फ़रमाया, ''इसे पढ़ना यार। ये बड़े काम की चीज़ है।'' और ख़ुर्शीद साहब को 5-5 रूपये नज़राना दिया। (5 रू. खर्शीद सा. को और 5 रू. जनाब शफ़ी सा. के लिए) जावरा में इस पर शफ़ी साहब ने बीमारी की हालत में एक रूबाई लिखी।

''चमेली शाह ने इनाम से नवाज़ा है,
हुआ है बुलबुले बीमार पर करम गुल का।
ये पाँच रूपये नहीं, दो जहाँ की दौलत है,
अदद में पाँच के है, पंजतन का लुत्फ़ छुपा ॥''

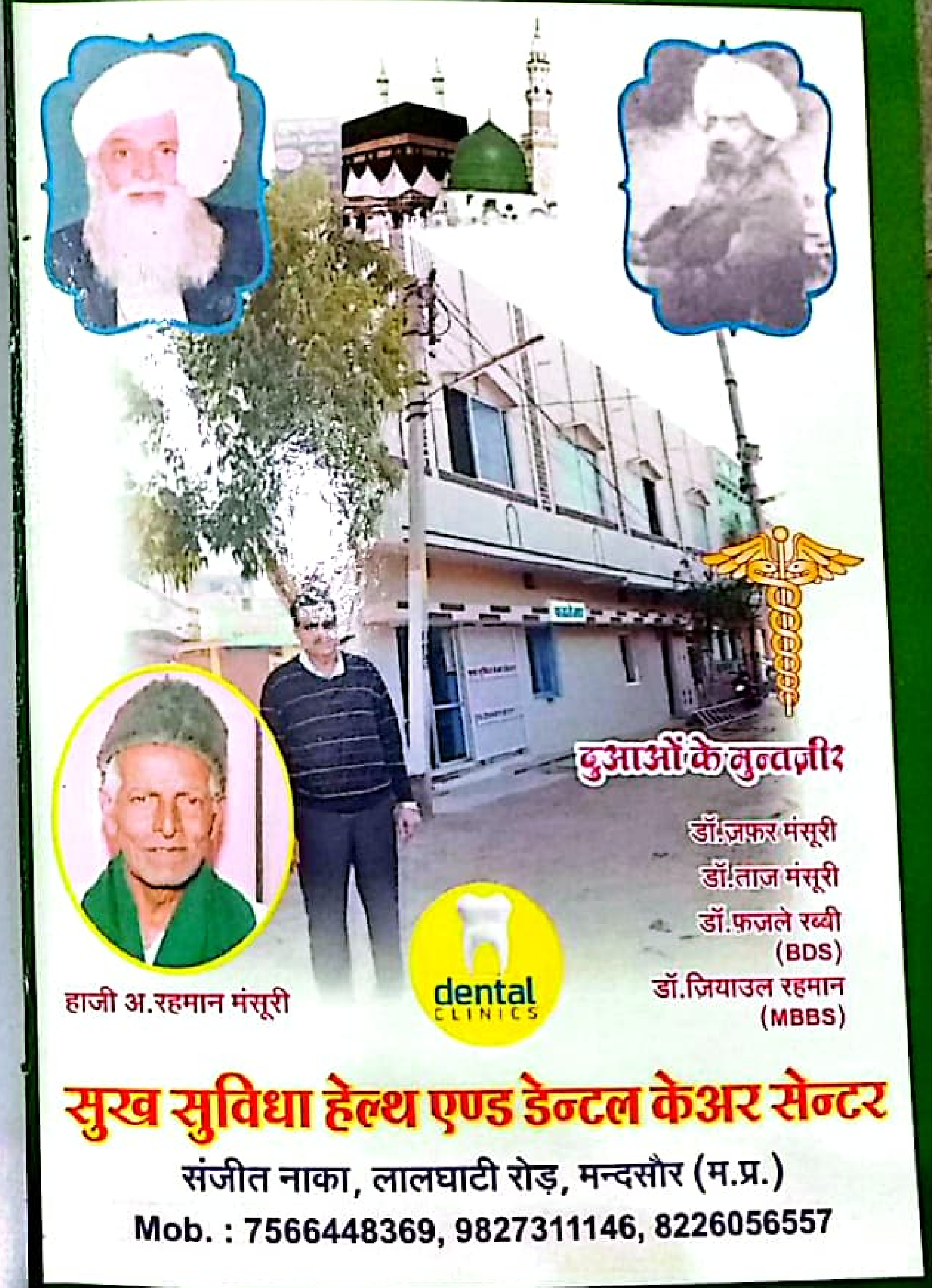
दुआओं के मुन्तज़ीर
डॉ.ज़फर मंसूरी
डॉ.ताज मंसूरी
डॉ.फ़ज़ले रब्बी
(BDS)
डॉ.ज़ियाउल रहमान
(MBBS)
हाजी अ.रहमान मंसूरी
dental
CLINICS
सुख सुविधा हेल्थ एण्ड डेन्टल केअर सेन्टर
संजीत नाका, लालघाटी रोड़, मन्दसौर (म.प्र.)
Mob. : 7566448369, 9827311146, 8226056557

हज़रत ख़्वाजा चमेली शाह रहमतुल्लाह अलैह
उज्जैन (म.प्र.)

हज़रत ख़्वाजा बाबू शाह लतीफ़
रहमतुल्लाह अलैह
रतलाम (म.प्र.)

MADAARI MEDIA
دم مدار بیڑا پار
The Silsila e Aaliya Madaariya Social Platform

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح
سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں
سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات
سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جایئے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia
@MadaariMedia
@MadaariMedia
@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari